

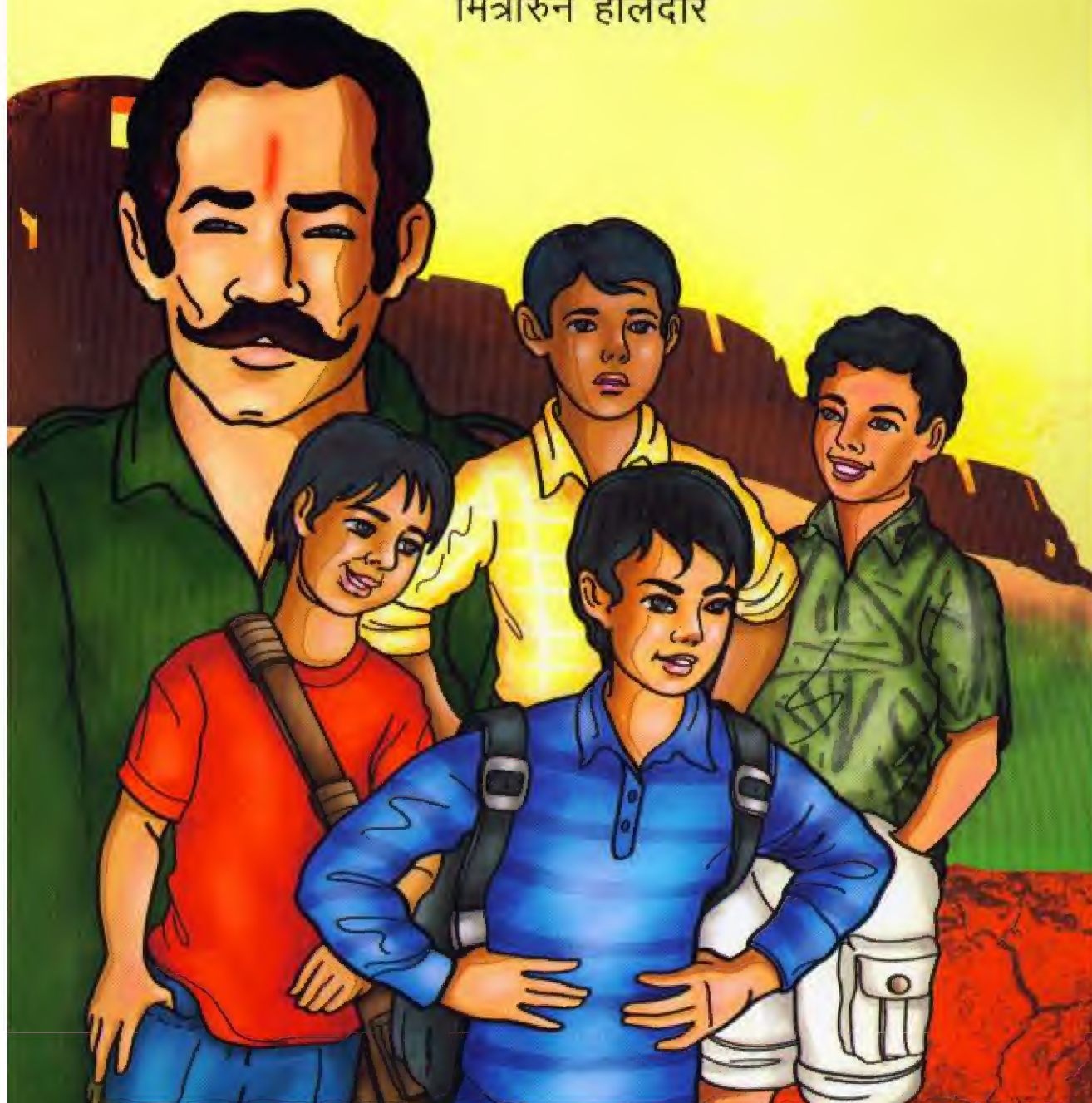


# डूबा हुआ किला

संजीव जायसवाल 'संजय'

चित्रांकन

मित्रारुन हालदार



# डूबा हुआ किला

संजीव जायसवाल 'संजय'

चित्रांकन

मित्रारुन हालदार



नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 978-81-237-5945-6

---

पहला संस्करण : 2010 (शक 1932)

© संजीव जायसवाल 'संजय', 2010

Dooba Hua Kila (*Hindi*)

रु. 70.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II

वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित

---

1. लाल सिंह की मूँछ	5
2. खतरनाक बीहड़	11
3. गुप्त रास्ता	17
4. डूबा हुआ किला	24
5. वह कौन था?	30
6. सरदार का हुक्म	36
7. कबूतर का रहस्य	41
8. सोने की अशर्कियाँ	45
9. भटकती आत्मा	51
10. घायल मजदूर	56
11. सूरजगढ़ का राजकुमार	62
12. दद्दा की कहानी	67
13. अंकल का रहस्य	72
14. कौन लेगा खजाना	78
15. खजाने का नक्शा	84
16. जन-नायक	91



## लाल सिंह की मूछ

लखनऊ से बरेली जाने वाली छोटी लाइन की ट्रेन रुहेलखंड एक्सप्रेस पूरी गति से भागी जा रही थी। प्रथम श्रेणी के डिब्बे में संकल्प के साथ बैठे उसके दोस्त अंकित, विपुल और कौस्तुभ बहुत प्रसन्न थे। ये सब लखनऊ के सेंट मेरी स्कूल के छात्र थे। अंकित और कौस्तुभ के पिता बड़े सरकारी अधिकारी थे, जबकि विपुल के पिता एक उद्योगपति।

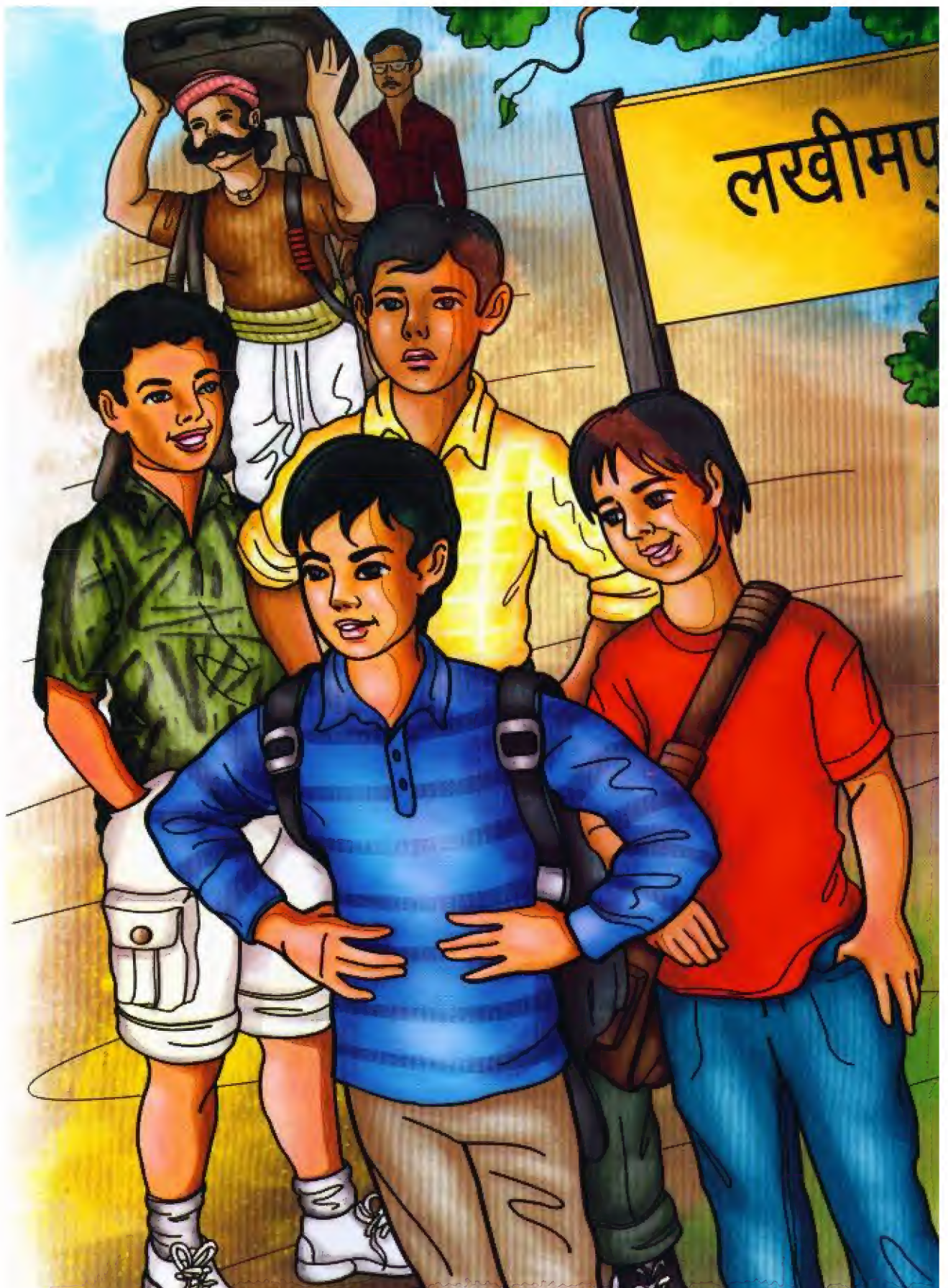
गर्मियों की छुट्टी में इन तीनों ने अपने दोस्त संकल्प के गांव धौरहरा घूमने का कार्यक्रम बनाया था। संकल्प का गांव लखीमपुर-खीरी के तराई क्षेत्र में नेपाल के पास बसा हुआ था। वह हमेशा अपने गांव की खूबसूरती की बातें किया करता था। कल-कल बहती नदी में गांव के दोस्तों के साथ नौकायन का मजा और कोयल की कूक से गूंज रहे आम के बागों में मस्ती के किस्से सुन-सुन कर वे सब कई वर्षों से धौरहरा जाना चाहते थे। लेकिन उनके घर वाले अनुमति नहीं देते थे।

कुछ दिनों पहले अंकित के पापा एक सरकारी कार्य से उस इलाके में गए थे। वहां के प्राकृतिक दृश्यों को देख कर वह काफी प्रभावित हुए थे। धौरहरा से 20 किमी. की दूरी पर घाघरा नदी के किनारे बना गिरजापुरी का मगरमच्छ अभ्यारण और वहां से 35 किमी. की दूरी पर स्थित दुधवा राष्ट्रीय उद्यान तो पर्यटकों का स्वर्ग था। वहां वर्ष भर देश-विदेश के सैलानियों की भीड़ जुटी रहती है।

अंकित के पापा को वह इलाका इतना पसंद आया कि उन्होंने विपुल और कौस्तुभ के पापा से बात कर के सभी को वहां घूमने की अनुमति दिलवा दी। संकल्प के पापा उस इलाके के बड़े जमींदार थे। उन्होंने सभी बच्चों को घुमाने-फिराने की जिम्मेदारी ले ली थी। लखनऊ से जिला-मुख्यालय लखीमपुर तक ट्रेन जाती थी। उसके आगे का 60 किमी. का सफर सड़क मार्ग से था। संकल्प के पापा ने कहा था कि लखीमपुर स्टेशन पर बच्चों को लेने वह स्वयं आ जाएंगे।

संकल्प के दोस्तों ने अभी तक सिर्फ फिल्मों में ही गांव को देखा था। इसलिए असली गांव को देखने के लिए वे बहुत रोमांचित थे। उनका बस चलता तो उड़ कर गांव पहुंच जाते लेकिन ट्रेन तो अपनी ही गति से चल रही थी।







“चलो भाई, अपना-अपना सामान ठीक कर लो थोड़ी देर में लखीमपुर आने वाला है” संकल्प ने खिड़की से बाहर देखते हुए अचानक अपने दोस्तों को कहा।

इसी के साथ एक तेज दुर्गंध नथुनों में भर गई। कौस्तुभ ने रुमाल से अपनी नाक बंद करते हुए कहा, “भाई वाह, मान गए संकल्प के लखीमपुर को। सीमा रेखा पर ही जब इतनी अच्छी सुगंध से स्वागत हुआ है तो आगे जाने क्या हाल होगा?”

संकल्प ने यह बात इतने नाटकीय अंदाज में कही थी कि विपुल और अंकित भी अपनी नाक पकड़े-पकड़े हंस पड़े।

उन तीनों को हंसते देख संकल्प ने समझाते हुए कहा, “जैसे कन्नौज की गलियां हमेशा इत्र की खुशबू से तर रहती हैं वैसे ही लखीमपुर के इलाके इस सुगंध से तर रहते हैं। यह सुगंध ही यहां की प्राणवायु है।”

“क्या मतलब?” अंकित ने टोका।

“वह देखो बाहर” संकल्प ने उतर देने के बजाए खिड़की के बाहर इशारा किया।

बाहर का दृश्य देख तीनों दोस्त आश्चर्यचकित रह गए। गन्ने से लदी सैकड़ों बैलगाड़ियां एक के पीछे एक खड़ी थीं।

“अरे, इतना गन्ना कौन चूसता होगा?” विपुल ने बिजूके की भांति पलके झपकाते हुए पूछा।

“ये गन्ना चूसने के लिए नहीं है। इसे किसान चीनी मिल को बेचने के लिए लाए हैं और यह खुशबू जिसे तुम दुर्गंध बता रहे हो, वह गन्ने से निकलने वाले शीरे की है। इस इलाके की प्रमुख फसल गन्ना है। यहां पर चीनी की पांच बड़ी फैक्ट्रियों के अलावा कई छोटी-छोटी मिलें भी हैं जिन्हें ब्यायलर कहा जाता है। करीब आठ साल पहले हमारे पापा ने भी अपने एक दोस्त के साथ मिल कर ब्यायलर लगाया है, जिसमें बड़े दाने वाली शक्कर बनती है।” संकल्प ने बताया।

“उसमें तो गर्मा-गर्म शक्कर बनती होगी?” कौस्तुभ ने पूछा।

“हां!”

“तब तो मैं पेट भर कर शक्कर खाऊंगा।” कौस्तुभ ने पेट पर हाथ फेरते हुए कहा।

“ऐसा मत करना वरना तुम मीठे हो जाओगे और फिर चींटियां तुम्हें खा जाएंगी।” विपुल ने कौस्तुभ के कंधे पर हाथ रख कर बड़ी गंभीरता से सलाह दी। यह सुन कर सभी लोग एक बार फिर ठहाका मार कर हंस पड़े।

लखीमपुर स्टेशन आ गया था। संकल्प ने डिब्बे से नीचे उतर कर इधर-उधर निगाह दौड़ाई, लेकिन पापा नहीं दिखाई पड़े। उसके चेहरे पर परेशानी साफ झलक रही थी।



“अरे यार, परेशान क्यों होते हो। अगर अंकल नहीं आए तो क्या हुआ। हमलोग कोई टैक्सी करके खुद चले चलते हैं।” कौस्तुभ ने संकल्प की परेशानी भांप ली थी।

“यार, हम बच्चों का अकेले जाना ठीक नहीं होगा क्योंकि रास्ते में शारदा नदी का विशाल बीहड़ इलाका पड़ता है जो कि काफी खतरनाक है।” संकल्प कुछ चिंतित हो गया था।

“वहां कैसा खतरा है?” अंकित ने जानना चाहा।

“उस इलाके में डाकुओं का एक गिरोह है जो राहगीरों का अपहरण करके फिरौती वसूला करता है।” संकल्प ने बताया।

यह सुन कौस्तुभ के चेहरे का रंग उड़ गया और वह घबराए स्वर में बोला, “यार तू हमेशा अपने गांव की मस्तियों के बारे में तो बताया करता था। खतरों के बारे में तो कभी बताया ही नहीं। अगर बता देता तो हम यहां कभी नहीं आते। तूने हम लोगों के साथ बहुत बड़ा धोखा किया है।”

धोखे की बात सुन संकल्प के चेहरे पर दर्द की रेखाएं उभर आईं जिन्हे विपुल ने पढ़ लिया था। उसने कौस्तुभ को डपटते हुए कहा, “हमें नहीं मालूम था कि तुम इतने डरपोक हो।”

“मैं डरपोक नहीं हूं लेकिन इस तरह से जान-बूझ कर खतरनाक इलाके में जाना कोई अक्लमंदी भी नहीं होगी।” कौस्तुभ का स्वर तेज हो गया।

“ये कैसी बातें कर रहे हो तुम?” अंकित ने कौस्तुभ को डपटते हुए कहा, “जिंदगी में खतरा कहां नहीं है? हवाई जहाज से घूमने जाओ अगर वह गिर जाए तो मर जाने का खतरा। झील में घूमने जाओ तो नाव डूब जाने का खतरा। अपने लखनऊ में सड़क पर निकलो तो पीछे से सिटी बस के ठोकर मार देने का खतरा। तो क्या इन सब खतरों के डर से आदमी घर से बाहर नहीं निकलता है?”

कौस्तुभ कुछ कहने जा ही रहा था कि तभी संकल्प प्लेटफार्म पर आ रहे एक व्यक्ति को देख कर चिल्लाया, “दिवाकर अंकल, हम लोग यहां हैं।”

वह व्यक्ति भी कुछ घबराया हुआ दिख रहा था। लेकिन संकल्प पर दृष्टि पड़ते ही उसका चेहरा खिल उठा और वह तेजी से बच्चों की ओर लपका।

संकल्प ने झुक कर उनके पैर छुए। फिर अपने दोस्तों से परिचय कराया, “यह दिवाकर अंकल हैं। पापा के दोस्त और ब्वायलर में उनके पार्टनर।”

अंकित, कौस्तुभ और विपुल ने भी दिवाकर अंकल के पैर छू लिए। उन्होंने सभी को आशीर्वाद देने के बाद बताया, “अचानक कुछ जरूरी काम पड़ जाने के कारण संकल्प के पापा





नहीं आ सके। उन्होंने मुझको खबर भेजी। मैं बहुत तेजी से आया लेकिन फिर भी देर हो गई। तुम लोग काफी परेशान हो रहे होंगे?”

“ऐसी बात नहीं है। बस मौके का फायदा उठा कर हम लोग इस घोंचू की क्लास ले रहे थे।” कौस्तुभ ने संकल्प की पीठ पर धौल जमाते हुए कहा।

यह सुन दिवाकर सिंह मुस्करा उठे। उनके साथ गाड़ी का ड्राइवर और कंधे पर बंदूक टांगें बड़ी-बड़ी मूंछ वाला एक आदमी और था।

“लाल सिंह, तुम बच्चों का सामान गाड़ी में रखवाओ। मैं तब तक पी.सी.ओ. से धौरहरा फोन कर दूँ।” दिवाकर सिंह ने मूंछ वाले से कहा और प्लेटफार्म के बाहर बने पी.सी.ओ. की ओर चल दिए।

तभी अंकित ने उनके पीछे आ फुसफुसाते हुए पूछा, “अंकल, ये रेड लाइन की मूंछे असली तो हैं?”

“कौन रेड लाइन?”

“अरे यही अपने लाल सिंह जी!” अंकित ने कहा।

लाल सिंह का अंग्रेजी अनुवाद सुन कर दिवाकर सिंह ठठा कर हंस पड़े, “हां भाई, बिल्कुल असली है। वह अपनी दोनों मूंछों पर पांच-पांच किलो का दूध भरा मटका बांध कर जबरदस्त भांगड़ा करते हैं।”

“सच?” अंकित की आंखें आश्चर्य से फैल गईं।

“बिल्कुल सच, आज रात मैं तुम लोगों को इनका कार्यक्रम दिखवाऊंगा।” दिवाकर अंकल ने आश्वासन दिया और फिर आगे बढ़ गए।

अंकित ने अपने दोस्तों के करीब आ अंग्रेजी में जब लाल सिंह के करतबों के बारे में बताया तो उन्होंने भी दांतों तले उंगलियां दबा लीं।

स्टेशन के बाहर संकल्प के पापा की नई वैन खड़ी थी। सामान रखवाने के बाद चारों दोस्त बीच वाली सीट पर बैठ गए। दिवाकर अंकल ड्राइवर के बगल वाली सीट पर बैठे और अपनी बंदूक को संभालते हुए लाल सिंह पिछली सीट पर बैठ गए।

करीब 20 किमी. तक तो गाड़ी फरटि से चली लेकिन उसके आगे रास्ता बहुत खराब था। सड़क पर बड़े-बड़े गड्ढे थे, उनमें जब पहिया पड़ता तो जोर का झटका लगता लेकिन बच्चों को इसमें भी बहुत मजा आ रहा था। मोटरगाड़ी में ही उन्हें झूले का आनंद मिल रहा था। बीच-बीच में गाड़ी रुकवा कर उन्होंने कई जगह भैंस पर बैठ कर जा रहे बच्चों और खेत में हल चला रहे किसानों की फोटो भी खींची।



## खतरनाक बीहड़

एक घंटे बाद शारदा नदी का बीहड़ इलाका शुरू हो गया था। वह बहुत ही अजीबो-गरीब इलाका था। कहीं दूर-दूर तक रेत के ऊंचे टीले नजर आते थे तो कहीं सैकड़ों फुट गहरी खाइयां। अगर संकल्प ने इस इलाके को खतरनाक नहीं बताया होता तो उसके दोस्त यहां भी फोटोग्राफी करते। फिर भी सभी उन दृश्यों का आनंद लेते हुए चल रहे थे। अचानक उनकी गाड़ी लहराने लगी।

“लगता है कि पहिया पंचर हो गया है।” ड्राइवर ने गाड़ी रोकते हुए कहा। उसने नीचे उतर कर अगले पहिये को देखा तो चौंक पड़ा, “अरे, इसमें तो बड़ी सी कील घुसी हुई है।”

यह सुन दिवाकर अंकल ने बेचैनी से पहलू बदला, “इसे भी इसी जगह पंचर होना था।”

सतर्क निगाहों से इधर-उधर देखने के बाद वह नीचे उतरे, फिर ड्राइवर से बोले, “देर मत करो। जल्दी से पहिया बदल लो। यहां ज्यादा देर रुकना ठीक नहीं है।”

चारों दोस्त भी नीचे उतरना चाहते थे लेकिन दिवाकर अंकल ने मना कर दिया। ड्राइवर ने अगले पहिये के पास जैक लगाया, फिर लाल सिंह से बोला, “जब तक मैं पहिया खोलता हूं तुम जल्दी से स्टेपनी निकाल लो।”

लाल सिंह अपनी बंदूक को पिछली सीट पर रख कर स्टेपनी निकालने लगा। कच्ची सड़क के दोनों तरफ फूस की ऊंची-ऊंची झाड़ियां उगी हुई थीं। अचानक उनके पीछे से पांच बंदूकधारी निकले। इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता उनमें से तीन ने दिवाकर अंकल, ड्राइवर और लाल सिंह के ऊपर बंदूकें तान दीं। शेष दो गाड़ी की तरफ झपटे। उसके भीतर झांकने के बाद एक बंदूकधारी ने चिल्लाते हुए कहा, “लखना, इसके भीतर तो खाली चार चूहे बैठे हुए हैं।”

चारों दोस्त समझ गए कि चूहे का संबोधन उनके लिए किया गया है। उनका खून खौल उठा लेकिन वक्त की नजाकत समझ वे खामोश रहे। वे समझ गए थे कि डाकुओं के किसी गिरोह ने उन्हें घेर लिया है।

अगले ही पल फूस की झाड़ियों के पीछे से भयानक शक्ल और लंबी कद-काठी वाला एक डाकू निकला। सधे कदमों से आगे बढ़ते हुए वह दिवाकर अंकल के करीब आया और उन्हें घूरते हुए अपने साथियों से बोला, “ददूदा ने तो मगरमच्छ पकड़ने के लिए जाल बिछाया था लेकिन

इसमें तो छोटी मछलियां फंस गईं रे।”

“कौन हो तुम और क्या चाहते हो?” दिवाकर अंकल ने थूक निगलते हुए पूछा।

‘तड़ाक’ उनके गाल पर भरपूर तमाचा जड़ते हुए वह डाकू दहाड़ उठा, “तुमने डाकू सरदार दददा का नाम नहीं सुना है?” दददा का नाम सुनते ही दिवाकर अंकल की आंखें आतंक से फैल गईं। दददा उस इलाके का खूंखार डाकू था। उनकी समझ में नहीं आया कि क्या कहें।

उन्हें मौन देख कर उस डाकू की आंखें लाल अंगारा हो उठीं। एक और तमाचा जड़ते हुए वह चीखा, “बताते हो या तुम्हें जिंदा गाड़ दूँ?”

“तुम, दददा के छोटे भाई लखना हो?” दिवाकर अंकल ने घबराए स्वर में कहा।

“हां” वह डाकू अपने मोटे होंठों को कान तक खींच कर भद्दे ढंग से मुस्कराया फिर बोला, “अगर तुम हमें पहले पहचान लेते तो मार न खाते।”

इतना कह कर लखना क्षण भर के लिए रुका और फिर बोला, “दददा ने तो आज तुम्हारे दोस्त को पकड़ कर पच्चीस लाख की फिरौती वसूलने का हुक्म दिया था लेकिन तुमने बीच में आ कर सारा कार्यक्रम चौपट कर दिया।”

“लखना, इसे ही उठा ले चलो। इसे छुड़ाने के लिए इसका दोस्त लाख-पचास हजार तो भिजवा ही देगा।” भयानक शक्ल वाले एक अन्य डाकू ने कहा।

“गंगा, शेर से घास खाने के लिए कहते हो? अरे, शेर भूखा रह लेगा लेकिन जब भी शिकार करेगा बड़ा ही करेगा।” लखना अपने साथी की ओर मुड़ते हुए बोला।

“तब तो शेर को आज भूखा ही रहना पड़ेगा।” गंगा झल्ला उठा।

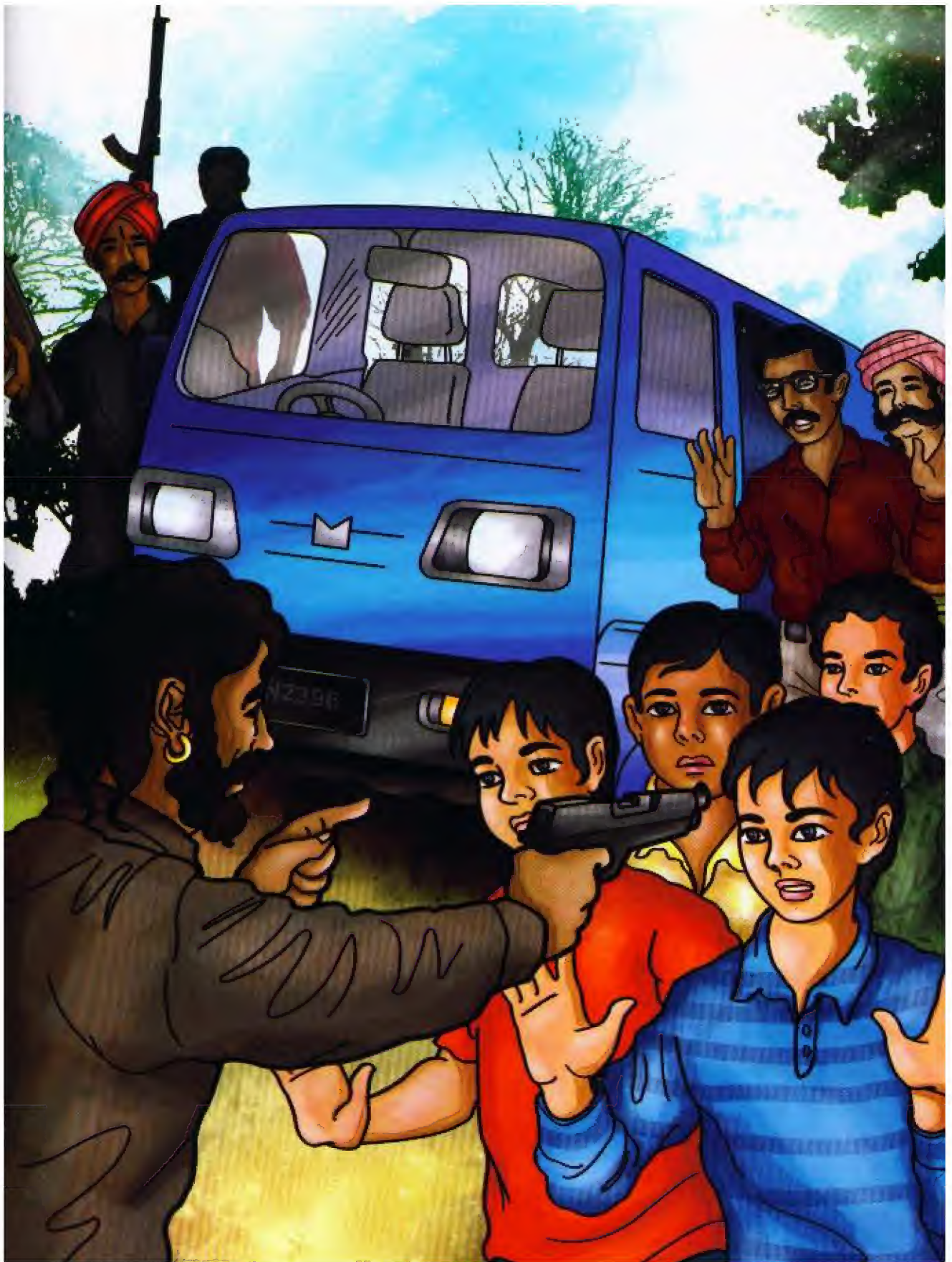
“वह शेर ही क्या जो भूखा रहे?” लखना ने ठहाका लगाया और फिर बोला, “इसका दोस्त आज अपने बेटे को लेने लखीमपुर जाने वाला था लेकिन नहीं गया। कोई बात नहीं, हम उसके बेटे को उठा लेते हैं। इकलौती औलाद के लिए वह अपने से ज्यादा कीमत अदा करेगा।”

इतना कह कर लखना गाड़ी की तरफ बढ़ा। यह देख चारों दोस्तों के कलेजे मुंह को आ गए। लखना ने गाड़ी के भीतर झांकते हुए पूछा, “तुम चारों में से संकल्प कौन है?”

चारों दोस्त चुप रहे। संकल्प का कलेजा बुरी तरह धड़क रहा था। लखना इस समय उसे किसी दानव की तरह लग रहा था। तंबाकू से रंगे अपने दांतों को चमकाते हुए उसने अपना प्रश्न दोहराया, “जल्दी से बता दो तुम लोगों में से संकल्प कौन है?”

चारों दोस्त एक बार फिर मौन रहे। यह देख लखना का क्रोध भड़क उठा। वह पिस्तौल निकालते हुए चीख पड़ा, “अगर तुम लोगों ने मुंह नहीं खोला तो मैं एक-एक करके चारों को







गोली मार दूंगा।”

अंकित, विपुल और कौस्तुभ ने अपने होंठों को सिल लिया था लेकिन संकल्प को लगा कि उसके कारण ये लोग अकारण ही मारे जाएंगे। अतः हिम्मत जुटा कर बोला, “मेरा नाम संकल्प है।”

“बहुत प्यारा नाम है। चलो जल्दी से नीचे उतरो।” लखना ने पिस्तौल लहराते हुए इशारा किया।

संकल्प के नीचे उतरते ही लखना ने उसका हाथ पकड़ लिया। उसका पंजा बहुत सख्त था। संकल्प को लगा जैसे उसकी कलाई टूट जाएगी लेकिन इससे बेपरवाह लखना ने गंगा से कहा, “जल्दी से अपने उड़नखटोले को ले आओ।”

संकल्प ने आज तक यही सुना था कि डाकू घोड़े पर चलते हैं लेकिन उनके पास उड़नखटोला भी है यह जान कर उसे बहुत आश्चर्य हुआ। लेकिन उसका आश्चर्य ज्यादा देर नहीं रहा। गंगा थोड़ी ही देर में फूस की झाड़ियों के पीछे छुपा कर रखी गई एक पुरानी जीप को निकाल लाया। उस जीप के नंबर बिल्कुल मिट चुके थे।

संकल्प को बीच में बैठाने के बाद लखना जीप की अगली सीट पर बैठ गया फिर चिल्लाते हुए बोला, “दिवाकर, अपने दोस्त से कहना कि अगर अपने बेटे की शक्ल देखना चाहता है तो दो दिनों के भीतर 30 लाख रुपये का इंतजाम कर ले। रुपये कहां और किसको देने हैं इसकी खबर हम कर देंगे। हां, एक बात का ध्यान रखना कि अगर तुम लोगों में से किसी ने हमारा पीछा करने की कोशिश की तो इस छोकरे की मौत का जिम्मेदार वह खुद होगा।”

इतना कह कर लखना ने दूसरे डाकूओं को जीप पर बैठने का इशारा किया। दिवाकर अंकल, झाइवर और लाल सिंह पर बंदूक ताने हुए वे सब लपक कर जीप में बैठ गए। कौस्तुभ ने इस बीच जबरदस्त जोखिम का काम किया था। सबकी निगाहें जिस समय संकल्प और लखना पर टिकी थीं वह अपनी गाड़ी से उतर कर जमीन पर लेट गया था और छिपकली की तरह सरकते हुए जीप के दूसरी तरफ पहुंच गया था।

जीप के चलते ही धूल का गुबार उठा जिसका फायदा उठा कर वह फुर्ती से उसकी छत पर चढ़ गया। उस जगह सड़क बहुत खराब थी जिसके कारण जीप लगातार हिचकोले खाते हुए आगे बढ़ रही थी तभी डाकू कौस्तुभ की इस हरकत को जान नहीं पाए थे। जीप की छत पर सामान रखने वाला कैरियर लगा हुआ था वह उसी में बैठ गया। धक्के लगने के कारण उसके शरीर की नसें तक हिलने लगीं थीं लेकिन वह दांत भींचे बैठा रहा।



अंकित और विपुल ने कौस्तुभ की इस हरकत को देख लिया था लेकिन वे चाह कर भी कुछ नहीं बोल पाए थे। क्योंकि ऐसा करने से लखना कौस्तुभ को देख लेता और फिर उसकी दुर्दशा कर देता। डाकुओं की जीप के आगे बढ़ते ही वे दोनों भी नीचे उतर आए। ड्राइवर और लाल सिंह इस बीच पकड़ो-पकड़ो का शोर मचाने लगे थे।

“अरे भैया, अब शोर मचाने से क्या फायदा? यहां कौन बैठा है जो हमारी मदद करेगा।” दिवाकर अंकल ने हताश स्वर में कहा। फिर अचानक ही उन्हें कुछ याद आया और वह उत्साह भरे स्वर में बोले, “इन बीहड़ों में डाकुओं को पकड़ने के लिए कभी-कभार पुलिस के दल गश्त लगाया करते हैं। मैं इस टीले पर चढ़ कर देखता हूं शायद कोई दिखाई पड़ जाए।”

इतना कह कर वह दौड़ते हुए सामने दिखाई पड़ रहे ऊंचे टीले पर चढ़ने लगे। अंकित और विपुल उनकी फुर्ती देख कर दंग रह गए। टीले के शिखर पर पहुंच कर उन्होंने हाथों का अर्ध चंद्राकार वृत्त बनाकर अपनी आंखों पर रखा और फिर चारों ओर दृष्टि दौड़ाने लगे लेकिन कोई मददगार दिखाई नहीं पड़ा। चंद क्षणों बाद वह टीले के दूसरी तरफ उतर गए। थोड़ी देर बाद जब वह वापस लौटे तो उनके चेहरे पर निराशा के बादल छाए हुए थे। किसी हारे हुए योद्धा की भांति वह लड़खड़ाते कदमों से टीले से नीचे उतरने लगे। इस समय उनकी सारी फुर्ती गायब हो चुकी थी।

अंकित और विपुल के करीब आकर वह भराए स्वर में बोले, “बेटा, माफ करना मैं तुम्हारे दोस्तों को बचा नहीं पाया। दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं पड़ रहा है जिससे मदद मिल सके। अब संकल्प के पापा ही कोई इंतजाम कर सकते हैं। जल्दी से चल कर उनको खबर करते हैं।”

“अंकल, उनको खबर करने के लिए आप लोग जाइए। हम आपके साथ नहीं चल पाएंगे।” विपुल का स्वर गंभीर हो उठा।

“क्यों?”

“कौस्तुभ भी डाकुओं की जीप पर लटक कर उनके साथ चला गया है। हमारे दो दोस्तों की जान इस समय खतरे में है। उन्हें छुड़ाए बगैर हम वापस नहीं जाएंगे। चाहे इसके लिए हमें दद्दा के अड्डे तक क्यों न जाना पड़े।” अंकित ने मुट्ठियां भींचते हुए कहा।

“यह तुम क्या कह रहे हो?” दिवाकर अंकल आश्चर्य से उछल पड़े। चंद पलों तक दोनों के चेहरे को देखने के बाद वह दर्द भरे स्वर में बोले, “तुम लोग नहीं जानते कि दद्दा कितना खतरनाक डाकू है। पुलिस तक उसके नाम से कांपती है। फिर उसका अड्डा कहां है? कोई नहीं जानता। इन बीहड़ों में उसको ढूंढ़ पाना कठिन ही नहीं बल्कि असंभव है।”

“दुनिया में असंभव नाम की कोई चीज नहीं होती है। उसका अड्डा चाहे पाताल में क्यों न हो हम उसे ढूँढ़ निकालेंगे।” विपुल दांत भींचते हुए बोला।

“खूंखार डाकुओं से भिड़ना कोई बच्चों का खेल नहीं है। तुम लोग चुपचाप मेरे साथ घर चलो।” दिवाकर अंकल ने समझाने की कोशिश की।

“सारी अंकल, हम लोग आपके साथ नहीं चल पाएंगे। हम अपने दोस्तों को ढूँढ़ने जा रहे हैं।” विपुल ने कहा और जिस ओर डाकुओं की जीप गई थी उधर चल दिया।

यह देख दिवाकर अंकल ने उसका हाथ पकड़ लिया और तेज स्वर में बोले, “तुम लोग पागल हो गए हो क्या? मैं इस तरह तुम्हें अपनी जान जोखिम में नहीं डालने दूंगा।”

अंकित ने इस बीच गाड़ी के भीतर रखी लाल सिंह की बंदूक को उठा लिया था और उसकी नाल को अपनी गर्दन पर टिकाते हुए चीख पड़ा, “हां अंकल, हम लोग पागल हो गए हैं और अगर आपने विपुल को नहीं छोड़ा तो मैं खुद को गोली मार लूंगा।”

अंकित की उंगलियों का कसाव धीरे-धीरे बंदूक के ट्रेगर पर बढ़ रहा था। यह देख दिवाकर अंकल की हालत खराब हो गई। उन्होंने घबड़ा कर विपुल का हाथ छोड़ दिया। हाथ छूटते ही विपुल तेजी से भाग लिया। उसके पीछे-पीछे हाथ में बंदूक थामे अंकित भी दौड़ पड़ा। दिवाकर अंकल बेबसी से अपना सिर पीट कर रह गए।



## गुप्त रास्ता

डाकुओं की जीप ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर उछलते हुए चल रही थी जिसके कारण उसकी छत पर बैठे कौस्तुभ को बहुत परेशानी हो रही थी। लोहे के कैरियर से टकरा-टकरा कर उसका शरीर कई जगह से छिल गया था लेकिन उसे अपनी परवाह नहीं थी। उसे बस डाकुओं के कब्जे में फंसे संकल्प की चिंता थी।

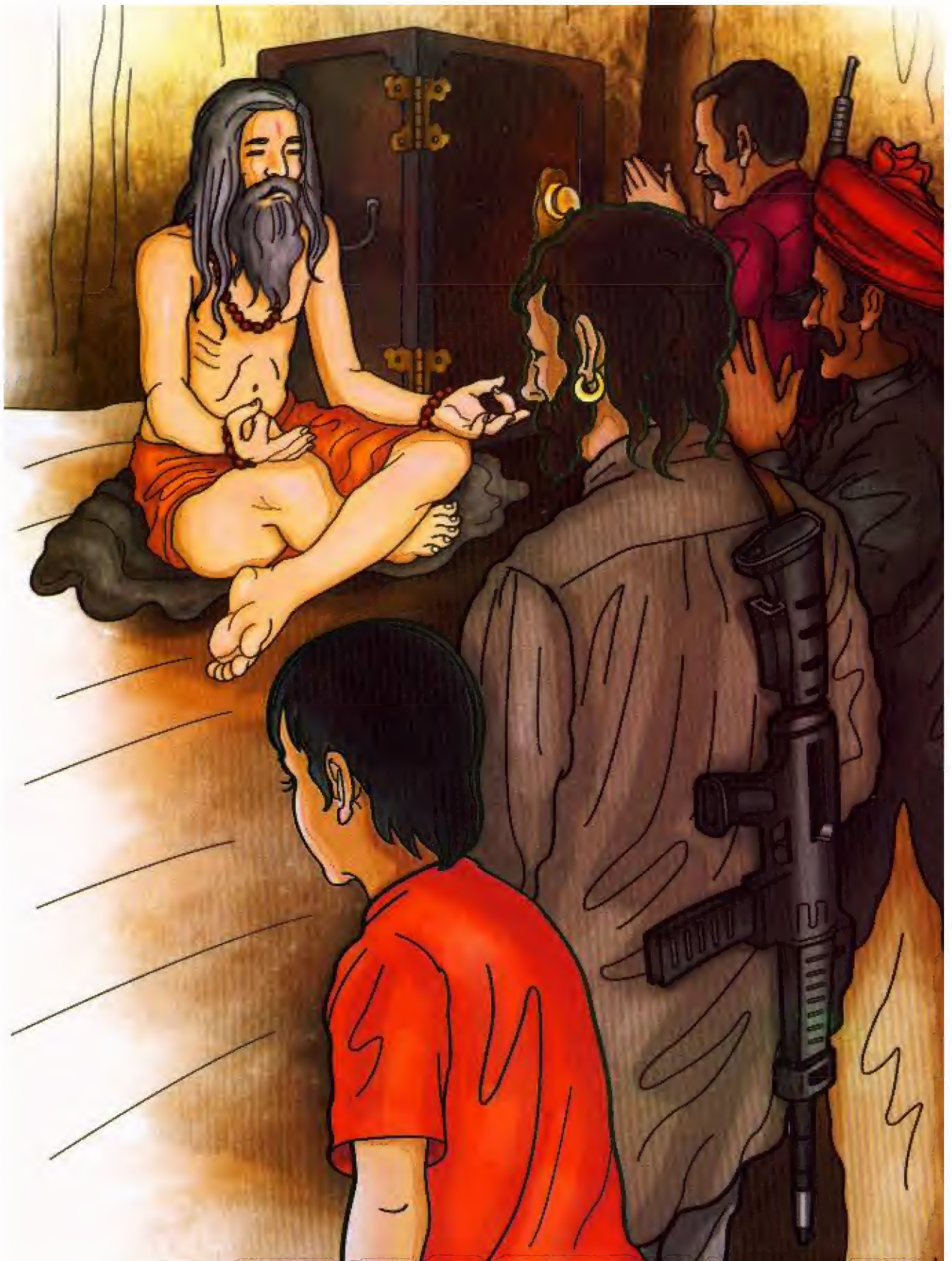
लगभग पौन घंटे बाद जीप एक पेड़ के नीचे रुक गई। वह बड़ा ही अजीब स्थान था। एक तरफ मिट्टी के ऊंचे-ऊंचे विशालकाय टीले बने हुए थे तो दूसरी तरफ गहरी खाइयां और भयावह दलदल था। अगर एक बार कोई इंसान इन घाटियों या दलदल में फंस जाए तो फिर उसका वापस निकल पाना संभव न था। थोड़ी ही दूर पर हिलोरें मारती शारदा नदी बह रही थी।

मिट्टी के टीलों पर ऊंची-ऊंची कटीली झाड़ियां उगी हुई थीं। जहां पर जीप रुकी उससे थोड़ी ही दूरी पर एक टीले पर एक झोपड़ी बनी हुई थी जिसके आगे एक यज्ञ कुंड बना हुआ था। उसमें पड़ी राख से हल्का-हल्का धुंआ उठ रहा था। “इस बियावन में भला झोपड़ी और यज्ञ कुंड का क्या काम?” कौस्तुभ का मन कौतूहल से भर उठा।

“चलो नीचे उतरो।” तभी कौस्तुभ के कानों में लखना की आवाज सुनाई दी। वह समझ गया कि डाकू जीप यहीं छोड़ देंगे और फिर इन बीहड़ों में बने अपने अड्डे तक पैदल जाएंगे। जिस जगह जीप खड़ी थी वहां पर पेड़ की एक डाल काफी नीचे तक झुकी हुई थी। इससे पहले कि डाकू जीप से नीचे उतरते, कौस्तुभ उस डाल को पकड़ कर बंदर की तरह पेड़ पर चढ़ गया।

डाकुओं को इस बात का अंदाजा भी नहीं हो सकता था कि इस तरह जान जोखिम में डाल कर कोई उनकी ही जीप पर चढ़ कर उनके अड्डे के करीब पहुंचने का दुस्साहस करेगा। लखना के इशारे पर दो डाकूओं ने आगे बढ़ कर एक टीले की ओर उगी झाड़ियों को पकड़ कर उठाया तो वे कटी हुई बैलों की तरह ऊपर उठ गईं। उनके नीचे बेहद साफ सुथरी जगह थी। गंगा ने जीप को बढ़ा कर वहां खड़ा कर दिया। झाड़ियों को नीचे छोड़ते ही वह जगह पूरी तरह से ढक गई। ध्यान से देख कर भी कोई इस बात का अंदाजा नहीं लगा सकता था कि इन झाड़ियों के भीतर कोई जीप छुपा कर रखी गई है।







पेड़ पर घनी पत्तियों के पीछे छुपा कौस्तुभ बड़े ध्यान से डाकुओं की व्यवस्था को देख रहा था। सभी डाकू संकल्प को लेकर झोपड़ी की ओर बढ़े। उनके झोपड़ी के भीतर घुसते ही संकल्प भी पेड़ से नीचे उतर आया और जमीन पर सरकते हुए झोपड़ी की ओर बढ़ा। करीब पहुंच कर उसने एक झिरी से आंख गड़ा कर देखा। झोपड़ी के भीतर एक साधु समाधि में लीन था।

“बाबा की जय हो। हम सेवकों को बाबा का आशीर्वाद चाहिए।” लखना ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की।

उसकी आवाज सुन बाबा ने अपनी आंखें खोल दीं और मुस्कराते हुए बोले, “बच्चा, यात्रा में कोई बाधा तो उत्पन्न नहीं हुई?”

“नहीं, सब ठीक-ठाक रहा। बस अब अपनी कुटिया में शरण दे दीजिए।” लखना ने विनती की।

यह सुन बाबा हंसते हुए उठ पड़े और झोपड़ी के एक कोने में रखे लकड़ी के विशालकाय संदूक को अपनी जगह से खिसका दिया। संदूक के हटते ही उसके नीचे बनी सीढ़ियां दिखाई पड़ने लगीं। एक-एक करके सारे डाकू सीढ़ियों से नीचे उतरने लगे। सबसे आखिर में लखना नीचे उतरा। उसके बाद बाबा ने संदूक को फिर वापस खिसका दिया। सीढ़ियां उसके नीचे ढंक गईं।

तो यह है दस्यु सम्राट दददा के अड्डे का प्रवेशद्वार! कौस्तुभ ने मन ही मन डाकुओं की व्यवस्था की दाद दी। अगर भूले-भटके कभी पुलिस का गश्ती दल यहां तक आ भी गया तो झोपड़ी में बैठे डाकुओं के साथी को तपस्वी साधु समझ कर लौट जाएगा।

कौस्तुभ ने सोचा वापस चल कर पुलिस को डाकुओं के अड्डे का पता बता दिया जाए। वह वापस लौटने के लिए पीछे मुड़ा फिर ठिठक गया। दूर-दूर तक जहां तक भी दृष्टि जा सकती थी ऊंचे-ऊंचे टीले और गहरी खाइयां थीं। इन्हीं के बीच से होकर डाकुओं की जीप यहां तक आई थी। किंतु वे किन टीलों के बीच से होकर आए थे लाख कोशिश करने पर भी कौस्तुभ तय न कर सका। हवा के झोंको के साथ उड़ती रेत ने जीप के टायरों के निशानों को मिटा दिया था। डाकू इन बीहड़ों से अच्छी तरह परिचित थे लेकिन कौस्तुभ को लगा कि अगर वह अकेला इन बीहड़ों में एक बार भटक गया तो फिर वापस नहीं निकल पाएगा।

उसने वापस लौटने का विचार त्याग कर डाकुओं के अड्डे के भीतर घुसने का फैसला किया। लेकिन इस बाबा के रहते वहां तक पहुंच पाना संभव न था। सबसे पहले इससे निबटना होगा।

इधर-उधर देखने के बाद वह झोपड़ी के भीतर घुस गया। उसे देखते ही बाबा पहले तो चौंका, फिर कड़कते हुए बोला, “कौन हो तुम और यहां क्या कर रहे हो?”







“बाबा, मैं मोटरसाइकिल से गांव जा रहा था लेकिन रास्ते में कील घुस जाने के कारण वह पंक्चर हो गई है। वहां आस-पास कोई नहीं था जो उसका पंक्चर बना सके। किसी मददगार की तलाश में मैं इन बीहड़ों में घंटों से भटक रहा हूं। आपकी झोपड़ी देखी तो इधर चला आया। क्या आप हमारी मदद कर सकते हैं?” कौस्तुभ ने बात बनाई।

यह सुन बाबा के चेहरे पर राहत के चिह्न उभर आए और वह अपने स्वर को भरसक मीठा बनाते हुए बोला, “बच्चा, भला हम साधु-संन्यासियों के पास मशीनों को ठीक करने का इंतजाम कहां? मैं इस मामले में तुम्हारी कोई मदद नहीं कर पाऊंगा। वैसे इस इलाके में बहुत से खतरनाक जंगली जानवर हैं। इसलिए तुम फौरन यहां से वापस लौट जाओ। सड़क पर ही खड़े रहना कोई ना कोई मदद जरूर मिल जाएगी।”

“ठीक है वापस जाता हूं।” कौस्तुभ ने ठंडी सांस भरी फिर बोला, “बाबा, अगर आपके पास पानी हो तो थोड़ा सा पानी पिला दीजिए। बहुत जोर की प्यास लगी है।”

“अभी लो।” बाबा ने कहा और पीछे मुड़ कर अपना कमंडल उठाने लगा।

कौस्तुभ को इसी मौके का इंतजार था। उसने बिना एक पल गंवाए बाबा की मृगछाला की बगल में रखे उनके चिमटे को उठा कर उसकी खोपड़ी पर जड़ दिया।

बाबा के मुंह से एक चीख निकली और वह वहीं ढेर हो गया। कौस्तुभ ने आगे बढ़ कर लकड़ी के संदूक को खोला। उसमें बाबा के कपड़े रखे हुए थे। उसने एक अंगोछे और धोती को बाहर निकाला।

अंगोछे को मोड़ कर उसने बाबा के मुंह में ठूस दिया और फिर धोती से उसके हाथ-पैर बांध दिए। कुछ सोच कर उसने संदूक को दोबारा खोला। उसमें दो हजार रुपयों के साथ-साथ गांजे के कुछ पैकेट भी रखे हुए थे। उसने रुपयों को निकाल लिया। झोपड़ी के एक कोने में पीतल के कुछ बरतन भी रखे हुए थे। उसने उन्हें भी उठा लिया।

इसके बाद उसने सिर निकाल कर झोपड़ी के बाहर झांका। दूर-दूर तक कोई नहीं था। वह बाबा का चिमटा लेकर इत्मीनान से बाहर निकल आया और झोपड़ी के पीछे आकर एक जगह चिमटे से मिट्टी खोदने लगा। बालू की अधिकता के कारण वहां की जमीन भुरभुरी थी। थोड़ी ही देर में एक छोटा सा गड्ढा खुद गया। उसने सारा सामान उस गड्ढे में रख कर उसे मिट्टी से पाट दिया।

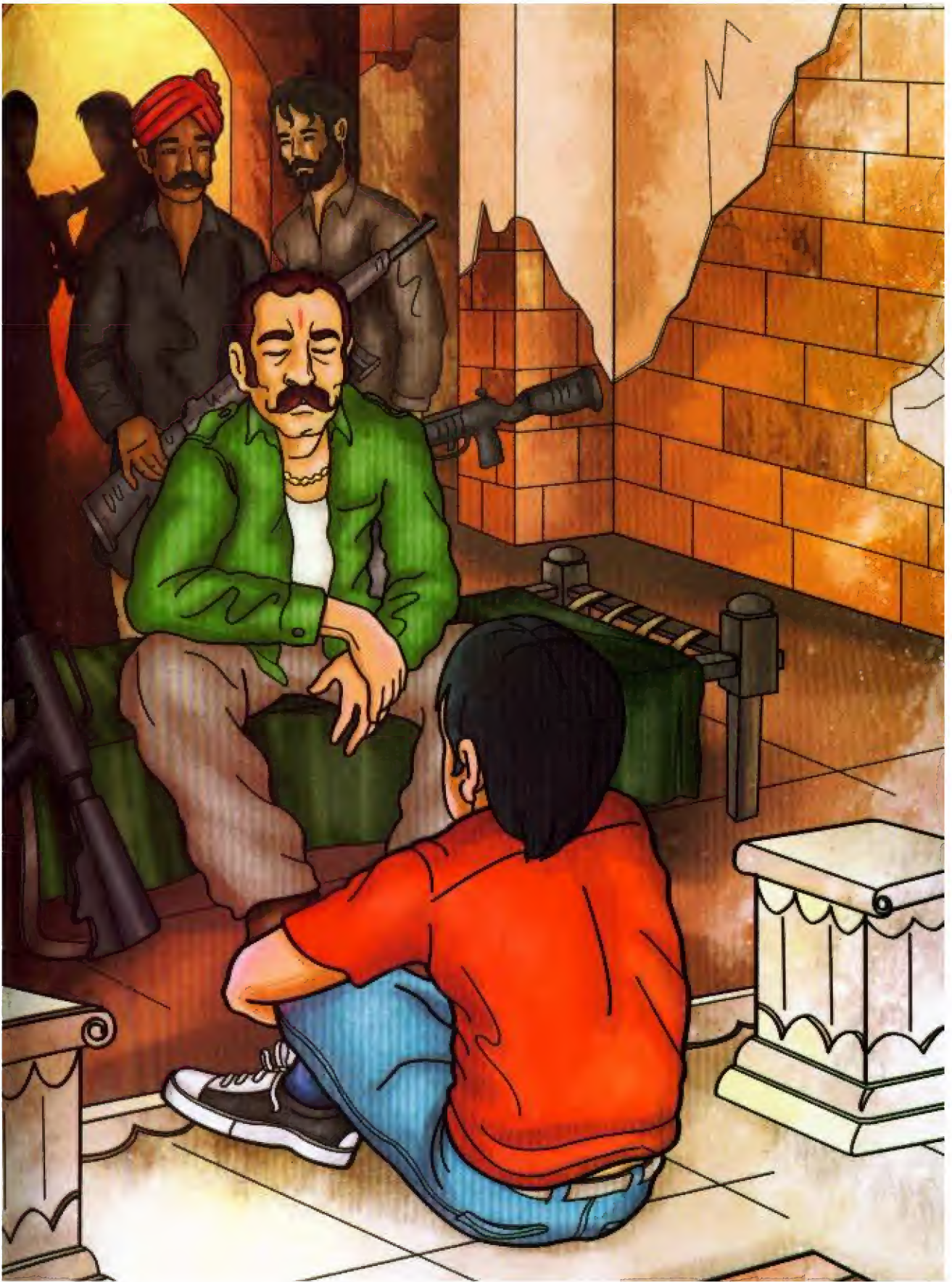
हाथ झाड़ता हुआ वह दोबारा झोपड़ी के भीतर आया। बाबा अभी तक बेहोश पड़ा था। कौस्तुभ ने हाथ लगा कर संदूक को खिसकाया लेकिन वह काफी भारी था। उसने दोबारा कस

कर धक्का दिया तो वह अपनी जगह से थोड़ा सा खिसक गया। उसके नीचे से सीढ़ियां नजर आने लगी थीं। कौस्तुभ को संदूक के वजन का एहसास हो गया था इसलिए उसने उसे ज्यादा नहीं खिसकाया। वह किसी तरह घिसट-घिसट कर सीढ़ियों तक पहुंच गया।

संदूक के नीचे पहुंच कर उसने संदूक को वापस अपने स्थान पर पहुंचाने की कोशिश की लेकिन वह टस से मस न हुआ। उसने अपने हाथों की पूरी शक्ति लगा दी लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। कौस्तुभ को अपनी योजना डांवाडोल होती नजर आई। क्योंकि होश आने पर बाबा जब सीढ़ियों को खुला देखेगा तो असलियत समझ जाएगा। अपनी जान की बाजी लगा कर कौस्तुभ यहां तक आया था अब जरा सी कमी के कारण वह असफलता को गले नहीं लगाना चाहता था।

हाथों को नीचे करके उसने अपने कंधों को संदूक के नीचे टेक दिया। इसके बाद दांतों को भींच कर उसने कस कर जोर लगाया तो संदूक हल्का सा खिसका। उसके कंधे दर्द करने लगे थे लेकिन उसने उसकी परवाह नहीं की। पैरों को मजबूती से सीढ़ियों पर टिका कर उसने दोबारा जोर लगाया तो संदूक थोड़ा सा और खिसका। चार-पांच प्रयासों के बाद संदूक अपने स्थान पर पहुंच गया। कौस्तुभ ने अपनी उखड़ी हुई सांसों को नियंत्रित किया और फिर सावधानीपूर्वक नीचे उतरने लगा।







## डूबा हुआ किला

संकल्प को लेकर जिस समय लखना अड्डे के भीतर पहुंचा डाकू सरदार दददा एक पुरानी चारपाई पर आराम कर रहा था। संकल्प को देखते ही वह चौंक कर उठ बैठा और उसे घूरते हुए बोला, “छोटे, मैंने तुम्हें मोटा बकरा लाने भेजा था लेकिन तुम यह मेमना कहां से उठा लाए?”

लखना ने पूरी घटना बताई जिसे सुन दददा ठहाका लगाते हुए बोला, “तुमने यह बहुत भला काम किया। अगर इस छोकरे के बाप को पकड़ लाते तो बेचारे के घर वालों को रुपये का इंतजाम करने में बड़ी परेशानी उठानी पड़ती। अब घर वालों को परेशान होने की जरूरत नहीं पड़ेगी। बेचारे सेठ जी खुद ही सारा इंतजाम कर लेंगे।”

“सरदार, आखिर अपने ग्राहकों के घर वालों की सुविधा का ध्यान रखना भी तो हमारा फर्ज बनता है!” गंगा मुंह फाड़ते हुए हंसा।

“अरे गंगुआ, तू तो बहुत समझदार हो गया है रे!” दददा ने आगे बढ़ गंगा की पीठ थपथपाई फिर संकल्प की बांह थाम उसकी ओर धकेलते हुए बोला, “ले, यह पकड़ अब तेरे कब्जे में रहेगा। संभाल कर रखना, बहुत कीमती है।”

दददा देखने में तो अधेड़ लगता था लेकिन उसने जिस मजबूती से संकल्प की बांह थामी थी उससे संकल्प को उसकी शक्ति का अंदाजा हो गया था। उसे डाकुओं की बातें सुन कर क्रोध तो बहुत आ रहा था लेकिन इस समय वह बेबस था। गंगा ने उसे सामने दालान में बने पत्थर के चबूतरे पर बैठने का आदेश दिया और स्वयं पास में रखी बाल्टी से पानी लेकर हाथ-मुंह धोने लगा।

संकल्प ने अभी तक डाकुओं के अड्डे को ध्यान से नहीं देखा था। चबूतरे पर बैठने के बाद उसने जब चारों ओर नजर दौड़ाई तो कौतूहल से भर उठा। यह अड्डा किसी पुराने किले का भग्नावशेष मालूम पड़ रहा था। मजबूत नक्काशीदार खंभों पर टिकी छत पर खूबसूरत पच्चीकारी की गई थी। हालांकि पच्चीकारी और दीवारों पर बने भीतिचित्र समय की मार से धुंधले पड़ गए थे लेकिन वे अपने में अतीत के वैभव की कहानी समेटे हुए थे।



पूरा किला जोधपुर के लाल पत्थरों का बना हुआ था। कई जगह से पत्थर उखड़ गए थे। उनके स्थान पर बहुत ही फूहड़ ढंग से सीमेंट का प्लास्टर कर दिया गया था। सिर्फ एक-दो कमरों में लोहे के टूटे-फूटे दरवाजे लगे हुए थे बाकियों के दरवाजे गायब थे। उनकी जगह टाट के गंदे पर्दे टंगे हुए थे। शायद समय के थपेड़ों से लकड़ी के दरवाजे सड़-गल कर नष्ट हो गए थे।

“यह किला किसका हो सकता है?” संकल्प सोच में पड़ गया। अचानक उसकी दृष्टि दालान के सामने वाली दीवार पर बने सूरज के चिह्न पर टिक गई। उसके कानों में घंटियां बजने लगीं। सूरज तो सूरजगढ़ राज्य का राजकीय चिह्न था।

उन्नीसवीं शताब्दी में सूरजगढ़ काफी संपन्न राज्य था। उस जमाने में ज्यादातर आवागमन नावों के द्वारा होता था। शारदा नदी के किनारे बसे इस राज्य के व्यापारी नावों द्वारा दूर-दूर के राज्यों तक व्यापार किया करते थे जिससे सूरजगढ़ को काफी आमदनी होती थी। शारदा नदी अगर इस राज्य के लिए वरदान थी तो अभिशाप भी। हमेशा शांत रहने वाली शारदा बरसात में विकराल रूप धारण कर लेती और तब उसके कटाव में रातों-रात सैकड़ों एकड़ जमीन गायब हो जाती थी।

टनकपुर की पहाड़ियों से निकलने वाली इस नदी की गहराई काफी कम है जिसके कारण बरसात के दिनों में इसका पानी उफन कर बाहर आने लगता है। आज भी यह नदी बरसात के दिनों में गांव के गांव निगल जाती है। यह बात अलग है कि यदि एक तरफ यह जमीन काटती है तो दूसरी तरफ छोड़ देती है लेकिन इससे उसके द्वारा की जाने वाली विनाशालीला की भयावहता कम नहीं हो जाती। जिनके घर-द्वार इसके पाट में समा जाते हैं उन्हें दोबारा अपना घर बसाने के लिए दर-दर की ठोकरें खानी पड़ती हैं। कई बार यह नदी एक ही बरसात में अपना पाट मीलों तक बदल लेती है।

ऐसी ही बरसात की एक भयानक रात में शारदा नदी ने सूरजगढ़ के किले को काटना शुरू कर दिया। चारों ओर अफरा-तफरी मच गई। उस समय वहां के राजा रुकमदेव सिंह की रानी कनकलता मां बनने वाली थीं। सभी लोग अपनी जान बचा कर भाग रहे थे। रुकमदेव सिंह अपनी रानी को बहुत प्यार करते थे। वह ऐसी हालत में रानी को छोड़ कर जाने को तैयार नहीं हुए। उनको बचाने के चक्कर में अंततः वह स्वयं भी बाढ़ के पानी में डूब गए। रात भर में ही सूरजगढ़ का किला शारदा नदी के पेट में समा गया था।

जहां पर सूरजगढ़ का किला था अगले दिन वहां पर शारदा का पानी ठाठें मार रहा था। सूरजगढ़ का खजाना बहुत समृद्ध था। किले के साथ-साथ वह भी पानी के भीतर समा गया था।

ब्रिटीश सरकार ने उसे ढूंढवाने की बहुत कोशिशें की लेकिन सफलता नहीं मिल सकी थी। समय-समय पर कई लोगों ने व्यक्तिगत स्तर पर भी काफी प्रयास किए लेकिन खजाने का पता नहीं लगा सके। उलटे कई लोगों ने अपनी जानें अवश्य गंवा दी। धीरे-धीरे यह मशहूर हो गया था कि सूरजगढ़ का खजाना अभिशप्त है। इसे कोई हाथ नहीं लगा सकता।

संकल्प ने यह सब बातें अपने गांव के बड़े-बुजुर्गों से सुनी थीं। “कहीं यह सूरजगढ़ का डूबा हुआ किला तो नहीं है? नदी के अपना स्थान बदलने से यह पानी के बाहर आ गया हो और सैकड़ों वर्षों के अंतराल में उस पर बालू के टीले बन गए हों?” उसने मन ही मन सोचा।

“ऐ, क्या सोच रहा है? इतनी देर से तुझे आवाज दे रहा हूं। सुनता क्यों नहीं?” तभी गंगा ने संकल्प को झिंझोड़ते हुए कर्कश आवाज में कहा।

“जी क्या बात है?” संकल्प हड़बड़ा कर खड़ा हो गया।

“हुजूर, आपके लिए खाना लग गया है। चल कर खा लीजिए।” गंगा ने काट खाने वाले अंदाज में कहा।

“मैं नहीं खाऊंगा।”

“क्यों नहीं खाएगा बे?” गंगा ने जोर से डपटा।

“मेरा मन नहीं है।” संकल्प ने संयमित स्वर में कहा।

“तेरे मन की ऐसी की तैसी। यहां तेरे नहीं बल्कि मेरे मन की चलेगी। चुपचाप चल कर खाना खा ले वरना ठीक नहीं होगा!” गंगा फट पड़ा।

संकल्प कुछ कहने जा ही रहा था कि दद्दा ने आवाज लगाई, “गंगा, क्या बात है। शोर क्यों मचा रहे हो?”

“सरदार, ये गांधी बाबा का चेला मालूम पड़ता है। भूख हड़ताल पर बैठा है। कह रहा है खाना नहीं खाऊंगा।” गंगा ने बताया।

यह सुन दद्दा सधे कदमों से करीब आया। जिस चबूतरे पर संकल्प बैठा था उसके दो चक्कर काटे फिर अचानक ही उसके चेहरे को अपने पंजो में दाब कर गुर्रा पड़ा, “देख! मेरी आंखों में देख!! यहां तुझे गांधी बाबा का शांति संदेश नहीं बल्कि यमराज का चेहरा नजर आएगा। मेरे इस अड्डे पर न सुनने का रिवाज नहीं है। तुझे बच्चा जान कर पहली गलती माफ किए दे रहा हूं लेकिन याद रखना अगर दोबारा किसी बात से इंकार किया तो अंजाम अच्छा नहीं होगा।”

दद्दा ने यह बात इतने खौफनाक ढंग से कही थी कि संकल्प की हड्डियों तक में सिहरन दौड़ गई। वह चुपचाप गंगा के साथ चल पड़ा। अचानक फड़फड़ाहट की आवाज सुन कर वह







चौंक पड़ा। सफेद रंग का एक कबूतर उस चबूतरे पर आकर बैठ गया था। उसके पैरों में एक छोटा सा कागज बंधा हुआ था।

“छोटे, जरा देख तो तेरा डाकिया क्या संदेश लाया है?” ददूदा ने लखना को आदेश दिया।

लखना ने पुचकार कर उस कबूतर को अपनी गोद में उठा लिया और उसके पंजों में बंधा कागज खोल कर पढ़ने लगा।

“क्या लिखा है?” ददूदा ने पूछा।

“लिखा है कि एक चूहा बिल्ली की पूंछ पकड़ कर लटक गया है।” लखना ने पढ़ा फिर बड़बड़ाते हुए बोला, “पता नहीं इसका क्या मतलब है। अगर चूहा बिल्ली की पूंछ पकड़ कर लटक गया है तो हम क्या करें?”

“लाओ वह कागज मुझे दो।” ददूदा ने हाथ बढ़ा कर कागज ले लिया। उसे दो बार पढ़ने के बाद वह आंखें बंद करके कुछ सोचने लगा।

“सरदार, कुछ समझ में आया?” गंगा ने टोका।

“यह बताओ कि उस गाड़ी में केवल यही एक छोकरा था या और भी थे?” ददूदा ने उत्तर देने के बजाय प्रश्न किया।

“इसके तीन दोस्त और थे लेकिन हमने उन्हें छोड़ दिया था।” गंगा ने बताया।

“लेकिन उन्होंने तुम लोगों को नहीं छोड़ा है!” ददूदा की आंखें अचानक लाल हो उठीं।

“क्या मतलब?” लखना चौंक पड़ा।

“अरे मूर्खों एक चूहा बिल्ली की पूंछ पकड़ कर लटक गया है का मतलब है कि उनमें से एक छोकरा तुम्हारी जीप में लटक गया था।” ददूदा ने दहाड़ते हुए बताया।

“तब तो वह अड़्डे के भीतर भी आ गया होगा।” गंगा बुरी तरह घबरा उठा।

“नहीं, वह अड़्डे के भीतर तक नहीं आया है।” लखना ने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा।

“तुम यह कैसे कह सकते हो?”

“क्योंकि सीढ़ियों पर सबसे बाद मैं उतरा था और जब सरजू ने संदूक खिसका कर रास्ता बंद कर दिया तभी मैं नीचे आया था।” लखना ने बताया।

“इसका मतलब वह छोकरा सरजू की झोपड़ी तक पहुंच गया होगा। हो सकता है कि उसने भीतर घुसने का रास्ता भी देख लिया हो। वह हमारे लिए खतरा बन सकता है इसलिए मुझे आधे घंटे के भीतर वह छोकरा चाहिए। जिंदा या मुर्दा!” ददूदा ने फैसला सुनाया। इस समय उसका



चेहरा अत्यंत भयानक हो गया था ।

आदेश मिलते ही लखना, गंगा और सात-आठ अन्य डाकू अपने-अपने हथियार उठा कर बाहर की ओर दौड़ पड़े । संकल्प समझ गया था कि उसके साथी की जान खतरे में है । वह मन ही मन उसकी सुरक्षा के लिए प्रार्थना करने लगा ।

## वह कौन था?

सीढ़ियों से उतरने के बाद कौस्तुभ डाकुओं के अड्डे के भीतर पहुंचा तो ऐसा लगा जैसे किसी दूसरी दुनिया में आ गया है। प्राचीन किले के खंडहर अपनी भव्यता की कहानी कह रहे थे। कौस्तुभ को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मिट्टी के टीले के भीतर कोई किला भी छुपा हो सकता है। उसे लगा जैसे वह कोई सपना देख रहा है। उसने अपने हाथ पर चिकोटी काटी। दर्द का एहसास होने पर उसे विश्वास हुआ कि जो कुछ भी वह देख रहा है वह सत्य है।

तभी किसी के आने की आहट सुनाई पड़ी। वह फुर्ती से एक खंभे के पीछे छुप गया। अपने कंधे पर बंदूक टांगें दो डाकू आपस में बात करते चले आ रहे थे। एक डाकू हाथ में झोला पकड़े हुए था। दोनों कौस्तुभ के बगल वाले खंभे के पास आकर रुक गए।

कौस्तुभ का कलेजा मुंह को आ गया। उसे लगा शायद डाकुओं को उसकी उपस्थिति का पता लग गया है। वह वहां से भागने की सोच ही रहा था कि एक डाकू की आवाज सुनाई पड़ी, “इसे ले लो।”

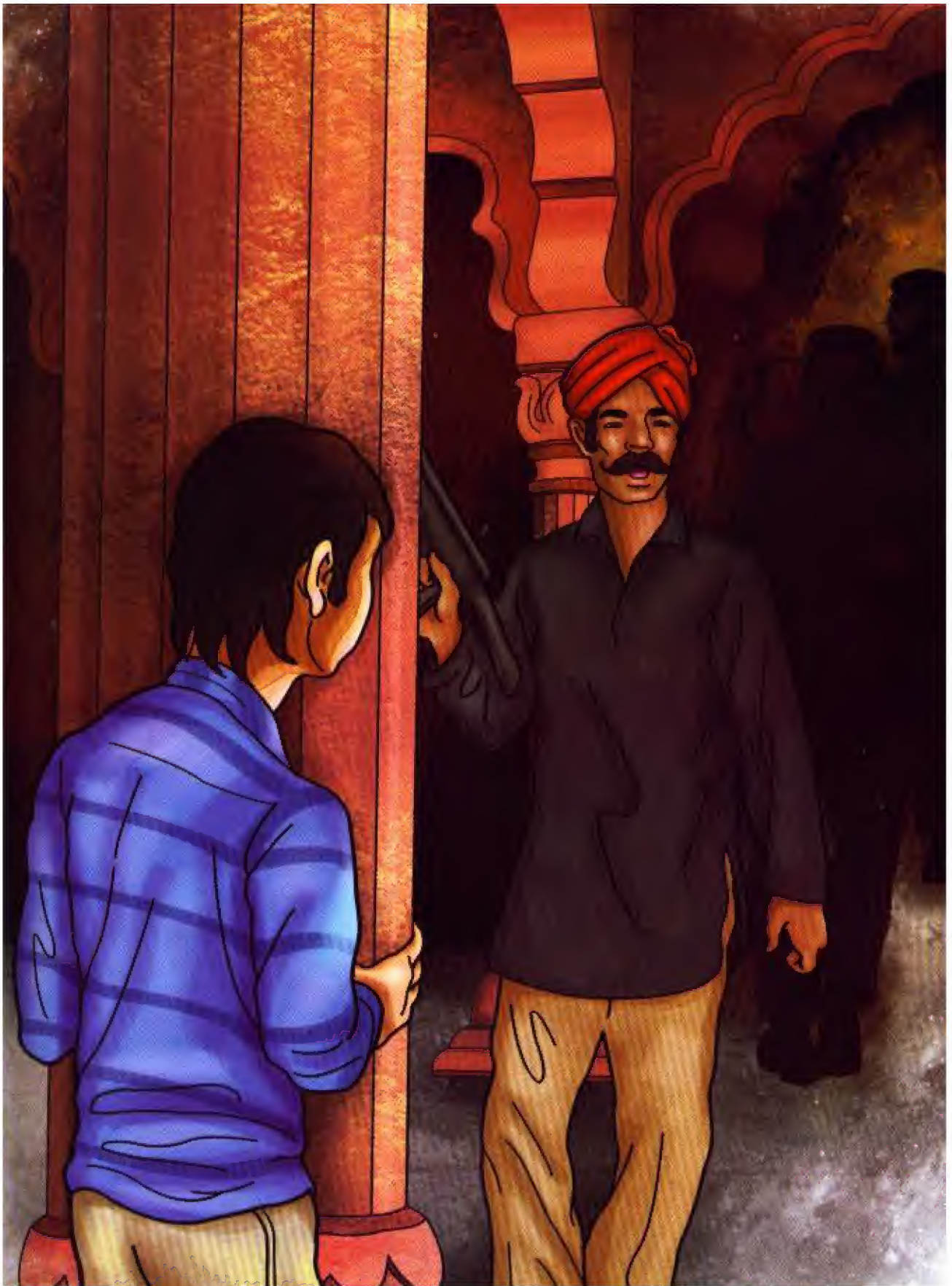
कौस्तुभ को काटो तो खून नहीं। वह दम साध कर वहीं खड़ा रहा। थोड़ी देर तक जब कोई आहट नहीं हुई तो उसने हिम्मत करके खंभे की ओट से हल्का सा झांका तो चौंक पड़ा। जिस डाकू के हाथ में झोला था उसने बंदूक अपने साथी को पकड़ा कर झोले से छेनी हथौड़ी निकाल ली थी। उस खंभे के ऊपर पत्थर को तराश कर नृत्य कर रही अप्सरा की अत्यंत कलात्मक मूर्ति बनी हुई थी। वह डाकू छेनी-हथौड़ी से उसे काटने लगा।

“यार, पिछले महीने भी तू चार मूर्तियां उखाड़ कर ले गया था। अब फिर ले जा रहे हो। इनका करोगे क्या?” दूसरे डाकू ने पूछा।

“गांव में हमारे लड़के इनसे खेलते हैं। एक दिन भाइयों में झगड़ा हो गया तो बड़े वाले ने सारी मूर्तियां तोड़ कर कुएं में फेंक दी। इसलिए दूसरी लिए जा रहा हूं।” मूर्ति उखाड़ रहे डाकू ने बताया।

“यह तो तूने बहुत अच्छी बात बताई। अगली बार दूदा जब मुझे छुट्टी देंगे तो मैं भी चार-पांच मूर्तियां अपने गांव ले जाऊंगा।” दूसरे डाकू ने कहा।







“बिल्कुल ले जाओ, यहां मूर्तियों की कौन सी कमी है। पड़ी-पड़ी सड़ रही हैं। उससे अच्छा कम से कम बच्चे तो खेलेंगे!” वह डाकू हंस पड़ा।

उनकी मूर्खतापूर्ण बातें सुन कौस्तुभ का सिर भन्ना उठा। पुरातत्व के महत्त्व की ऐतिहासिक धरोहरों को यह मूर्ख बर्बाद किए दे रहे थे। अज्ञानतावश उन्हें इस बात का एहसास ही नहीं था कि वे देश का कितना बड़ा नुकसान कर रहे हैं। जमीन के भीतर दबा यह किला अगर दुनिया की निगाह में आ जाए तो यह क्षेत्र अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पर्यटन स्थल के रूप में उभर सकता है। जमीन में दबे इस किले और उसकी इन मूर्तियों को देखने के लिए यहां देश-विदेश के पर्यटकों की भीड़ उमड़ सकती है जिससे पूरे क्षेत्र का विकास होगा। सभी की गरीबी दूर हो जाएगी। इसके अलावा अंतर्राष्ट्रीय बाजार में इन मूर्तियों की कीमत करोड़ों डॉलर होगी और यह मूर्ख इन्हें बच्चों के खेलने के लिए उखाड़ रहे हैं।

कौस्तुभ का मन कर रहा था कि खंभे के पीछे से बाहर आ कर वह इनको रोक दे। तभी कई व्यक्तियों के दौड़ने की आवाज सुनाई पड़ी। लखना के साथ कई डाकू दौड़ते हुए चले आ रहे थे।

“तुम लोग कहां जा रहे हो?” मूर्ति उखाड़ रहे डाकू ने पूछा।

“खबर आई है कि जीप पर लटक कर एक छोकरा अड़्डे के बाहर तक पहुंच गया है। दद्दा ने उसे जिंदा या मुर्दा पकड़ने का हुक्म दिया है।” गंगा ने बिना रुके बताया।

“चलो हम लोग भी चलते हैं।” उस डाकू ने छेनी-हथौड़ी फेंक अपनी बंदूक ले ली।

सारे डाकू दौड़ते हुए सीढ़ी की ओर चले गए। कौस्तुभ के दिल की धड़कनें अचानक ही तेज हो गईं। अभी तक तो वह सुरक्षित था लेकिन अब उसके लिए खतरा काफी बढ़ गया था। उसने जल्द से जल्द संकल्प तक पहुंचने का निर्णय लिया।

खंभे के पीछे से निकल कर वह तेजी से उस दिशा की ओर चल दिया जिधर से डाकू दौड़ते हुए आए थे। उसे विश्वास था कि डाकुओं ने संकल्प को उसी ओर रखा होगा। वह किला बहुत ही बड़ा था। कौस्तुभ गलियारे के दोनों ओर बने कमरों में झांकते हुए चल रहा था। ज्यादातर कमरों में ऊपर तक बालू भरी हुई थी। कुछ कमरों में बालू नहीं थी उनमें डाकुओं का सामान रखा हुआ था लेकिन कोई आदमी नहीं था। कौस्तुभ की समझ में नहीं आया कि ज्यादातर कमरों में बालू क्यों भरी हुई है।

थोड़ी दूरी पर विशाल दालान बना हुआ था। उसके पास पहुंच कर कौस्तुभ ठिठक गया। वहां पत्थर के बने एक चबूतरे पर संकल्प बैठा हुआ था। उसके सामने चारपाई पर एक अधेड़ डाकू बैठा हुआ था। उसके चेहरे पर बड़ी-बड़ी मूंछें थीं और वह काफी बेचैन नजर आ रहा था। उसके



समीप चार अन्य डाकू अपनी बंदूकें लिए खड़े थे। कौस्तुभ समझ गया कि चारपाई पर बैठा व्यक्ति ही डाकू सरदार दददा है। संकल्प उसकी आंखों के सामने था लेकिन वह तय नहीं कर पा रहा कि उस तक कैसे पहुंचे।

उधर साधु वेशधारी सरजू को जल्दी ही होश आ गया। अपने हाथ-पैर बंधे देख वह बुरी तरह घबरा उठा। उसे लगा कि उस छोकरे के यहां तक आने के पीछे अवश्य ही कोई गहरा रहस्य है। कहीं वह पुलिस का भेदिया तो नहीं था? उसने सिर पीछे घुमा कर संदूक की तरफ देखा लेकिन वह अपनी जगह पर यथावत रखा था लेकिन इससे उसके मन को शांति नहीं मिली। घिसटते हुए वह संदूक के पास पहुंचा। उसमें लगी एक कील हल्की सी उभरी हुई थी।

उसने अपने मुंह में ठूंस अंगोछे को कील के ऊपर रखा। उसके बाद मुंह को थोड़ा इधर-उधर हिलाया और फिर झटके से अपने सिर को पीछे खींच लिया। लेकिन वह अंगोछा मुंह से बाहर नहीं निकला। सरजू बार-बार यही क्रिया दोहराने लगा। पांचवें प्रयास में अंगोछे का एक हिस्सा कील में फंस गया। इस बार सरजू के सिर पीछे खींचने पर अंगोछा उसके मुंह से निकलने लगा।

उसने लंबी-लंबी सांसें लेकर पहले अपने दिल की धड़कनों को नियंत्रित करने का प्रयास किया फिर अपने दांतों से हाथों में बंधी धोती को काटने लगा। थोड़ी ही देर में उसके हाथ आजाद हो गए। जल्दी से पैरों को खोल कर वह उठ खड़ा हुआ।

झोपड़ी में इधर-उधर दृष्टि दौड़ाने के बाद उसने संदूक को खोला। उसमें रखे सारे रुपये गायब थे। उसने झोपड़ी में दोबारा दृष्टि दौड़ाई तो पता चला कि पीतल के सारे बर्तन भी गायब हैं। इसका मतलब वह छोकरा पुलिस का भेदिया नहीं बल्कि मामूली चोर था जो साधु को लूट ले गया।

सरजू ने राहत की सांस ली और संदूक से गांजे का पैकेट निकाल कर चिलम भरने लगा। चिलम सुलगा कर उसने पहला कश मारा ही था कि संदूक के नीचे से दस्तक सुनाई पड़ी। उसने संदूक को अपनी जगह से खिसका दिया।

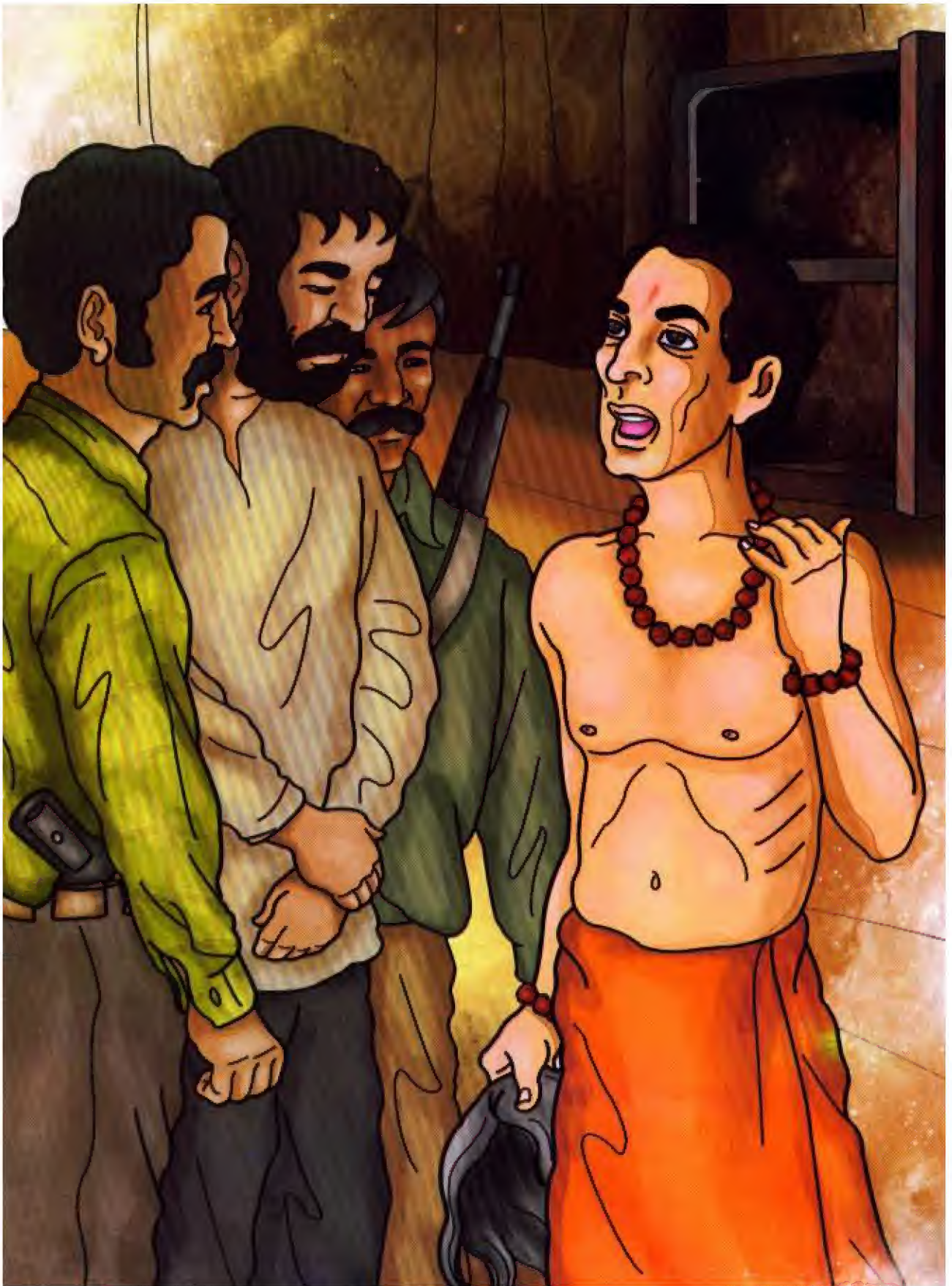
रास्ता खुलते ही सबसे पहले लखना बाहर आया फिर एक-एक करके अन्य डाकू बाहर निकलने लगे।

“इस समय कहां की तैयारी है?” सरजू ने चिलम में कश लगाते हुए पूछा।

“यह बता हमारे जाने के बाद कोई छोकरा तो यहां नहीं आया था?” लखना ने उत्तर देने के बजाय उसे घूरते हुए पूछा।

“तुम्हें कैसे पता?” सरजू बुरी तरह चौंक पड़ा।







“इसका मतलब वह आया था?” लखना काट खाने वाले अंदाज में बोला।

“हां”

“कहां है वह?”

“मुझे नहीं मालूम।”

“क्या मतलब?”

“वह कोई चोर था। उसने बताया था कि सड़क पर उसकी मोटरसाइकिल खराब हो गई है और किसी मिस्त्री को तलाशते-तलाशते रास्ता भटक कर यहां तक आ गया है। उसने मुझसे पानी मांगा। जब मैं पानी देने लगा तो उसने चिमटा मार कर मुझे बेहोश कर दिया और फिर मेरे सारे रुपये और बर्तन चुरा कर यहां से भाग गया।” सरजू ने बताया।

‘तड़ाक’ लखना ने सरजू के गाल पर झन्नाटेदार तमाचा जड़ दिया, “बेवकूफ, वह चोर नहीं बल्कि संकल्प का साथी था, जो जीप पर लटक कर यहां तक आ गया था। लगता है कि वह तुझे धोखा देकर अड़्डे के भीतर पहुंच गया है।”

“वह अड़्डे के भीतर नहीं गया है क्योंकि जब मुझे होश आया तब संदूक अपनी जगह रखा हुआ था।” सरजू ने अपना गाल सहलाते हुए धीमे स्वर में बताया।

“सरजू, आज क्या हो गया है तुझे। इतना भी नहीं समझता कि वह छोकरा बहुत चालू है। भीतर घुसने के बाद उसने संदूक को दोबारा अपनी जगह खिसका दिया होगा।” गंगा ने समझाया।

यह सुन सरजू के चेहरे पर पश्चाताप के चिह्न उभर आए। वह हाथ जोड़ कर माफी मांगने लगा। उसकी बातों को नजरअंदाज करते हुए लखना ने कहा, “तुम्हें धोखा देने के लिए वह रुपये तो अपने पास रख सकता है लेकिन बर्तनों को अपने साथ नहीं ले जा सकता।”

इतना कह कर वह झोपड़ी के चप्पे-चप्पे को खंगालने लगा, फिर कुछ सोच कर झोपड़ी के बाहर की ओर लपका। दूर-दूर तक कोई नहीं था। इधर-उधर दृष्टि दौड़ाने के बाद वह झोपड़ी के पीछे आ गया। अचानक उसकी दृष्टि एक जगह टिक गई। उसने एक डाकू को बुला कर वहां की मिट्टी खोदने का आदेश दिया। थोड़ी ही देर में वहां गड़े पीतल के बर्तन बरामद हो गए।

“इन बर्तनों को यहां किसने गाड़ा होगा?” उस डाकू ने आश्चर्यपूर्वक पूछा।

“उसी छोकरे ने। सोचा होगा कि उसे चोर समझ कर सरजू निश्चिंत हो जाएगा और उसके यहां तक पहुंचने के बारे में किले के अंदर खबर नहीं करेगा। यही हुआ और वह छोकरा इस समय किले के भीतर पहुंच चुका है।” लखना ने बताया।

“तो फिर जल्दी चलो वरना अगर दददा ने कहीं उसे पहले देख लिया तो फिर हम सबकी खैर नहीं।” गंगा घबरा रहा था। अगले ही पल सारे डाकू फिर उसी सीढ़ी से नीचे उतरने लगे।

## सरदार का हुक्म

एक दीवार की ओट से कौस्तुभ काफी देर तक संकल्प को देखता रहा। वह बहुत बेचैन था। वह बार-बार सूनी निगाहों से उस दिशा की ओर देख रहा था जिधर लखना अपने साथियों के साथ गया था। कौस्तुभ को लगा कि संकल्प उसकी सुरक्षा के लिए परेशान है अतः उसे अपने सुरक्षित होने की खबर कर देनी चाहिए।

उसने समीप ही पड़ा छोटा सा कंकड़ उठाया और निशाना ताक कर संकल्प को मार दिया। कंकड़ पड़ते ही संकल्प ने पहले सिर उठा कर सामने देखा फिर दीवार की ओट से झांक रहे कौस्तुभ को देख कर हड़बड़ा कर उठ खड़ा हुआ। कौस्तुभ ने उसे बैठने का इशारा किया तो संकल्प को अपनी गलती का एहसास हुआ और वह सकपका कर बैठ गया।

संकल्प को अपनी शक्ति दिखा कर कौस्तुभ फिर से दीवार के पीछे छुप गया था इसलिए ददूदा उसे नहीं देख पाया लेकिन उसकी अनुभवी आंखों ने संकल्प के हड़बड़ा कर खड़े होने और उसके चेहरे पर चंद क्षणों में आए भावों को पढ़ लिया था।

उसने चिल्लाते हुए अपने साथियों से कहा, “उधर दीवार के पीछे कोई खास बात है। दौड़ कर देखो क्या है?”

आदेश मिलते ही दो डाकू अपनी बंदूकें संभालते हुए उधर दौड़ पड़े। कौस्तुभ ने उस समय गजब की फुर्ती और बुद्धिमानी का परिचय दिया। वह जानता था कि पुराने किले के अनजान रास्तों पर भाग कर वह अपने को नहीं बचा सकता। इसलिए वह उछल कर उसी जगह बने हुए एक छज्जे को पकड़ कर चमगादड़ की तरह चिपक गया। दौड़ते हुए डाकू उसके नीचे से निकल गए।

कौस्तुभ दम साधे वहीं चिपका रहा। थोड़ी ही देर में दोनों डाकू वापस लौट आए और ददूदा से बोले, “यहां तो कोई नहीं है।”

“जाने क्यों मुझे लगा कि उधर कोई है।” ददूदा बड़बड़ाया।

“आप परेशान मत हों। वह छोकरा चाहे कितना भी होशियार क्यों न हो, लखना के हाथों से बच नहीं सकता। वह उसे लेकर आता ही होगा।” एक डाकू ने सांतवना दी। ददूदा ने उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया। एक लंबी सांस लेकर वह खामोश हो गया।



छज्जे से लटके-लटके कौस्तुभ के हाथ दर्द करने लगे थे। अतः वह आहिस्ते से नीचे उतरा और विपरीत दिशा में चल दिया। सोचा रात के अंधेरे में वापस आकर संकल्प को छुड़ाने की कोशिश करेगा।

अभी वह मुश्किल से 20 मीटर आगे बढ़ा होगा कि कई आदमियों के आने की आहट सुनाई पड़ी। कौस्तुभ दौड़ते हुए दाईं तरफ जा रही गली में घुस गया, लेकिन अगले ही पल उसकी सांस अटक गई। सामने हाथ में बंदूक थामे लखना खड़ा हुआ था। उसे देख वह भयानक हंसी हंसते हुए बोला, “इस किले की गलियों को तुम भूल-भुलैया समझो। इनके रास्ते हमारे अलावा और कोई नहीं जानता।”

कौस्तुभ ने उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया और पीछे मुड़ कर भागा। इस बार वह बाईं गली में मुड़ गया लेकिन उधर भी दो डाकू बंदूक लिए खड़े थे। बिना एक पल गंवाए वह तेजी से पीछे पलट कर फिर से एक गली में मुड़ गया लेकिन यह गली उसी दालान में निकलती थी जहां दददा और संकल्प बैठे हुए थे।

इससे पहले कि कौस्तुभ फिर भाग पाता लखना ने उसे दबोच लिया और लात-घूसों से बुरी तरह पीटने लगा। किले की दीवारें उसकी चीखों से गूंजने लगीं।

“बस कर छोटे, छोड़ दे उसे।” दददा ने हाथ उठा कर रुक जाने का इशारा किया।

“दददा, आज पहली बार किसी ने हमारे अड्डे के भीतर घुसने का दुस्साहस किया है। इसलिए मैं इसे नहीं छोड़ूंगा।” लखना ने चीखते हुए कहा और फिर पागलों की तरह कौस्तुभ को पीटने लगा।

संकल्प से देखा नहीं गया। वह कौस्तुभ को बचाने दौड़ा लेकिन लखना ने उसको भी एक लात जमा दी और फिर उसे भी पीटने लगा।

“छोटे, रुक जाओ।” दददा ने चिल्लाते हुए कहा, “क्या आज तुम्हें याद नहीं रहा कि हमारे दल का नियम है कि हम अकारण औरतों और बच्चों पर हाथ नहीं उठाते हैं?”

लखना ने दददा की बात को कोई महत्व नहीं दिया और दोनों को पहले की ही तरह पीटता रहा। यह देख दददा की आंखें लाल अंगारा हो उठीं। उसने दहाड़ते हुए कहा, “लखना, यह तुम्हारे भाई का नहीं बल्कि सरदार का हुक्म है। इन लड़कों को छोड़ दो।”

लखना ने हड़बड़ा कर कौस्तुभ और संकल्प को छोड़ दिया। दोनों एक-दूसरे के गले से लिपट गए। उनकी आंखों से गिर रहे आंसू एक दूसरे को सांत्वना देने की कोशिश कर रहे थे।

लखना ने दोनों को छोड़ तो दिया था लेकिन उसके चेहरे पर अभी भी असंतुष्टि के भाव छाए







हुए थे। ददूदा सधे कदमों से उसके पास पहुंचा और गंभीर स्वर में बोला, “छोटे, मैंने अपने बाद दल की बागडोर तुम्हारे हाथों में सौंपने का निश्चय किया है लेकिन अगर तुमने दोबारा मेरे बनाए नियमों को तोड़ने की कोशिश की तो मुझे अपने फैसले पर विचार करना होगा।”

यह सुन लखना के चेहरे के भाव अचानक ही बदल गए। वह हाथ जोड़ते हुए बोला, “मैंने जबसे होश संभाला है बाप की जगह आपको ही देखा है। मेरा आपकी हुक्मउदूली करने का कोई इरादा नहीं था। बस, इस पर बड़ा गुस्सा आ रहा था। मैं अपनी गलती के लिए माफी चाहता हूँ।”

“ठीक है, अगर सरदार बनना है तो अपने क्रोध पर काबू रखना सीखो।” ददूदा ने उसके कंधे पर हाथ रख कर थपथपाया और पीछे मुड़ कर अपनी चारपाई की ओर चल दिया।

संकल्प बहुत ध्यान से दोनों भाइयों का संवाद सुन रहा था। उससे रहा नहीं गया और वह व्यंग्य भरे अंदाज में बोला, “वाह ददूदा वाह, नाटक अच्छा कर लेते हो।”

“क्या मतलब?” ददूदा ने पीछे पलट कर घूरा।

“बच्चों का अपहरण करवाने का धंधा करते हो। थोड़ी देर पहले अपने भाई को मेरे दोस्त को जिंदा या मुर्दा पकड़ लाने का आदेश दे रहे थे और अब सिद्धांतवादी होने का दावा कर रहे हो। यह नाटक नहीं तो और क्या है?” संकल्प के चेहरे पर व्यंग्य भरी मुस्कान तैर गई।

यह सुन ददूदा के चेहरे पर दर्द की रेखाएं उभर आईं। अपनी आंखों को बंद कर उसने जबड़ों को भींच लिया। ऐसा लग रहा था जैसे उसके भीतर कोई संघर्ष चल रहा हो। चंद क्षणों बाद उसने अपनी पलकें खोलीं और लाल-लाल आंखों से संकल्प को घूरते हुए पूछा, “यह बताओ कि तुमने कभी चींटी को मारा है?”

“चींटी मारने से भला मेरे सवाल का क्या मतलब?” संकल्प ने टोका।

“तुम केवल इतना बताओ कि तुम चींटी को मारते हो कि नहीं?” ददूदा बुरी तरह दहाड़ उठा।

“चींटी जैसे निरीह प्राणी को भला कोई मारता है, जो मैं मारूंगा?” संकल्प ने हड़बड़ाते हुए कहा। ददूदा का क्रोध देख वह डर गया था।

“लेकिन वही निरीह चींटी जब अचानक तुम्हारे शरीर के किसी अंग पर काट लेती है तो तुम्हारा हाथ अचानक उस अंग पर पड़ जाता है कि नहीं?” ददूदा ने पूछा।

“पड़ जाता है!” संकल्प ने हामी भरी।

“और उससे वह चींटी मर जाती है!” ददूदा ने कहा। फिर सांस भरते हुए बोला, “बिल्कुल उसी तरह जब तुम्हारे दोस्त के हमारे अड़्डे तक पहुंचने की खबर मिली तो स्वाभाविक प्रतिक्रिया

स्वरूप मैंने उसे जिंदा या मुर्दा पकड़ने का आदेश दिया था। लेकिन एक बार जब वह जिंदा पकड़ लिया गया तो मेरा सिद्धांत बच्चे पर हाथ उठाने की इजाजत नहीं देता है।” इतना कह कर दद्दा पल भर के लिए रुका फिर सांस भरते हुए बोला, “रही बच्चों के अपहरण की बात तो यह तो हम डाकुओं का पेशा है और अपने पेशे में शर्म कैसी? वैसे मैं इतना बता दूँ कि हम लोग डाकू कोई अपनी खुशी से नहीं बने हैं।”

“तो फिर कैसे बने हैं?” कौस्तुभ ने पूछा। अब तक वह भी अपने को काफी संभाल चुका था।

“इसकी एक लंबी कहानी है। क्या करोगे जान कर?” दद्दा ने कहा और वापस जाकर अपनी चारपाई पर बैठ गया। एक लंबी सास लेकर उसने अपने साथियों पर एक उचटती हुई दृष्टि डाली फिर बोला, “हम लोग भी इंसान हैं कोई कसाई नहीं। इसलिए जहां तक संभव हो सिर्फ डरा धमका कर अपना काम निकालने की कोशिश करते हैं लेकिन जब काम नहीं बनता है तो हम उंगली टेढ़ी करना भी जानते हैं। एक बार जब उंगली टेढ़ी हो जाती है तो उसके बाद कसाई तो क्या हम राक्षस भी बन जाते हैं।”



## कबूतर का रहस्य

कबूतर के पत्र लाने के बाद से मची भगदड़ में अभी तक कोई खाना नहीं खा पाया था। ददूदा के इशारे पर खाना दोबारा लगा दिया गया। खाना खाने के बाद कौस्तुभ और संकल्प को एक कमरे में बंद कर सभी डाकू आराम करने दालान में ही पसर गए।

एकांत मिलते ही संकल्प ने भर्राए स्वर में कहा, “मुझे माफ कर दो। मेरे कारण तुम भी डाकुओं के चंगुल में फंस गए हो।”

“कैसी बातें कर रहे हो? हम दोस्त हैं और एक दूसरे के सुख-दुख में साथ देना तो दोस्तों का कर्तव्य होता है।” कौस्तुभ ने संकल्प का हाथ अपने हाथ में लिया फिर बोला, “चिंता मत करो विपुल और अंकित अभी बाहर हैं। वे भी हमें छुड़ाने की कोई न कोई तरकीब अवश्य निकालेंगे।”

“कहीं डाकू उन्हें भी न पकड़ लें।” संकल्प चिंतित हो उठा।

यह सुन कौस्तुभ को अचानक कुछ याद आया और वह बोला, “यह बता, इन डाकुओं को कैसे पता चला कि मैं उनके अड्डे तक आ गया हूँ?”

“एक कबूतर चिट्ठी लाया था उसमें लिखा हुआ था कि एक चूहा बिल्ली की पूंछ पकड़ कर लटक गया है। उसी को पढ़ कर डाकू समझ गए थे कि हमारा एक साथी उनकी गाड़ी पर लटक कर यहां तक आ गया है।” संकल्प ने बताया।

“लेकिन किसने भेजी होगी वह चिट्ठी?” कौस्तुभ ने पूछा।

“डाकुओं का ही कोई भेदिया होगा।” संकल्प ने कहा।

“कौन हो सकता है वह?” कौस्तुभ सोचने लगा फिर अचानक ही चौंक पड़ा और फुसफुसाते हुए बोला, “वह देख, खिड़की पर एक कबूतर बैठा है। उसके पैर में भी एक चिट्ठी बंधी हुई है।”

“हां, वह भी बिल्कुल ऐसा ही कबूतर था। इससे पहले कि यह कबूतर डाकुओं तक चिट्ठी पहुंचाए, हमें इसे पकड़ना होगा।” संकल्प भी फुसफुसाया।

कौस्तुभ के घर पर कई पक्षी पले हुए थे इसलिए उसे उनके स्वभाव की अच्छी जानकारी थी। वह कबूतर को पुचकारते हुए खिड़की के पास पहुंचा, फिर बिल्ली की तरह झपट्टा मार कर उसे







दबोच लिया।

संकल्प ने उसके पंजे से चिट्ठी निकाल कर पढ़ना शुरू किया, “बाकी दोनों चूहे भी बिल्ली को ढूँढ़ने निकल पड़े हैं।”

“इसका मतलब अंकित और विपुल हमें ढूँढ़ने निकल पड़े हैं और किसी ने डाकुओं को खबर भेज दी है। इसका यह भी मतलब हुआ कि उस व्यक्ति को हमारे पल-पल की खबर है।” कौस्तुभ मुट्ठियाँ भींचते हुए बोला।

“कौन हो सकता है वह?” संकल्प के चेहरे पर छाई चिंता की रेखाएँ कुछ और गहरी हो गईं।

“यह तो नहीं पता लेकिन हमें अंकित और विपुल को सावधान करना होगा वरना वे भी डाकुओं के चंगुल में फँस जाएंगे।” कौस्तुभ बुदबुदाया।

“लेकिन हम तो खुद पिंजड़े में बंद हैं। हम भला उन्हें खबर कैसे कर सकते हैं?” संकल्प ने बेबसी से हाथ मला।

“हम भले ही पिंजड़े में बंद हो लेकिन यह कबूतर अभी तक आजाद है। यह उन तक हमारी खबर ले जाएगा।” कौस्तुभ ने भरपूर विश्वास के साथ कहा।

इतना कह कर उसने उसी पत्र के पीछे लिखा, ‘डाकुओं का अड्डा ऊँचे टीले के नीचे दबे सैकड़ों वर्ष पुराने सूरजगढ़ के किले के भीतर है। उस टीले पर एक साधु की झोपड़ी है। उसमें रखे संदूक के नीचे से वहाँ पहुँचने का गुप्त रास्ता है। हम दोनों डाकुओं के कैद में हैं लेकिन सुरक्षित हैं। तुम लोग सावधान रहना। डाकू बहुत खतरनाक हैं, इसलिए पुलिस को लेकर ही यहाँ आना। तुम्हारे दोस्त कौस्तुभ और संकल्प।’

पत्र लिख कर उसने अपनी लाल रंग की कमीज उतारी। उसे फाड़ कर उसके दो टुकड़े किए। एक टुकड़े में पत्र को बांधने के बाद वह कमीज के उस टुकड़े को कबूतर के पंजों में बांधने लगा।

“यह क्या कर रहे हो? तुम्हारी कमीज को लेकर यह कबूतर ज्यादा दूर तक उड़ नहीं पाएगा। फिर इस बात की क्या गारंटी कि यह अंकित और विपुल के पास ही जाएगा।” संकल्प ने टोका।

“यह कबूतर तो ज्यादा दूर नहीं जाएगा लेकिन इस बियावान इलाके में दूर-दूर तक किसी बस्ती का नामोनिशान नहीं है। हो सकता है कि सूने आसमान में अंकित और विपुल मेरी लाल शर्ट को पहचान लें और इसे पकड़ने की कोशिश करें। अगर यह चिट्ठी किसी गाँव वाले को भी हाथ लग जाए तो भी हमारा काम हो सकता है।” कौस्तुभ ने समझाया, फिर बोला, “इसके अलावा बाहरी दुनिया को खबर करने के लिए हमारे पास और कोई रास्ता भी तो नहीं है। खतरा तो उठाना ही होगा।”

कौस्तुभ की बात सही थी। संकल्प ने कबूतर के सिर को सहलाया फिर कौस्तुभ के हाथ से लेकर उसे खिड़की से बाहर छोड़ दिया। पंख फड़फड़ाता हुआ कबूतर पहले लड़खड़ाया फिर धीरे-धीरे उड़ने लगा। संकल्प की लाल रंग की शर्ट काफी देर तक दिखाई पड़ती रही। उसके दृष्टि से ओझल होने पर ही दोनों खिड़की के पास से हटे।

“अगर अंकित और विपुल इस कबूतर को न पकड़ पाए तो फिर हमारा यहां से निकल पाना बहुत मुश्किल होगा।” कौस्तुभ ने कहा।

संकल्प ने आंख बंद करके कुछ सोचा फिर बोला, “यहां आने के लिए उन गुप्त सीढ़ियों के अलावा और भी रास्ते होंगे। हमें उन्हें खोजना होगा।”

“अगर और कोई रास्ता होता तो डाकू वे सीढ़ियां क्यों बनाते?” कौस्तुभ ने शंका जताई।

“अगर और रास्ते न होते तो यह कबूतर भला यहां तक कैसे पहुंचता?” संकल्प ने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा।

“तुम्हारा मतलब है कि...।” कौस्तुभ कहते-कहते रुक गया।

“तुम ठीक समझे। इस समय हम लोग जहां है उसके ऊपर खुला आसमान है। इसका मतलब यह हुआ कि पूरा किला टीले के भीतर नहीं छुपा है। किले का काफी हिस्सा खुला हुआ भी है लेकिन चारों ओर से ऊंचे-ऊंचे टीलों से घिरा हुआ है जिसके कारण वह बाहर से दिखाई नहीं पड़ता है। इसके अलावा इन टीलों के बीच-बीच में चंबल घाटी की तरह गहरी खाइयां हैं जिसके कारण उधर से आना-जाना भी बहुत मुश्किल होगा।” संकल्प ने समझाया।

“तुम्हारा कहना ठीक है। लेकिन यह रास्ता चाहे कितना कठिन क्यों न हो, उधर से निकलना असंभव तो नहीं होगा? हमें अब उचित अवसर की प्रतीक्षा करनी चाहिए। मौका मिलते ही हम उधर से भागने की कोशिश करेंगे।” कौस्तुभ ने अपना हाथ आगे बढ़ाया तो संकल्प ने गर्मजोशी से उसे थाम लिया।



## सोने की अशर्फियां

उधर अंकित और विपुल को इन बीहड़ों में भटकते हुए कई घंटे बीत गए थे लेकिन मंजिल अभी भी उनसे दूर थी। थोड़ी दूर तक तो रेत में उन्हें जीप के टायरों के निशान दिखाई पड़ते रहे फिर हवा के झोंकों ने उन निशानों को मिटा दिया था। अंदाज से आगे बढ़ते-बढ़ते वे रास्ता भटक चुके थे और अब चाह कर भी पीछे नहीं लौट सकते थे। उनके शरीर थकावट से चूर हो चुके थे लेकिन उनके भीतर कोई शक्ति थी जो उन्हें निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रही थी।

“यार, बहुत जोर से प्यास लगी है। थोड़ा सा रुक जाओ तो पानी पी लें।” विपुल ने अपने हाथ में थमी बंदूक अंकित की ओर बढ़ाते हुए कहा।

थोड़ी ही दूरी पर शारदा नदी का पानी ठाठें मार रहा था। अंकित ने आंखों ही आंखों से उसकी गहराई को नापने की कोशिश की फिर बोला, “लगता है कि नदी बहुत गहरी है। उसके करीब जाने में खतरा हो सकता है।”

“लेकिन अब मुझमें पानी पिए बगैर आगे बढ़ पाने की शक्ति नहीं बची है।” विपुल ने अपने सूखे होंठों पर जीभ फिराते हुए कहा।

प्यास के कारण अंकित का भी बुरा हाल था। कुछ सोच कर उसने अपनी बेल्ट खोल कर उसके हुक को विपुल की कमर में बंधी बेल्ट में बांधा फिर बोला, “चलो पहले तुम पानी पी लो, मैं पीछे से तुम्हें थामे रहूंगा।”

सधे कदमों से विपुल नदी के कगार पर पहुंचा और चुल्लू में भर कर पानी पीने लगा। अंकित मजबूती से अपनी बेल्ट के दूसरे छोर को थामे रहा। उसके बाद भूमिका बदल गई। अंकित नदी के कगार पर पहुंच कर पानी पीने के लिए नीचे झुका ही था कि उसके पैर के नीचे की गीली बालू धसक गई।

“अंकित, संभालो अपने आप को!” बेल्ट को मजबूती से थामे विपुल चीख पड़ा।

अंकित ने बेहद समझदारी का परिचय दिया। बालू धंसते ही वह पीछे की तरफ लेट गया। अगर वह उसी जगह खड़े होकर अपने को संभालने की कोशिश करता तो अपने भार के कारण







वहीं धंस जाता। इसके अलावा अगर विपुल बेल्ट को ना थामे होता तो भी इस समय वह नदी के पानी में गोते खा रहा होता। जमीन पर लेटे-लेटे अंकित थोड़ा सा पीछे खिसका, फिर अपने कपड़े झाड़ते हुए उठ खड़ा हुआ। विपुल ने उसे अपने गले से लिपटा लिया। मौत उनके बिल्कुल करीब से हो कर गुजर गई थी।

“यहां से आगे चलो। किसी सुरक्षित जगह पर रुक कर पानी पिऊंगा।” अंकित ने कहा। दोनों दोस्त एक बार फिर आगे चल दिए। लगभग एक किमी. बाद नदी का किनारा कुछ उथला था। अंकित ने वहां रुक कर अपनी प्यास बुझाई। पानी पीकर वह पीछे पलटा ही था कि चौंक पड़ा।

“विपुल, जरा ऊपर देखो!” वह आसमान की ओर इशारा करते हुए चीख पड़ा।

विपुल ने देखा तो वह भी चौंक पड़ा। एक कबूतर लाल रंग की शर्ट लिए धीरे-धीरे उड़ता हुआ चला जा रहा था। वह चिल्लाते हुए बोला, “अरे यह तो कौस्तुभ की शर्ट है!”

“हमें इस कबूतर को पकड़ना होगा।” अंकित ने कहा और फिर कबूतर के पीछे-पीछे दौड़ पड़ा।

विपुल भी उसके पीछे-पीछे दौड़ा लेकिन बालू में पैर धंसने के कारण वे दोनों तेज दौड़ नहीं पा रहे थे। उनके और कबूतर के बीच की दूरी हर बीतते पल के साथ बढ़ती जा रही थी।

“विपुल, किसी तरह रोको उसे। उसका पकड़ा जाना बहुत जरूरी है।” अंकित मुट्ठियां भींचते हुए चिल्लाया।

यह सुन विपुल के जबड़े भिंच गए। उसने बंदूक को ऊपर तान कर निशाना साधा और ट्रिगर दबा दिया। ‘धांय’ एक तेज आवाज हुई और अगले ही पल कबूतर नीचे गिर पड़ा।

अंकित ने दौड़ कर देखा। गोली कबूतर के पंखों के करीब से निकल गई थी। उसे चोट तो नहीं लगी थी, हां दहशत में जरूर था। इसका मतलब कि थोड़ी देर में उड़ने लगेगा। दोनों बच्चों ने कबूतर को सुरक्षित देखा तो राहत की सांस ली। वे जल्दी-जल्दी उसके पंजों से शर्ट खोलने लगे।

विपुल भी अब तक करीब आ गया था। उसने शर्ट को देखते हुए कहा, “इसके भीतर कुछ बंधा हुआ है। देखो क्या है?”

अंकित ने शर्ट में बंधी गांठ खोली तो उसमें रखी चिट्ठी बाहर निकल आई। उसे पढ़ने के बाद उसने विपुल की ओर बढ़ा दिया। पत्र को पढ़ते ही विपुल का चेहरा गंभीर हो गया।

“क्या सोच रहे हो?” अंकित ने टोका।

“हम इन बीहड़ों में बहुत आगे निकल आए हैं। अब चाह कर भी पीछे नहीं लौट सकते। इसलिए पुलिस को लाने के बजाय हमें खुद को ही संकल्प और कौस्तुभ की मदद करनी होगी।” विपुल ने अपने मन की बात कही।

“तुम ठीक कहते हो।” अंकित ने सहमति जताई।

“बस एक समस्या है।”

“क्या?”

“डाकूओं की संख्या तो बहुत ज्यादा होगी लेकिन हमारी बंदूक में सिर्फ एक गोली बची है। काश हम लोग लाल सिंह की कारतूसों की पेटी भी उठा लाए होते।” विपुल ने अफसोस जताया।

“हम लोग बंदूक और गोलियों से खूंखार डाकूओं का मुकाबला नहीं कर सकते। हमें तो अपनी बुद्धि से उन पर विजय पानी होगी। इसलिए बंदूक या गोलियों के लिए चिंता करना बेकार है।” अंकित ने समझाया।

अंकित की बात सही थी। अगर उनके पास दस-बीस कारतूस और होते तो भी वे क्या कर लेते? विपुल ने कौस्तुभ की शर्ट को अपनी कमर में बांधा और अंकित का हाथ पकड़ कर आगे चल पड़ा। चलते-चलते एक घंटा और बीत गया। इस बीच वे लोग बीसियों टीलों को पार कर गए लेकिन किसी पर साधु की झोपड़ी दिखाई नहीं पड़ी। धीरे-धीरे उनका पूरा शरीर थकने लगा था।

“यार, कोई और उपाय सोचो। इस तरह भटकते-भटकते तो रात हो जाएगी और हम अपनी मंजिल तक कभी नहीं पहुंच पाएंगे।” अंकित ने एक जगह रुकते हुए कहा।

विपुल ने आंख बंद करके कुछ सोचा फिर सामने दृष्टि दौड़ाते हुए बोला, “वह टीला सबसे ऊंचा मालूम पड़ता है। अगर हम लोग उस पर चढ़ कर देखें तो शायद झोपड़ी वाला टीला नजर आ जाए।”

“यही ठीक रहेगा” अंकित ने सहमति जताई और दोनों उस ऊंचे टीले की ओर बढ़ चले।

वह टीला काफी ऊंचा था। उसके शिखर तक पहुंचते-पहुंचते दोनों की सांसें फूलने लगी थीं। वहां पहुंच कर दोनों काफी देर तक इधर-उधर देखते रहे। बहुत ही अजीब इलाका था। चंबल घाटी से भी ज्यादा दुर्गम। वहां तो सिर्फ गहरी घाटियां होती हैं जबकि यहां पर ऊंचे-ऊंचे टीलों के साथ गहरी खाइयां भी थीं जिनके कारण कई टीलों तक पहुंच पाना असंभव था।

“यहां से भी झोपड़ी वाला टीला दिखाई नहीं पड़ रहा है। इतने ऊंचे टीले पर चढ़ना बेकार गया।” विपुल ने कहा और गुस्से से भन्नाते हुए अपने हाथ में पकड़ी बंदूक के कुंदे को टीले के ऊपर पटक दिया।





‘टन्न!!’ तेज आवाज से आस-पास का सन्नाटा भंग हो गया।

“यह आवाज कैसी थी?” अंकित चौंक पड़ा।

“यार, मैंने गुस्से में यह बंदूक जमीन पर पटक दी।” कहते-कहते विपुल ने अपनी बंदूक दोबारा पटक दी।

इस बार भी ‘टन्न’ की आवाज हुई तो अंकित बोला, “लगता है कि यहां पर धातु की कोई चीज है।”

“आओ देखते हैं, क्या है?” विपुल कौतूहल से भर उठा और उस जगह की मिट्टी हटाने लगा।

बालू की अधिकता के कारण उस इलाके की जमीन काफी भुरभुरी थी इसलिए वह हाथ से ही हटाने लगा। थोड़ी सी मिट्टी हटते ही विपुल आश्चर्य से भर उठा। वहां पर तांबे की एक छोटी सी गगरी दबी हुई थी। अंकित ने भी उस गगरी को देख लिया था। वह भी जल्दी-जल्दी मिट्टी हटाने लगा। गगरी के बाहर निकलते ही उनकी आंखें आश्चर्य से फैल गईं। उसके अंदर सोने की अशर्फियां भरी हुई थीं।



## भटकती आत्मा

भौंचक्के से दोनों काफी देर तक अशर्फियों को निहारते रहे। अंकित की आवाज ने शांति भंग की, “यार, यह सब क्या हो रहा है? संकल्प और कौस्तुभ जमीन के अंदर दबे पुराने किले में कैद हैं और इस टीले पर अशर्फियों की गगरी दबी हुई है। कहीं अनजाने में हम लोग किसी रहस्यमयी दुनिया के करीब तो नहीं पहुंच गए हैं।”

“शायद ऐसा ही है।” विपुल ने ठंडी सांस भरी फिर बोला, “वैसे अशर्फियों से भरी यह गगरी इस बात का संकेत है कि संकल्प और कौस्तुभ जिस किले में कैद हैं, वह यहीं कहीं आसपास ही है।”

“तुम यह कैसे कह सकते हो?”

“सीधी सी बात है। पुराने समय में राजा-महाराजा अपना खजाना किले के भीतर ही गाड़ कर रखते थे। लगता है कि यह किला किसी जमाने में शारदा नदी के पानी में डूब गया होगा। उसी के साथ उसका खजाना भी नदी की गहराइयों में दफन हो गया होगा। सैकड़ों वर्षों बाद नदी ने अपनी धारा बदल दी होगी। जिससे वह किला और खजाना तो पानी से बाहर आ गया लेकिन समय के थपेड़ों ने उसके ऊपर मिट्टी के बड़े-बड़े टीले बना दिए हैं।” विपुल ने अंदाजा लगाया।

“तुम्हारा मतलब है कि हम लोग इस समय उस पुराने किले के खजाने के ऊपर खड़े हुए हैं?” अंकित का स्वर उत्तेजना से कांप उठा।

“शायद ऐसा ही हो।”

“तो फिर चलो हम लोग यहां खुदाई करके देखते हैं।” अंकित ने जोश भरे स्वर में कहा।

“जरा सी अशर्फियां देख कर तुम अपना उद्देश्य भूल गए। अरे, हम लोग यहां पर खजाना खोजने नहीं, बल्कि अपने दोस्तों को ढूंढने आए हैं।” विपुल का स्वर तेज हो गया।

“तुमने मेरी बात का गलत अर्थ लगाया है।” अंकित ने विपुल का हाथ थाम लिया और भर्राए स्वर में बोला, “तुमने ही तो कहा था कि अशर्फियां की गगरी मिलना इस बात का संकेत है कि वह किला यहीं कहीं आस-पास है। अब झोपड़ी वाला टीला तो कहीं दिखाई नहीं पड़ रहा है





इसलिए मैंने सोचा कि यहां खुदाई करके देखा जाए शायद खजाने के साथ किले के रास्तों का कोई नक्शा या फिर कोई गुप्त रास्ता मिल जाए।”

विपुल का मन पश्चाताप से भर उठा। उसने अकारण ही अंकित को गलत समझा था। उसने अंकित से माफी मांगी फिर बोला, “अगर यहां से किले के भीतर जाने का कोई रास्ता होगा भी तो हमारे लिए बेकार होगा क्योंकि नदी ने उसे बालू और मिट्टी से पाट दिया होगा। फिर भी चलो थोड़ी खुदाई करके देख लेते हैं शायद किस्मत साथ दे जाए और कोई चमत्कार हो जाए।”

दोनों ने जैसे ही वहां से थोड़ी सी मिट्टी हटाई एक और गगरी का ऊपरी हिस्सा दिखाई पड़ने लगा। दोनों जल्दी-जल्दी मिट्टी हटाने लगे। वह गगरी भी सोने की अशर्फियों से भरी हुई थी।

आधे से ज्यादा गगरी बाहर निकल आई थी। अंकित ने उसको दोनों हाथों से पकड़ कर जोर से ऊपर खींचा। गगरी उसके हाथ में आ गई। उसके नीचे एक छेद सा दिखाई पड़ा। इससे पहले कि वे कुछ समझ पाते, वहां की मिट्टी धंस गई और दोनों धम्म से नीचे जा गिरे।

वास्तव में वह एक ऊंची मीनार का मुहाना था जिसके मुंह पर मिट्टी की मोटी परत जम गई थी। खुदाई करते ही वह परत फट गई और दोनों भीतर आ गिरे थे। गनीमत थी कि पत्थर के फर्श पर बालू की मोटी परत पड़ी हुई थी। अन्यथा इतने ऊपर से गिरने पर उनके हाथ-पैर टूट गए होते।

दोनों काफी देर तक हतप्रभ से पड़े रहे। फिर अंकित अपनी कमर सीधी करते हुए उठ खड़ा हुआ। जिस जगह वे गिरे थे वहां पर ऊपर हुए छेद से रोशनी का एक गोला भीतर आने लगा था। उसके अलावा चारों ओर घुप्प अंधेरा था। हल्की सी रोशनी में ही उन्होंने देख लिया था कि वे पत्थर की बनी किसी इमारत के भीतर आ गए हैं।

“यार, कहीं हम लोग किसी गुप्त रास्ते से सूरजगढ़ के किले के भीतर तो आ नहीं गए?” विपुल भी बालू झाड़ता हुआ उठ खड़ा हुआ।

अंकित ने उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया। जिस जगह से वे नीचे गिरे थे वह काफी देर तक वहां खड़ा देखता रहा फिर बोला, “इस रास्ते से बाहर निकलने के लिए तो सीढ़ियां वगैरह भी नहीं बनी हुई हैं। लगता है कि आपात्काल में रस्सों की सहायता से इससे बाहर निकला जाता होगा। लेकिन इतने वर्षों में वे रस्से सड़-गल कर नष्ट हो गए हैं।”

“शायद ऐसा ही होगा। अब हम लोग यहां से बाहर तो निकल नहीं सकते। इसलिए भीतर चल कर देखते हैं।” विपुल ने राय दी।

“लेकिन भीतर तो काफी अंधेरा है। कुछ दिख नहीं रहा है।” अंकित ने आंशकित स्वर में





कहा फिर खुद ही बोला, “जब ओखली में सिर दिया तो मूसलों से डरना क्या। अब आगे चलो जो होगा वह देखा जाएगा।”

एक-दूसरे का हाथ थाम कर दोनों सावधानीपूर्वक आगे बढ़ने लगे। अचानक विपुल चौंकते हुए बोला, “अरे अपनी बंदूक तो वहीं छूट गई।”

इस अनजान जगह पर बंदूक की बहुत आवश्यकता थी। दोनों एक बार फिर वापस लौटे। रोशनी के गोले में बंदूक दिखाई नहीं पड़ी। टीले के ऊपर से जब वे नीचे गिरे थे तो बंदूक वहीं रखी हुई थी। मिट्टी धंसने के कारण उसे भी नीचे गिरना चाहिए था। अंकित जमीन पर बैठ कर अंधेरे में हाथ से इधर-उधर टटोलने लगा। लगभग पांच मिनट की मेहनत के बाद उसे बंदूक मिल गई। वह छिटक कर थोड़ी दूर जा गिरी थी। उसने बंदूक को उठा कर पागलों की तरह चूमना शुरू कर दिया। विपुल ने इस बीच टटोल-टटोल कर कुछ अशर्फियों को अपनी जेब में भर लिया था। उसने अंकित के कंधे पर हाथ रख उसे चलने का संकेत किया। अंकित उसका हाथ थाम कर चल पड़ा लेकिन अगले ही पल दोनों बुरी तरह चौंक पड़े।

“तू जहां-जहां चलेगा मेरा साया भी साथ होगा।” अंधेरी सुरंग में किसी औरत के गाने की आवाज सुनाई पड़ी। इसी के साथ लालटेन की टिमटिमाती हुई रोशनी दिखाई पड़ी जो कि हर पल दूर होती जा रही थी। उसी के साथ गाने की आवाज भी धीमी होती जा रही थी।

विपुल के दिल की धड़कनें असामान्य ढंग से तेज हो गईं। उसके हाथों में थमा अंकित का हाथ भी बुरी तरह थरथरा रहा था और पसीने से तर हो गया था। दोनों दोस्त बुरी तरह घबरा उठे थे।

“हाय मार डाला।” अचानक एक तेज चीख से आस-पास की दीवारें गूंज उठीं।

“मुझे मत मारो, छोड़ दो, छोड़ दो...हाय मर गया...” दूसरी चीख सुनाई पड़ी और फिर सब कुछ शांत हो गया।

विपुल और अंकित की हालत खराब हो गई। जीवन में उन्हें इतना डर पहले कभी महसूस नहीं हुआ था। एक दूसरे को सहारा देने के लिए दोनों एक दूसरे से लिपट गए। धाड़...धाड़...धाड़ उनका कलेजा बुरी तरह धड़कने लगा था।

## घायल मजदूर

अंकित और विपुल सन्निपात की दशा में काफी देर तक एक-दूसरे से लिपटे रहे। उनका गला बुरी तरह सूखने लगा था। सुरंग में अब कोई आहट नहीं सुनाई पड़ रही थी। भयानक खामोशी में उन्हें सिर्फ अपने दिल की धड़कनों के स्वर सुनाई पड़ रहे थे।

थोड़ी देर बाद अंकित ने कांपते स्वर में कहा, “कहीं यह किला भूतिहा तो नहीं है?”

“क्या तुम भूत-प्रेत में विश्वास करते हो?” विपुल ने थूक निगलते हुए पूछा। उसे अपनी स्वयं की आवाज अजनबी सी महसूस हुई।

“आज तक तो नहीं करता था लेकिन सैकड़ों साल पुराने इस किले में किसी औरत के गाने की आवाज और आदमियों की चीखें ये सब क्या इशारा कर रही हैं? लगता है कि...” अंकित ने अपना वाक्य अधूरा छोड़ दिया।

विपुल को भी कोई उत्तर नहीं सूझ रहा था अतः वह खामोश ही रहा। वह विज्ञान का छात्र था और भूत-प्रेत तथा आत्मा जैसी बातों पर विश्वास नहीं करता था लेकिन अभी-अभी उसकी आंखों और कानों ने जो कुछ देखा और सुना था वह सब क्या था? मन का वहम या कुछ और? एक बहुत बड़ा प्रश्नचिह्न उभर आया था और वह उसका उत्तर नहीं खोज पा रहा था। जीवन में आज पहली बार उसे डर का एहसास हुआ था। उसका मन चीख-चीख कर कह रहा था कि डूबे हुए इस किले में खजाने की रक्षा के लिए कोई अशांत आत्मा भटक रही है और वह किसी को और खजाने को हाथ नहीं लगाने देगी।

अंकित के मन में भी कुछ ऐसे ही विचार चल रहे थे। उसने बहुत से फिल्मों में ऐसे दृश्य देखे थे जिनमें अकाल मृत्यु होने पर आत्मा अपने किले या हवेली में भटकती रहती है। उसने घबराए स्वर में कहा, “विपुल, मुझे बहुत डर लग रहा है। यहां से चलो वरना वह गाना गाती हुई आत्मा फिर आ जाएगी।”

“कहां चलें?” विपुल बेबसी से हाथ मलते हुए बोला, “यहां से बाहर निकल नहीं सकते और किले के भीतर जहां जाओगे, आत्मा वहां आ सकती है। क्योंकि वह गा रही थी तू जहां-जहां चलेगा मेरा साथ होगा।”





“फिर से बता आत्मा क्या गा रही थी?” अंकित अचानक उछल पड़ा।

“क्या तूने नहीं सुना था?” विपुल इस बेतुके प्रश्न से झल्ला उठा।

“सुना था मेरे भाई, सुना था!” अंकित ने विपुल के कंधों पर हाथ रखते हुए शांत स्वर में पूछा, “ये बताओ कि यह किला कितना पुराना होगा?”

“कौस्तुभ की चिट्ठी में लिखा था कि सैकड़ों वर्ष पुराना है।” विपुल ने झल्लाते हुए कहा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि अंकित यह सब क्यों पूछ रहा है।

“अगर किला सैकड़ों वर्ष पुराना है तो उसमें रहने वाली आत्मा भी सैकड़ों वर्ष पुरानी हुई। फिर वह 35-40 साल पुरानी हिंदी फिल्म का गाना कैसे गा सकती है? अगर उसे गाना गाना ही था तो अपने जमाने का कोई गाना गाती?” अंकित ने अपने प्रश्नों का औचित्य समझाया।

“तुम्हारा मतलब है कि...।” विपुल, अंकित का संकेत समझ गया था।

“हां मेरे दोस्त, यह आत्मा-वात्मा नहीं है बल्कि कोई दूसरा ही रहस्य है और हम इस रहस्य का पर्दाफाश करके रहेंगे।” अंकित ने जोर देते हुए कहा।

“तुम ठीक कह रहे हो। लगता है कि कोई हम लोगों को डराने की कोशिश कर रहा है। मैं उसको छोड़ूंगा नहीं।” विपुल जबड़े भींचते हुए गुराया।

आत्मा का भय समाप्त होते ही दोनों दीवारों को टटोलते हुए आगे बढ़ने लगे। चंद कदमों बाद वे एक बड़े से कक्ष में आ गए थे लेकिन अंधकार में अभी कोई कमी नहीं आई थी। एक-दूसरे का हाथ थामे दोनों बहुत संभल-संभल कर चल रहे थे क्योंकि अंधेरे में ठोकर लग कर गिर जाने का अंदेशा था।

इस कक्ष से बाहर निकल कर दूसरे कक्ष में पहुंचते ही वे ठिठक गए। उस कक्ष के एक कोने में जमीन पर रखी एक लालटेन हल्का सा टिमटिमा रही थी। जब कोई आहट नहीं मिली तो वे आगे बढ़े। करीब पहुंच कर विपुल ने लालटेन को उठा लिया।

उसकी लौ तेज करते ही आस-पास रोशनी फैल गई। थोड़ी ही दूरी पर दो आदमी बेसुध पड़े हुए थे। विपुल ने लालटेन उनके चेहरे के करीब किया तो चौंक पड़ा। दोनों आदमियों के सिर से खून बह रहा था। ऐसा लगता था कि किसी भारी चीज से उनके सिर पर प्रहार किया गया है।

“तो वे चीखें इन दोनों की थीं?” अंकित ने फुसफुसाते हुए कहा।

“किसने मारा होगा इन्हें?” विपुल भी फुसफुसाया।

“लगता है कि इस अंधेरे किले के भीतर हमारे अलावा कुछ और लोग भी हैं। अगर इन दोनों को होश आ जाए तो असलियत पता लग सकती है।” अंकित ने धीमे स्वर में राय दी।



किसी अन्य इंसान की उपस्थिति के एहसास ने उन्हें सावधान कर दिया था। विपुल ने लालटेन की रोशनी में उस कक्ष में दृष्टि दौड़ाई। एक कोने में दो बिस्तर, एक पुराना बक्सा, कुछ कपड़े और बर्तन रखे हुए थे।

“लगता है कि ये दोनों इसी कमरे में रहते थे।” अंकित ने कहा।

“लेकिन, किसलिए?” विपुल ने पूछा लेकिन इस प्रश्न का उत्तर तो उन दोनों के पास ही न था।

थोड़ी ही दूरी पर एक छोटा सा ट्रांजिस्टर पड़ा हुआ था। अंकित ने झुक कर उसे उठा लिया। हल्की सी घरघराहट की ध्वनि हुई इसका मतलब वह ट्रांजिस्टर खुला हुआ था। उसने चंद क्षणों तक उसे ध्यान से देखा और फिर बोला, “आत्मा के गाना गाने के रहस्य का तो पता चल गया।”

“वह कैसे?”

“गाने की आवाज इस ट्रांजिस्टर से आ रही थी। इनमें से एक व्यक्ति इसे अपने साथ लिए होगा लेकिन अचानक हुए हमले से यह छिटक कर दूर जा गिरा और गाना बंद हो गया।” अंकित ने समझाया।

“अब अगर ये दोनों होश में आ जाएं तो यह भी पता लग जाएगा कि इन पर हमला किसने किया है।” विपुल ने सहमति जताई और फिर इधर-उधर दृष्टि दौड़ाने लगा। उसका अंदाजा था कि जब ये लोग इस कमरे में रहते हैं तो यहां पानी की भी व्यवस्था अवश्य होगी।

उसका अंदाजा सही था। थोड़ी ही दूरी पर एक बाल्टी में पानी रखा हुआ था। लोटे से पानी निकाल कर वह उनके घावों को धोने लगा। अंकित ने इस बीच एक धोती को फाड़ कर दो टुकड़े कर दिए और उनके घावों पर बांधने लगा।

विपुल ने थोड़ा सा पानी उन दोनों के मुंह के भीतर भी डाल दिया था। अंकित एक दूसरी धोती उठा लाया और उससे दोनों के चेहरे पर हवा करने लगा। थोड़ी ही देर में उनकी प्राथमिक चिकित्सा रंग दिखाने लगी। एक व्यक्ति ने कराहते हुए हल्की सी आंख खोली।

“आप लोगों की ऐसी हालत किसने की है?” अंकित ने उत्तेजित होते हुए पूछा।

उस व्यक्ति की आंखों की ज्योति काफी कमजोर हो चुकी थी। दो-तीन बार पलकें झपकाने के बाद उसने अपनी आंखें पुनः बंद कर लीं। अंकित ने फौरन उसके मुंह पर पानी की छींटे मारे तो कराहते हुए उसने थोड़ी देर बाद अपनी आंखें फिर से खोल दीं।

विपुल ने उसके चेहरे को अपने हाथों में लेते हुए कहा, “हम लोग आप की मदद के लिए आए हैं। यह बताइए कि आप लोगों को किसने मारा और आप लोग यहां क्या कर रहे थे?”



उस व्यक्ति ने अपनी आंखों की पुतली घुमा कर पहले विपुल और फिर अंकित के चेहरे को देखने की कोशिश की फिर उसके होंठ थरथराए, “कल्लू कहां है?”

“वह यहीं है। हम लोग उन्हें भी होश में लाने की कोशिश कर रहे हैं।” अंकित ने कहा। वह समझ गया था कि इसके साथी का नाम कल्लू है।

“उधर बक्से में चोट में लगाने वाली दवा रखी है निकाल लाइए।” उस व्यक्ति ने धीमे स्वर में कहा। इतना कहने में ही वह हांफने लगा था।

अंकित दौड़ कर बक्से से दवाई निकाल लाया। उस व्यक्ति ने आधी शीशी अपने सिर पर उड़ेल ली और आधी अंकित को देते हुए कल्लू के सिर पर डालने का इशारा करने लगा।

वह कोई देशी दवा थी जिसमें चमत्कारिक शक्ति थी। दवा लगने के पांच मिनट के भीतर ही कल्लू ने भी कराहते हुए आंखें खोल दीं। पहला वाला व्यक्ति इस बीच दीवार का सहारा लेकर बैठ गया था।

कल्लू को आंखें खोलता देख उसके चेहरे पर राहत के चिह्न उभर आए और वह एक गहरी सांस भरते हुए बोला, “मेरा नाम मैकू है। दो महीना पहले वे लोग हमें दस गुनी मजदूरी का लालच देकर यहां लाए थे।”

“कौन थे वे लोग?”

“वे दो आदमी थे। हम उनका नाम नहीं जानते। उन्होंने हम दोनों को पच्चीस-पच्चीस हजार रुपये दिए थे और बाकी काम हो जाने के बाद देने का वादा किया था।” मैकू ने बताया।

“ऐसा कौन सा काम करना था जिसके लिए दस गुना मजदूरी दे रहे थे?” विपुल ने पूछा।

“यह पूरा किला बालू और मिट्टी से भरा हुआ था। वे एक-एक करके इसके सभी कमरों की सफाई करवाना चाहते थे। हमने दो महीने में कई कमरे साफ कर दिए थे। लेकिन वे लोग खुश नहीं थे। वे चाहते थे कि हम और तेजी से काम करें।” बताते-बताते मैकू हांफने लगा।

उसने थोड़ा रुक कर अपनी सांसों को नियंत्रित किया फिर बोला, “हम लोग भी इंसान हैं। दो महीने से इस सुनसान किले में रात-दिन काम कर रहे हैं। हमारा जी बहुत ऊब गया था इसलिए हमने दो दिनों की छुट्टी मांगी तो उन्होंने मना कर दिया। इसी बात को लेकर आज सुबह कल्लू से उनकी हाथापाई भी हो गई थी। थोड़ी देर पहले उनमें से एक व्यक्ति वापस लौटा और उसने लाठी से हमारा सिर फोड़ दिया।”

“वे दोनों कह रहे थे कि दो-चार दिनों में उन्हें कहीं से दस-बारह लाख रुपये मिलने वाले हैं उसके बाद वे ढेर सारे मजदूरों को लाकर यहां खुदाई करवाएंगे।” कल्लू ने कराहते हुए बताया।



अब तक वह भी काफी संभल चुका था।

रहस्य पर से पर्दा उठने लगा था लेकिन अभी यह पता लगाना शेष था कि वे दोनों व्यक्ति कौन थे और वे यह सब किसके लिए कर रहे हैं। तभी किसी व्यक्ति के आने की पदचाप सुनाई पड़ी।

“लगता है वह वापस आ रहा है” कल्लू फुसफुसाया।

अंकित ने तुरंत लालटेन की बत्ती धीमी कर दी और फुसफुसाते हुए बोला, “तुम दोनों फौरन जमीन पर लेट जाओ।”

## सूरजगढ़ का राजकुमार

वे दोनों अंकित का आशय समझ गए थे। अतः हाथ-पैर फैला कर जमीन पर लेट गए। अंकित और विपुल एक कोने में दीवाल से चिपक कर खड़े हो गए। चंद पलों बाद लगभग 25 साल के एक नवयुवक ने उस कक्ष में प्रवेश किया। लालटेन की लौ धीमी हो जाने से कक्ष में उजियाला काफी कम हो गया था। नवयुवक ने सावधानीपूर्वक जमीन पर लेटे हुए कल्लू और मैकू को देखा फिर लोहे के बक्से की ओर बढ़ा।

उसे खोल कर वह उसके भीतर कुछ तलाशने लगा। अंकित और विपुल ने आपस में इशारा किया और फिर विद्युत-गति से उसके ऊपर उछल पड़े। इससे पहले कि वह कुछ समझ पाता दोनों ने उसे दबोच लिया। कल्लू और मैकू भी इस बीच खड़े हो गए थे।

इस अप्रत्याशित घटनाक्रम से वह युवक बुरी तरह घबरा उठा और कांपते स्वर में बोला, “कौन हो तुम लोग?”

“यह प्रश्न तो हम लोग पूछेंगे?” अंकित दांत भींचते हुए गुराया।

वह युवक सिटपिटा कर चुप हो गया तो विपुल ने उसका गिरहबान झिंझोड़ते हुए कहा, “बताते क्यों नहीं कि तुम कौन हो और यहां क्या कर रहे हो?”

वह युवक मौन ही रहा। यह देख मैकू का क्रोध भड़क उठा। वह दहाड़ते हुए बोला, “यह आप लोगों को नहीं बताएगा क्योंकि लातों के भूत बातों से नहीं मानते हैं।”

इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता मैकू ने उस युवक की गर्दन को दबोच लिया और पूरी शक्ति से दबाने लगा। युवक की आंखें बाहर को उबलने लगी और उसके मुंह से घुटी-घुटी आवाजें निकलने लगी।

अंकित और विपुल उसे छुड़ाने लगे लेकिन मैकू में इस समय अपार शक्ति समा गई थी। वह उसकी गर्दन छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। वह चीख-चीख कर उस युवक को गालियां दिए जा रहा था और उसकी गर्दन दाबे डाल रहा था।

“मैकू, क्या हम लोगों ने तुम्हारी जान इसीलिए बचाई थी कि तुम हमारा ही कहना न मानो?” विपुल ने दर्द भरे स्वर में कहा।







इन शब्दों में जैसे कोई जादू था। मैकू ने बेबस निगाहों से विपुल की ओर देखा फिर उस युवक की गर्दन छोड़ दी। वह अपनी गर्दन को मलते हुए लंबी-लंबी सांसें लेने लगा।

अंकित ने उसकी ओर देखते हुए गंभीर स्वर में कहा, “देखो हम तुमसे आखिरी बार पूछ रहे हैं कि तुम बता दो कौन हो वरना इस बार हम लोग मैकू को रोकेंगे नहीं। तुम्हें उसके हवाले कर हम यहां से चले जाएंगे।”

यह सुन युवक के चेहरे पर भय के चिह्न उभर आए। उसने अंकित को रुकने का इशारा किया फिर दो-तीन लंबी-लंबी सांसें भरते हुए बोला, “मैं सूरजगढ़ का राजकुमार सुधाकर सिंह हूं।”

“यह झूठ बोल रहा है” अब तक शांत बैठा कल्लू चीख पड़ा, “सूरजगढ़ का किला तो सैकड़ों साल पहले शारदा नदी में डूब गया था। उसी के साथ वहां के राजा रुकमदेव सिंह और उनकी रानी भी डूब गई थीं। राजा को कोई संतान ही नहीं थी फिर यह सूरजगढ़ का राजकुमार कैसे हो गया?”

“मैं राजा रुकमदेव सिंह के भाई हुक्मदेव सिंह का वंशज हूं। जिस समय किला डूबा था उस समय वह इंग्लैंड की महारानी से मिलने लंदन गए हुए थे। किला डूबने के बाद वह मुंबई में बस गए थे। वहीं पर उन्होंने कपड़े और जूट की फैक्ट्रियां लगा ली थीं।” सुधाकर सिंह ने बताया।

विपुल ने प्रश्नसूचक दृष्टि से मैकू की ओर देखा तो उसने सिर हिलाते हुए कहा, “भैया जी, अब इतनी बातें तो हम अनपढ़ों को नहीं मालूम। लेकिन गांव के बड़े-बुजुर्गों के मुंह से इतना जरूर सुना था कि राजा रुकमदेव सिंह के कुछ खानदानी बच गए थे, जिनका अता-पता किसी को नहीं मालूम।”

एक नया रहस्य सामने आने लगा था। अगर सुधाकर सिंह सूरजगढ़ के राजा का वंशज है तो सैकड़ों वर्ष बाद वह अपने साथी के साथ यहां क्या करने आया है और जमीन के अंदर छुपे किले की चोरी-छुपे सफाई करवाने के पीछे उसका उद्देश्य क्या है? अगर अभी तक ढेर सारे मजदूरों से काम कराने की इनकी हैसियत नहीं थी तो दो-चार दिनों में इन्हें दस-बारह लाख रुपये कहां से मिलने वाले हैं? तमाम प्रश्न फन उठा कर खड़े हो गए थे जिनका उत्तर खोजना जरूरी था और उत्तर सिर्फ सुधाकर सिंह के पास था।

काफी सोच-विचार कर अंकित ने सीधे उसकी आंखों में झांकते हुए पूछा, “साफ-साफ बताओ कि तुम लोग किले की सफाई क्यों करवा रहे हो और तुम्हारा यहां आने का उद्देश्य क्या है?”



सुधाकर सिंह ने एक बार फिर मौन धारण कर लिया। अंकित ने अपना प्रश्न दोहराया लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। यह देख कल्लू ने जबड़े भींचते हुए कहा, “तुम राजा हो या राजकुमार, तुमने हम लोगों को मारने की कोशिश की है इसलिए हमारे दिल में तुम्हारी कोई इज्जत नहीं बची है। इसलिए भैया, लोग जो भी पूछें चुपचाप बता दो। वरना हम लोग तुम्हारे हाथ-पैर तोड़ डालेंगे।”

“और इस बार हम लोग तुम्हें बचाएंगे भी नहीं।” विपुल ने कल्लू का वाक्य पूरा किया।

सुधाकर सिंह के चेहरे पर उलझन के भाव उभर आए। वह अनिर्णय की स्थिति में फंस गया था। उसने कल्लू के चेहरे की ओर देखा। उसकी आंखें हिंसक हो चली थीं। सुबह भी उसकी कल्लू से हाथापाई हो चुकी थी। उसे लगा कि अब असलियत बताए बगैर खैर नहीं है।

अपना गला खंखारते हुए उसने कहा, “व्यापार में घाटा हो जाने के कारण हम लोगों की हालत बहुत खराब हो गई थी। एक-एक करके पिताजी की सारी फैक्ट्रियां बिक गई थीं। आठ साल पहले उन्हें बंबई का अपना मकान भी बेचना पड़ा था। उस समय मकान से सामान हटाते समय उन्हें सूरजगढ़ के इस किले का एक नक्शा और कुछ कागजात मिले जिनसे पता चला कि किले के भीतर अकूत खजाना दबा हुआ है। उस खजाने की तलाश में वह हम लोगों को लेकर यहां आ गए और नदी में डूबे किले का पता लगाने लगे लेकिन सैकड़ों वर्षों में यहां सब कुछ बदल गया था। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। आठ साल की मेहनत के बाद कुछ दिनों पूर्व संयोग से हमें जमीन के भीतर दबे इस किले का पता चल गया।”

“इस बात की क्या गारंटी की यह सूरजगढ़ का ही किला है?” अंकित ने उसकी बात काटी।

“वह नक्शा और इस किले की इमारतें बिल्कुल एक जैसी हैं। इसके अंदर भरी रेत और मिट्टी को साफ करवा कर हम लोग अपना खजाना ढूंढना चाहते हैं।” सुधाकर सिंह ने बताया।

“वह खजाना तुम्हारा कैसे हो गया?” विपुल ने टोका।

“वह हमारे पूर्वजों का खजाना है, इसलिए हमारा हुआ।” सुधाकर सिंह ने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा।

“तुम्हारा सोचना गलत है। खजाना कभी राजा की निजी जागीर नहीं होता। राजा तो उसका रखवाला मात्र होता है। वह खजाना सूरजगढ़ राज्य का था और उस पर सूरजगढ़ की जनता का अधिकार था। स्वतंत्रता के बाद सभी राज्यों का भारतीय संघ में विलय हो चुका है इसलिए इस खजाने पर अब भारत सरकार का और इस देश की जनता का अधिकार हुआ।” विपुल ने जोर देते हुए कहा।

सुधाकर सिंह इस विषय पर बहस नहीं करना चाहता था इसलिए मौन ही रहा। अंकित उसके मन की बात समझ गया था अतः बोला, “चलो वह नक्शा दिखाओ।”

“नक्शा तो नहीं लेकिन उसकी फोटोकॉपी इस समय मेरे पास है” सुधाकर सिंह ने बताया।

“वही दिखाओ।” अंकित ने आदेश दिया।

सुधाकर सिंह ने अपनी जेब से तह किया हुआ एक कागज निकाला और उसे खोलने लगा। अचानक कागज उसके हाथ से छूट गया और उड़ता हुआ थोड़ी दूर जा गिरा। सुधाकर सिंह उसे उठाने के लिए नीचे झुका और फिर उसे उठा कर अचानक ही अंधेरे में दौड़ता हुआ चला गया।

अंकित और विपुल उसे पकड़ने के लिए दौड़े लेकिन अंधेरे में उन्हें रास्ता सुझाई नहीं पड़ रहा था। तभी पीछे से कल्लू की आवाज सुनाई पड़ी, “भैया जी, रुक जाइए। रास्ते में कुएं जैसे कई बड़े-बड़े गड्ढे हैं। अगर अंधेरे में उनमें गिर गए तो फिर निकल नहीं पाएंगे।”

यह सुन अंकित और विपुल ठिठक कर रुक गए। किले का नक्शा उनके हाथ आते-आते रह गया था। सुधाकर सिंह यहां के रास्तों को काफी कुछ जानता था इसलिए जान की बाजी लगा कर भागता चला जा रहा था। दोनों हाथ मलते हुए कल्लू और मैकू के पास लौट आए।

“अंकित, मुझे लगता है कि मैंने सुधाकर सिंह को पहले भी कहीं देखा है।” विपुल ने कहा।

“मुझे भी उसका चेहरा काफी कुछ जाना पहचाना लग रहा था लेकिन याद नहीं आ रहा कि कहां देखा है।” अंकित ने कुछ सोचते हुए कहा।

“भैया जी, आप लोगों ने कहीं इसके बाप को तो नहीं देखा है?” मैकू ने पूछा।

“इसके बाप का क्या नाम है?”

“नाम तो नहीं मालूम लेकिन बाप-बेटे की शक्ल काफी मिलती है। वे दोनों ही हम लोगों को लेकर यहां आए थे।” मैकू ने बताया।

अंकित और विपुल ने काफी दिमाग लगाया पर कुछ याद नहीं आ रहा था। बस इतना तय था कि उसे कहीं देखा है लेकिन कहां इसका उत्तर दोनों के पास नहीं था।



## दद्दा की कहानी

पूरी रात संकल्प और कौस्तुभ उसी कमरे में बंद रहे। चारों ओर घुप्प अंधेरा था लेकिन नींद उनकी आंखों से कोसों दूर थी। वे रात भर वहां से निकलने का उपाय सोचते रहे लेकिन किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सके।

सुबह होने पर रोशनदान के रास्ते सूरज की किरणों ने जब कमरे के भीतर प्रवेश किया तो संकल्प अचानक ही चौंक पड़ा, “कौस्तुभ, देखो उस रोशनदान में लगी जाली टूटी हुई है। हम लोग उससे बाहर निकल सकते हैं।”

“लेकिन वह रोशनदान तो काफी ऊंचा है” कौस्तुभ ने आशंका जताई।

संकल्प ने इसका उपाय भी सोच लिया था। उसने कौस्तुभ को अपने कंधों पर चढ़ा कर रोशनदान तक पहुंचा दिया। रोशनदान की जाली काफी जर्जर अवस्था में थी। कौस्तुभ ने उसे खींच कर निकाल दिया और फिर आराम से वहीं पर बैठ गया। किले की दीवारें बड़े-बड़े पत्थरों की बनी हुई थी, इसलिए रोशनदान पर बैठने के लिए काफी जगह मिल गई थी। उसने हाथ बढ़ा कर संकल्प को भी ऊपर खींच लिया। फिर एक-एक करके दोनों सावधानीपूर्वक कमरे के उस पार उतर गए।

आजाद होते ही दोनों खुशी से लिपट गए। अभी वे वहां से भागने की सोच ही रहे थे उस कमरे का दरवाजा खुला और इसी के साथ एक डाकू की चीख सुनाई पड़ी, “वे दोनों छोकरे इस कमरे में नहीं हैं। लगता है कि रात में रोशनदान के रास्ते भाग गए।”

“वे लोग ज्यादा दूर नहीं भाग पाए होंगे। जल्दी से पकड़ो उन्हें वरना आज रात जितने भी लोग पहरें पर थे मैं उन सबको गोली से उड़ा दूंगा।” दद्दा जोर-जोर से चिल्ला रहा था। इसी के साथ चारों ओर भगदड़ मच गई। सभी डाकू अपनी-अपनी बंदूकें लिए दौड़ पड़े।

कौस्तुभ का हाथ पकड़ कर संकल्प एक टूटी हुई दीवार के पीछे दुबक गया। कई डाकू उनके सामने से दौड़ते हुए निकल गए लेकिन संयोग से उनकी निगाह इन दोनों पर नहीं पड़ी।

डाकूओं के दूर निकल जाने पर वे दोनों भी वहां से भाग सकते थे। लेकिन संकल्प के दिमाग में बार-बार दद्दा की चेतावनी गूंज रही थी। उसने फुसफुसाते हुए कहा, “कौस्तुभ, हमारे कारण





आज कई आदमी अपनी जान से हाथ धो देंगे।”

“हां यार, यह अच्छा नहीं होगा।” कौस्तुभ के स्वर में भी चिंता समाई हुई थी।

“तो फिर चलें?” संकल्प ने हाथ आगे बढ़ाया।

कौस्तुभ उसके मन की बात समझ गया था। उसने उसका हाथ मजबूती से थाम लिया और फिर दोनों उस दीवार के पीछे से निकल आए। सामने खुले दालान में दददा घायल शेर की भांति चक्कर काट रहा था। उसकी आंखें लाल अंगारा हो रही थीं।

“दददा!” संकल्प और कौस्तुभ ने एक साथ आवाज दी।

“तुम दोनों तो भाग गए थे?” दददा उन्हें देख बुरी तरह चौंक पड़ा।

“हां!!”

“तो फिर लौट क्यों आए?”

“हमारे भागने में उन लोगों का कोई दोष नहीं था, जो पहरें पर थे। आप कहीं उनको मार न डालें इसलिए हम लोग वापस लौट आए हैं। हम नहीं चाहते कि हमारे कारण किसी को कोई कष्ट पहुंचे।” संकल्प ने बताया।

“क्या बक रहे हो?” दददा गरज उठा।

“जो सच है हम उसे बता रहे हैं” कौस्तुभ ने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा। उसके चेहरे पर भरपूर आत्मविश्वास झलक रहा था।

दददा को अपने कानों और आंखों पर भरोसा नहीं हो रहा था। वह बोला, “तुम लोग पागल तो नहीं हो गए हो?”

“जी नहीं, हम अपने पूरे होशो-हवास में हैं।”

“क्या तुम्हें इस बात का डर नहीं लगा कि मैं तुम लोगों को भी मार सकता हूं?” दददा ने कौस्तुभ की आंखों में झांकते हुए पूछा।

“नहीं।” कौस्तुभ ने जोर देते हुए कहा, “क्योंकि हमें मालूम है कि दस्यु सरदार दददा के सीने में एक अच्छे इंसान का दिल है।”

“अच्छा इंसान और मैं?” दददा के चेहरे पर दर्द भरी मुस्कान तैर गई।

“हां दददा हम जानते हैं कि आप एक अच्छे इंसान हैं और किसी मजबूरीवश आपको बंदूक उठा कर डाकू बनना पड़ा है।” अंकित ने कहा।

“तुम्हें यह सब कैसे पता?” दददा ने अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से उसे घूरा।

“कल आप ने तो कहा था कि हम लोग अपनी खुशी से डाकू नहीं बने हैं।” अंकित ने बताया।





“बच्चों और औरतों पर हाथ न उठाने की आपकी नीति भी इस बात की गवाही दे रहे हैं कि आप एक भले आदमी हैं। हो सकता है कि किसी मजबूरीवश डाकू बनना पड़ा हो। हमें बताओ कि वह मजबूरी क्या थी?” संकल्प ने जोर देते हुए कहा। उसके चेहरे पर इस समय भरपूर मासूमियत छाई हुई थी।

“क्या करोगे जान कर?” दददा के चेहरे पर छाई दर्द की रेखाएं कुछ और गहरी हो गईं।

“कहते हैं कि बांट लेने से दर्द हल्का हो जाता है।” कौस्तुभ ने स्नेह भरे स्वर में कहा।

अपनी आंखें बंद करके दददा कुछ सोचने लगा। उसके चेहरे पर एक के बाद एक कई रंग आ रहे थे। इन बच्चों की निश्छलता ने उसके अंतर्मन को झकझोर कर रख दिया था। वास्तव में वह बुरा इंसान नहीं था। कुछ वर्ष पहले तक वह एक सुखी किसान था। काफी इज्जत थी उसकी। वह अपनी उपजाऊ जमीन पर मेहनत कर खेती करता और अपने परिवार के साथ खुशहाली का जीवन व्यतीत करता था। लेकिन उसकी जमीन पर गांव के दबंगों की आंख गड़ गई। उसे गांव से भगाने के लिए उन्होंने उसके ऊपर जुल्मों का सिलसिला शुरू कर दिया। एक झूठे मुकदमें में फंसा कर उसे जेल भिजवा दिया। जेल में ही उसे खबर मिली की उन लोगों ने एक दिन उसके घर में आग लगा दी जिसमें उसकी पत्नी और इकलौता बेटा जल गए। यह सुन कर उसका खून खौल उठा और बदला लेने के लिए जेल की दीवार फांद इन बीहड़ों में भाग आया। फिर अपने जैसे ही सताए लोगों को मिला कर एक गिरोह बना लिया।

दददा पर जुल्म ढहाने वालों से उसके गिरोह ने चुन-चुन कर बदला लिया था। इसलिए पुलिस उसके गिरोह की पीछे पड़ गई थी। उससे बचने के लिए वे हर नई वारदात के बाद बीहड़ों में अपना ठिकाना बदल देते थे। इस तरह भटकते-भटकते संयोगवश वे सब एक दिन इस छुपे हुए किले के भीतर पहुंच गए थे। यह ठिकाना उन्हें इतना पसंद आया कि इसके एक हिस्से की सफाई कर वे स्थायी रूप से यहीं रहने लगे थे। उसके बाद पुलिस लाख कोशिश करने पर भी कभी इनके अड्डे तक नहीं पहुंच सकी। धीरे-धीरे पूरे इलाके में दददा के गिरोह की तूती बोलने लगी थी।

चारों तरफ से निराश होकर लखना जिस समय अपने साथियों के साथ वापस लौटा उस समय दददा संकल्प और कौस्तुभ को अपनी कहानी सुना रहा था। उन दोनों को वहां बैठा देख कर वह बुरी तरह भड़क उठा। बहुत मुश्किलों से दददा उसे शांत कर पाए। वह इस बात को मानने के लिए तैयार ही नहीं था कि पहले वाले डाकुओं की जान बचाने के लिए वे दोनों वापस लौटे हैं। उसके हिसाब से इसके पीछे इन दोनों की कोई गहरी चाल थी। इसके विपरीत पहले वाले डाकू उन दोनों के मुरीद हो गए थे और उन्हें जी भर कर आशीर्वाद दे रहे थे।



## अंकल का रहस्य

उधर अंकित और विपुल की रात भी बहुत मुश्किलों से कटी। सुनसान किला भांय-भांय कर रहा था। कल्लू और मैकू ने बताया कि उन दोनों को आंखों पर पट्टी बांध कर यहां लाया गया था इसलिए वे बाहर निकलने का रास्ता नहीं जानते हैं लेकिन सुबह होने पर रास्ते का पता लगाने की कोशिश अवश्य करेंगे। एक बार वे किले से बाहर निकल पाएं तो फिर बीहड़ों को भी पार कर लेंगे और पुलिस को लेकर ही लौटेंगे।

अगली सुबह वे सब अंधेरे में घंटों भटकते रहे। जमीन पर पड़े पत्थरों से टकरा कर बार-बार गिर जाने के कारण काफी चोटें भी लग गई थीं लेकिन उन्हें उसकी परवाह नहीं थी। सभी जल्द से जल्द वहां से बाहर निकल जाना चाहते थे। करीब तीन घंटे बाद रोशनी की हल्की सी किरण दिखाई पड़ी। सभी लोग उसी ओर बढ़ने लगे। हर बीते पल के साथ रोशनी बढ़ती जा रही थी। थोड़ा आगे बढ़ते ही सीधी चढ़ाई थी जिस पर चढ़ते हुए वे लोग एक खुले मैदान में आ गए। सिर के ऊपर आसमान देख सभी का उत्साह कई गुना बढ़ गया था।

वह छोटा सा मैदान चारों ओर से ऊंचे-ऊंचे टीलों से घिरा हुआ था। काफी सोच-विचार कर उन्होंने सबसे ऊंचे टीले पर चढ़ कर वहां से दूर तक देखने की ठानी। सभी बुरी तरह थक चुके थे। तीनों ने पंद्रह मिनट आराम किया और उसके बाद वे सब टीले पर चढ़ने लगे। रास्ता बहुत खराब था। जगह-जगह कंटीली झाड़ियां थीं, जिनमें बार-बार कपड़े उलझ जाते थे। लगातार लग रही खरोंचों के कारण उनके हाथ-पैर भी कई जगह से छिल गए थे लेकिन उसकी परवाह किए बिना सभी तेजी से आगे बढ़ते जा रहे थे। टीले के शिखर पर पहुंचने में आधे घंटे से भी ज्यादा समय लग गया। वहां से शारदा नदी किसी पतले नाले की तरह दिखाई पड़ रही थी। उसे देख सभी के चेहरे पर राहत के चिह्न उभर आए क्योंकि वे सही दिशा में आगे बढ़ रहे थे।

उस टीले के दो तरफ गहरी खाइयां थीं, जिनमें उतरना मौत को दावत देना था। सिर्फ एक दिशा में खाई नहीं थी। सभी उसी तरफ उतरने लगे। एक किमी. बाद रास्ता काफी पथरीला हो गया था। जगह-जगह पत्थर की टूटी हुई दीवारें नजर आने लगी थीं। ऐसा लग रहा था जैसे वे किसी खंडहर के करीब पहुंचते जा रहे हैं।



“कहीं ऐसा तो नहीं कि हम लोग किले के एक हिस्से से बाहर निकल कर दूसरे हिस्से के भीतर पहुंचते जा रहे हैं?” विपुल ने आशंकित स्वर में कहा।

“हां ऐसा ही है।” एक भारी आवाज सुनाई पड़ी।

इससे पहले कि वे लोग कुछ समझ पाते एक टूटी दीवार के पीछे से निकल कर दो बंदूक धारियों ने उन्हें घेर लिया।

“तुम लोग कौन हो?” अंकित ने अपने स्वर को भरसक नियंत्रित करने का प्रयत्न करते हुए पूछा।

“पहले तुम बताओ कि तुम लोग कौन हो?” एक बंदूकधारी ने अपनी बंदूक अंकित के सीने पर अड़ा दी।

अंकित ने अचकचाते हुए अपना परिचय दिया तो वह बंदूकधारी अपने साथी से बोला, “ये उन दोनों छोकड़ों के साथी मालूम पड़ते हैं। इनका क्या करें?”

“ददूदा के पास ले चलो। वे ही कोई फैसला करेंगे।” दूसरे बंदूकधारी ने कहा और फिर सबको आगे बढ़ने का इशारा करने लगा।

अचानक आई इस मुसीबत को देख कर अंकित और विपुल चंद पलों के लिए परेशान हो उठे थे। वे चार लोग थे और बंदूकधारी दो, अतः वे उनसे निबटने की सोच रहे थे लेकिन यह जान कर कि डाकू उन्हें संकल्प और कौस्तुभ के पास ले जा रहे हैं उन्होंने अपने को हालात के हवाले कर दिया। डाकू उन्हें लेकर आगे बढ़ने लगे।

थोड़ी ही देर बाद किले का खंडहर दिखाई पड़ने लगा। यहां की ज्यादातर दीवारें ढह चुकीं थीं लेकिन उसके बाद का हिस्सा अपेक्षाकृत मजबूत था। एक लंबी सुरंग के भीतर से होकर वे लोग किले के अंदरूनी भाग में पहुंच गए।

दालान में अपने साथियों के साथ बैठा ददूदा काफी देर से किसी की प्रतीक्षा कर रहा था। उसके हिसाब से कबूतरों को अभी तक कोई न कोई संदेश अवश्य ले कर आना चाहिए था लेकिन ऐसा नहीं हुआ था। इसलिए वह काफी परेशान था।

“छोटे, मुझे तो कुछ गड़बड़ लग रहा है।” उसने लखना को करीब बुलाते हुए कहा।

“कैसी गड़बड़?” लखना ने पूछा।

“इन बच्चों के पकड़े जाने की खबर कल दोपहर में ही धौरहरा पहुंच गई होगी। संकल्प के पिताजी हमारी मांगें मानने के लिए तैयार हैं या नहीं और वे क्या कर रहे हैं। इस सबकी अभी तक कोई खबर नहीं आई है।” ददूदा ने सूने आसमान की ओर ताकते हुए कहा।

“हां कबूतरों को अब तक कोई न कोई संदेश ले आना चाहिए था। पता नहीं अभी तक क्यों नहीं आए? अगर कहो तो दो आदमी धौरहरा भेज दूं। वहां का हाल-चाल पता चल जाएगा।” लखना ने राय दी।

“नहीं, इस समय अपने आदमियों को बाहर भेजना खतरे से खाली नहीं होगा। इसलिए थोड़ा सा इंतजार और कर लो। शायद कोई संदेश आ ही जाए।” दददा ने समझाया।

अभी दददा की बात समाप्त ही हुई थी कि अपने दो आदमियों के साथ चार अनजान लोगों को आता देख वह बुरी तरह चौंक पड़ा।

अंकित और विपुल को देखते ही संकल्प और कौस्तुभ दौड़ कर उनसे लिपट गए। एक-दूसरे का कुशलक्षेम जानने के बाद अंकित ने कौस्तुभ से अंग्रेजी में पूछा, “तुम डाकुओं के चंगुल में कैसे फंस गए?”

“एक कबूतर मेरे यहां आने का संदेश ले आया था उसी से डाकू सावधान हो गए थे।” कौस्तुभ ने अंग्रेजी में ही बताया।

“एक दूसरा कबूतर तुम दोनों के भी इधर आने की खबर लाया था लेकिन उसे हम लोगों ने पकड़ लिया था। उसी से हम लोगों ने तुम्हें यहां के बारे में खबर भेजी थी।” संकल्प ने भी अंग्रेजी में ही बताया।

“हां वह कबूतर हमें मिला था लेकिन हमारे बारे में डाकुओं को खबर भेजने वाला कौन हो सकता है?” अंकित ने कहा।

“कोई ऐसा व्यक्ति जिसे हमारे पल-पल के बारे में खबर थी।” संकल्प ने जोर देते हुए कहा।

अचानक विपुल को कुछ याद आया और वह चौंकते हुए बोला “ऐसा व्यक्ति तो सिर्फ एक ही है।”

“कौन?”

“अंकित, अब समझ आया कि सुधाकर सिंह का चेहरा हमें जाना पहचाना क्यों लग रहा था?” विपुल ने प्रश्न पूछा फिर स्वयं ही उसका उत्तर देने लगा, “क्योंकि उसके बाप से हम लोग कल ही मिल चुके थे और उसी को हमारे पल-पल के बारे में जानकारी थी।”

“तुम्हारा मतलब है कि...” अंकित बोलते-बोलते रुक गया। उत्तेजनावश उसकी सांस फूलने लगी थी।

“हां, तुम ठीक सोच रहे हो वह व्यक्ति दिवाकर अंकल ही हैं। संकल्प और कौस्तुभ के जाते ही वह पुलिस को देखने के बहाने एक ऊंचे टीले पर चढ़ गए थे। वहीं से उन्होंने पहले एक







कबूतर के माध्यम से संदेश भेजा और हम लोगों के आगे बढ़ने पर दूसरे कबूतर के माध्यम से संदेश भेज दिया। उनकी ही शक्ल सुधाकर सिंह से मिलती है और वही खजाने के तलाश में यह सब कर रहे हैं।” विपुल ने रहस्य पर से पर्दा उठाया।

“यह सुधाकर सिंह कौन है और खजाने का क्या चक्कर है?” संकल्प ने पूछा।

अंकित कल से घटित हो रही सभी घटनाएं बता दीं। चूंकि सारी बातचीत अंग्रेजी में हो रही थी, इसलिए डाकुओं के पल्ले कुछ नहीं पड़ा। दददा इस बीच अपने दोनों साथियों से इन चारों के बारे में पूछताछ कर चुका था। सारे दोस्तों को दूसरी भाषा में बात करता देख उसने डपटा, “ऐ छोकरों, तुम लोग क्या खुसुर-पुसुर कर रहे हो?”

“दददा, आपने दिवाकर अंकल से कितने रुपयों में मेरा या मेरे पिताजी का सौदा किया है?” संकल्प ने उत्तर देने के बजाय प्रश्न किया।

“तुम्हें इस सौदे के बारे में कैसे पता चला?” दददा बुरी तरह चौंक पड़ा।

“हमें तो एक ही दिन में इतनी बातें पता चल चुकी है जितनी आपको जिंदगी भर में नहीं पता चली होगी।” संकल्प ने दददा के करीब आते हुए तेज स्वर में कहा। एक क्षण की खामोशी के बाद उसने कहा, “दददा आपने यह तो बता दिया था कि आप डकैत क्यों बने लेकिन यह नहीं बताया कि अब आपकी जिंदगी का उद्देश्य क्या है?”

“एक डाकू की जिंदगी का भला क्या उद्देश्य हो सकता है। किसी भी दिन पुलिस की गोली लगेगी और कहानी खत्म!” दददा के स्वर में दर्द उभर आया।

“क्या आपकी इच्छा नहीं होती कि बाकी की जिंदगी अपने घर में शांति से गुजारें?” संकल्प ने शांत स्वर में पूछा।

“हमने सपने देखना बंद कर दिया है।”

“लेकिन यह सपना हकीकत बन सकता है।” संकल्प मुस्कराया।

“वह कैसे?” दददा ने अविश्वासपूर्वक पूछा।

“तुम अपने साथियों के साथ सरकार के सामने आत्मसमर्पण कर दो।”

“अबे चोप्प!” लखना पूरी ताकत से दहाड़ उठा, “बहुत देर से तेरी बकवास सुने जा रहा हूं। अब अगर एक लफ्ज भी और बोला तो तेरा मुंह तोड़ दूंगा।”





## कौन लेगा खजाना

लखना की दहाड़ सुन अंकित और विपुल सहम गए लेकिन संकल्प तेजी से उसकी ओर पलटा और उसकी आंखों में आंखें डालते हुए बोला, “पूरी बात समझे बिना बीच में कूद कर हाथ-पैर चलाने की आपकी बहुत गंदी आदत है। पहले मेरी बात तो पूरी तरह से समझ लो फिर जो करना चाहो कर लेना।”

यह सुन लखना बुरी तरह भड़क उठा और संकल्प को मारने दौड़ा। ददूदा ने बहुत मुश्किलों से उसे रोका और संकल्प को अपनी पूरी बात समझाने के लिए कहा। संकल्प और कौस्तुभ के वापस लौट आने के कारण वह उनसे काफी प्रभावित हो गया था। उसका मन कह रहा था कि ये बच्चे साधारण नहीं हैं।

“ददूदा, पहले यह बताओ कि हमारा अपहरण करवाने में दिवाकर सिंह का हाथ है कि नहीं?” संकल्प ने ददूदा के चेहरे पर आंखें गड़ाते हुए पूछा।

“हां है, लेकिन तुम जो बकवास कर रहे हो उससे इसका क्या संबंध?” ददूदा ने उसे घूरते हुए कहा।

“क्या दिवाकर सिंह ने आपको बताया था कि उसके पास सूरजगढ़ के किले और उसमें छुपे खजाने का नक्शा है?” संकल्प ने उत्तर देने के बजाय एक और प्रश्न किया।

“नहीं।”

“तो फिर उसने यह भी नहीं बताया होगा कि वह चुपके-चुपके किले की सफाई करवा रहा है ताकि खजाना खोज सके।” संकल्प ने ददूदा के चेहरे पर दृष्टि गड़ाते हुए कहा।

“उसने यह सब तो नहीं बताया लेकिन तुम्हारे पास इस बात का क्या सबूत कि तुम जो कुछ भी कह रहे हो वह सच है?” ददूदा के चेहरे पर असमंजस के चिह्न उभर आए।

“सबूत तो ये दोनों मजदूर हैं जो दिवाकर सिंह के कहने पर पिछले दो महीने से किले के एक हिस्से की सफाई कर रहे थे। हमारा अपहरण करवाने के बदले में आपने शायद दिवाकर सिंह को दस-बारह लाख रुपये देने का वायदा किया है। उसके बाद वह ढेर सारे मजदूरों को ला कर किले की खुदाई करवाने की योजना बना रहा है।” संकल्प ने समझाया।



ददूदा को अभी भी संकल्प की बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था। विपुल ने आगे बढ़ते हुए कहा, “मैं जानता था कि कोई भी हमारी बातों पर विश्वास नहीं करेगा, इसीलिए मैं किले के उस हिस्से में मिली सोने की कुछ अशर्फियां उठा लाया हूँ।”

इतना कह कर वह अपनी जेब से अशर्फियों को निकालने लगा। उन्हें देख कर ददूदा के साथ-साथ सभी डाकुओं की आंखें आश्चर्य से फैल गईं। ददूदा ने कल्लू और मैकू से पूछताछ की तो वे विस्तार से सारी बातें बताने लगे। असलियत जान कर लखना बुरी तरह भड़क उठा और दांत भींचते हुए बोला, “यह दिवाकर का बच्चा हमसे दोहरी चाल चल रहा है। मैं उसे जान से मार डालूंगा और सारा खजाना अपने कब्जे में कर लूंगा।”

“आप क्या खून-खराबे के अलावा और कुछ सोच ही नहीं सकते?” अंकित ने तेज स्वर में लखना की बात काटी, “यह बताओ कि अगर खजाना आपको मिल भी गया तो आप उसका करोगे क्या?”

“मौज मनाऊंगा, जी भर कर ऐश करूंगा।” लखना पहली बार मुस्कराया।

“इन बीहड़ों में क्या खाक मौज मनाओगे? अव्वल तो महाजन लोग आपसे वह खजाना कौड़ियों के मोल खरीद लेंगे और जो रकम मिलेगी उससे आप पुलिस के डर के कारण कहीं इज्जत की जिंदगी नहीं गुजार पाओगे। ऐश के नाम पर ज्यादा से ज्यादा इन बीहड़ों में दिन-रात दारू पीकर पड़े रहोगे और लीवर खराब हो जाने के बाद इलाज के अभाव में एक दिन एड़ियां रगड़-रगड़ कर इसी बियावान किले में मर जाओगे। उसके बाद आपका कोई नामलेवा भी नहीं बचेगा।” विपुल ने तेज स्वर में कहा। बोलते-बोलते उसके गले की नसें फूलने लगी थीं और चेहरा लाल हो गया था।

उसके मुंह से निकला एक-एक शब्द हथौड़े की भांति लखना के दिलो-दिमाग पर बरस रहा था। उसका चेहरा सफेद पड़ गया। विपुल ने उसे असलियत का आईना दिखा दिया था जिसके बाद उसकी कुछ बोलने और समझने की शक्ति समाप्त हो गई थी। वह चुपचाप वहीं पड़े एक बड़े से पत्थर पर बैठ गया। उसके चेहरे पर एक के बाद एक कई रंग आ रहे थे। ऐसा लग रहा था कि उसके भीतर कोई झंझावात चल रहा है।

ददूदा अपने भाई के मनोभावों को समझ गया था। वह उठ कर लखना के करीब आया। चंद क्षणों तक लखना के चेहरे को देखने के बाद उसने उसके कंधों पर हाथ रख कर थपथपाया फिर संकल्प की ओर देखते हुए बोला, “तो तुम्हारा कहना है कि हम लोग हाथ आए इस खजाने को छोड़ दें लेकिन इससे भला हमारा क्या फायदा होगा?”



“पहली बात तो यह कि अभी वह खजाना आप लोगों के हाथ आया नहीं है। दूसरी बात यह है कि आप लोगों को इस बात का एहसास ही नहीं है कि आप कितनी बड़ी धरोहर को देश की नजरों से छुपाए हुए हो और अपने इस पिछड़े हुए इलाके का कितना बड़ा नुकसान कर रहे हो।” संकल्प ने कहा।

“हम भला क्या नुकसान कर रहे हैं?” दददा आश्चर्य से भर उठा।

“यह किला बहुत ही ऐतिहासिक महत्व का है। यदि इसका पता दुनिया वालों को मिल जाए तो डूबे हुए इस किले को देखने के लिए देश-विदेश के पर्यटक यहां उमड़ पड़ेंगे। उनके आने से यहां के लोगों को रोजगार मिलेगा। सरकार सड़कों और होटलों का निर्माण करेगी जिससे पूरे क्षेत्र में खुशहाली छा जाएगी।” अंकित ने समझाया।

“लेकिन हमें क्या मिलेगा?” अब तक शांत बैठे गंगा ने टोका। उसे इन बच्चों की बातें बिल्कुल बकवास लग रही थीं और उससे भी ज्यादा आश्चर्य इस बात का हो रहा था कि दददा इतनी देर से उनकी बकवास को सुन रहे हैं।

“अगर देश की इतनी बड़ी धरोहर को आप लोग दुनिया के सामने ले आओगे तो हमें विश्वास है कि सरकार आप सबको आम माफी दे देगी।” अंकित ने समझाया।

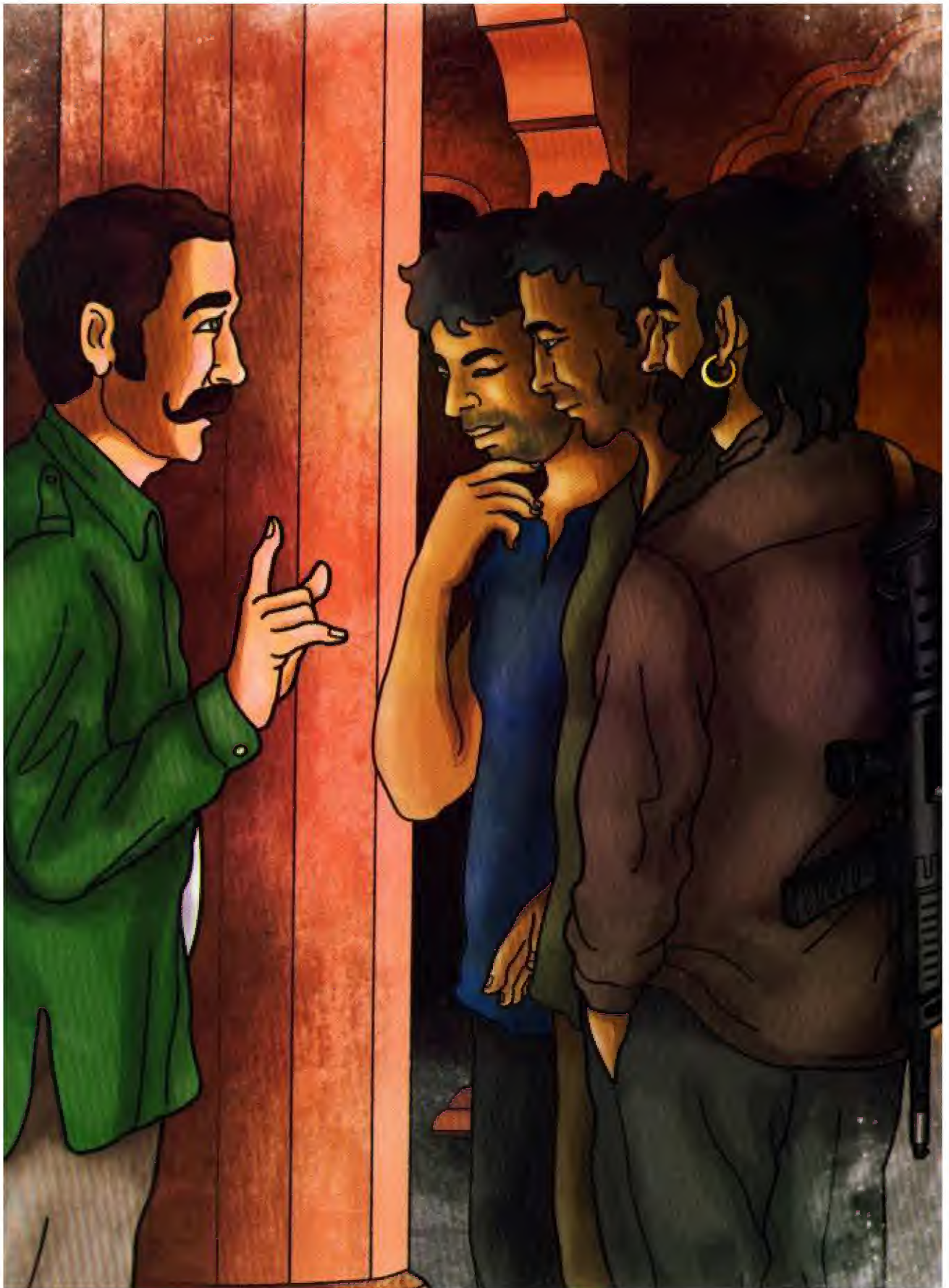
“उस माफी को हम लोग ओढ़ेंगे या बिछाएंगे? अरे हम लोगों को तो कोई अब अपने खेतों में मजदूरी भी नहीं करने देगा। अगर हम डकैती छोड़ देंगे तो भूखों मर जाएंगे।” गंगा फट सा पड़ा। उसके भीतर का दबा हुआ आक्रोश बाहर आने लगा था।

“ऐसा नहीं होगा। सरकार छुपे हुए धन का पता बताने वाले को उसका दस प्रतिशत हिस्सा इनाम में देती है। हम सब मिल कर पहले इस किले में दबे खजाने को ढूँढ़ेंगे और फिर उसे सरकार को दे देंगे।” कौस्तुभ ने योजना समझाई।

“वाह बेटा वाह, हम दुनिया को चराते हैं और तुम लोग चले हो हमें चराने। खजाना ढूँढ़ें हम और उसका नब्बे प्रतिशत हजम कर जाए सरकार। केवल बची-खुची दस प्रतिशत की झूठन चाटें हम लोग!” गंगा ने काट खाने वाले अंदाज में कहा। उसके चेहरे से ऐसा लग रहा था कि अगर दददा सामने न होता तो अब तक वह संकल्प और उसके साथियों का मुंह तोड़ चुका होता।

“यह आपके मन का वहम है। आप लोग लूट का माल जिस महाजन को बेचने जाते हो वह भी आप लोगों को 100 के माल का 10 ही देता होगा और उस 10 को भी आप लोग चोरों की तरह छिपते-छुपाते ही खर्च कर पाते होंगे। आपके घर वाले भी पाप की इस कमाई को लेने में झिझकते होंगे। इसके विपरीत सरकार जो इनाम देगी उसके बल पर आप लोग समाज में इज्जत





के साथ रह सकते हो। अपना कोई काम-काज प्रारंभ कर सकते हो। आराम की जिंदगी गुजार सकते हो।” विपुल ने समझाया।

यह सुन गंगा सोच में पड़ गया। तभी अंकित ने गर्म लोहे पर चोट की, “सोच क्या रहे हो? यहां करोड़ों-अरबों का खजाना दबा हुआ है। अगर सरकार ने 10 प्रतिशत भी दे दिया तो एक-एक के हिस्से में कई-कई लाख रुपये आएंगे साथ ही भरपूर इज्जत भी मिलेगी।”

गंगा निरुत्तर हो गया। शायद उसे बच्चों की बातें समझ में आने लगी थी। उसके चुप होने पर ददूदा ने अपने साथियों पर दृष्टि दौड़ाई। सभी बहुत ध्यान से उन सबकी बातें सुन रहे थे लेकिन उनके चेहरे पर असमंजस के चिह्न छाए हुए थे। शायद वे लोग भी कोई निर्णय नहीं ले पा रहे थे।

ददूदा ने गहरी सांस भरी फिर बोला, “किसी को कुछ कहना है या मैं सबकी तरफ से कोई फैसला ले लूं?”

“आप हमारे सरदार हैं जो आदेश देंगे हम आंख बंद करके मान लेंगे।” कई स्वर एक साथ उभरे।

ददूदा ने चारों दोस्तों पर एक दृष्टि डाली फिर बोला “इन बच्चों की बातों में काफी दम है। हम ने अब तक लाखों रुपये की लूट-पाट की होगी लेकिन हमारे पास आज कुछ भी नहीं है। पुलिस की गोलियां खा कर हमारे कई साथी पहले भी मारे जा चुके हैं और बाकी कितने दिन जिंदा रहेंगे कोई नहीं जानता। इसलिए मैंने आत्मसमर्पण करने का फैसला लिया है लेकिन...”

“लेकिन क्या?” संकल्प ने पूछा।

“दल का सरदार होने के नाते अपने साथियों की सुरक्षा की जिम्मेदारी मेरी है। इसलिए पक्का इंतजाम हुए बिना मैं आत्मसमर्पण नहीं करूंगा।” ददूदा ने कहा।

“आप कैसा इंतजाम चाहते हैं?” विपुल ने पूछा।

“सबसे पहले तो हम दिवाकर सिंह को यहां बुला कर उससे नक्शा छीनेंगे। खजाना कब्जे में करने के बाद हमारे एक आदमी के साथ तुम्हारा एक साथी बाहर जाएगा। तुम सभी अच्छे घरानों के लड़के मालूम पड़ते हो इसलिए तुम्हारे घर वालों की पहुंच ऊपर तक होगी। अपने घर वालों के माध्यम से सरकार से बातचीत करके जब मुझे वायदा लिखित मिलेगा, तभी मैं आत्मसमर्पण करूंगा। लेकिन इतना याद रखना अगर हमारे साथ धोखा करने की कोशिश की गई तो मेरा तो केवल एक ही साथी मारा जाएगा लेकिन तुम्हारे तीनों साथी मारे जाएंगे।” ददूदा ने फैसला सुनाया।



“ठीक है लेकिन आप दिवाकर सिंह को यहां बुलाएंगे कैसे?” कौस्तुभ ने पूछा।

“अब हर चीज तुम्हें बताना जरूरी नहीं है। बाहरी दुनिया से संपर्क करने के हमारे अपने तरीके हैं और उनके बल पर ही हम लोग आज तक जिंदा हैं।” दददा ने हंसते हुए बात टाल दी।

दददा के इशारे पर एक डाकू कागज कलम ले आया। दददा ने उस पर लिखा ‘चारों चूहे बिल्ली के पास हैं। बिल्ली का हुक्म है कि लोमड़ी शेर के साथ चली आए।’

इतना लिख कर उसने कागज लखना की ओर बढ़ा दिया। लखना ने उसे पढ़ा फिर सिर हिलाते हुए वहां से चला गया।

दालान के दूसरी तरफ कई कमरे बने हुए थे। लखना तेजी से आगे बढ़ रहा था। आखिरी कमरे के पास पहुंच कर वह रुक गया। इधर-उधर देखने के बाद उसने दरवाजे को हल्का सा धक्का दिया तो तेज चरमराहट के साथ दरवाजा खुल गया। लखना भीतर घुसा। अगले ही पल दो पंजे उसके सीने से टकराए और कोई गुराते हुए उसके सीने पर चढ़ने लगा।

## खजाने का नक्शा

“अरे भाई शेरा, इतना क्यों नाराज हो? मुझे माफ कर दो। आगे से तुम्हारी सेवा में जल्दी-जल्दी आया करूंगा।” लखना ने हंसते हुए उसके पंजों को पकड़ अपने ऊपर से हटाया।

लेकिन शेरा आज कुछ ज्यादा ही नाराज था। उसने अपने पंजे लखना के सीने से नहीं हटाए और उसके ऊपर चढ़ने की कोशिश करता रहा। यह देख लखना ने उसे लिपटा लिया और हंसते हुए उसके ऊपर चुंबनों की बौछार करने लगा। इससे शेरा का गुस्सा शांत हो गया और वह नीचे उतर कर दुम हिलाते हुए लखना के पैर चाटने लगा।

लखना ने कमरे में बनी अल्मारी से पॉलिथीन की एक छोटी सी थैली निकाली। अपने जेब में रखे कागज को उसमें लपेटा फिर शेरा की ओर बढ़ाते हुए बोला, “जा, दिवाकर सिंह को अपने साथ लिया ला।”

शेरा ने पॉलिथीन की उस थैली को अपने मुंह में रख लिया और दौड़ते हुए कमरे से निकल गया। लखना काफी देर तक उसे ऊंचे टीलों पर चढ़ते देखता रहा फिर दददा के पास वापस लौट आया।

दददा ने जो निर्णय लिया था, उससे सभी डाकू काफी उत्साहित नजर आ रहे थे। सभी की आंखों में आशा की ज्योति जगमगाने लगी थी। मन ही मन वे अपने परिवार के साथ सुखमय जीवन बिताने के सपने बुनने लगे थे।

दिवाकर सिंह की प्रतीक्षा में एक-एक पल मुश्किल से बीत रहा था। सबसे ज्यादा उतावला तो गंगा हो रहा था। बेकरारी में सरजू की झोपड़ी से बाहर निकल कर वह दो बार बाहर भी देख आया था लेकिन दिवाकर सिंह की शक्ल अभी तक दिखाई नहीं पड़ी थी।

जब वह तीसरी बार बाहर जाने लगा तो दददा ने टोक दिया, “अरे यह गंगवा तो ऐसा परेशान है जैसे दिवाकर सिंह आते ही इसे सूरजगढ़ का राजा बना देगा।”

यह सुन सभी डाकू ठहाका मार कर हंस पड़े लेकिन गंगा की आंखें भर आईं। उसने भराए स्वर में कहा, “दददा, जानते हो मेरे एकलौते बेटे का नाम राजा है। बहुत दिनों से मेरे अंदर इच्छा



छुपी है कि मरने से पहले कम से कम एक बार उसे अपने कंधों पर बिठा कर मेला दिखाने ले जाऊँ। वहाँ उसे जी भर कर घुमाऊँ-फिराऊँ लेकिन पुलिस के डर से मैं दो साल से अपने बेटे से मिल ही नहीं पाया हूँ। जब से तुमने आत्मसमर्पण की बात कही है, मुझसे रहा नहीं जा रहा है। जी करता है कि अभी जा कर पुलिस के सामने हथियार डाल दूँ। पकड़ा जाऊँगा तो क्या हुआ कम से कम मेरा बेटा तो मुझसे मिलने आएगा। अपने कलेजे से लिपटा कर मैं जी भर कर उससे प्यार करूँगा।”

दददा अपने सबसे विश्वस्त साथी के मन के आवेग को समझ रहा था। उसने आगे बढ़ कर उसके सिर पर हाथ रख कर सहलाया तो वह उससे लिपट कर फफक कर रो पड़ा। किसी बड़े-बुजुर्ग की भाँति दददा ने उसे अपनी बांहों में समेट लिया और उसकी पीठ थपथपाने लगा।

गंगा को बच्चों की तरह रोते देख अंकित, विपुल, संकल्प और कौस्तुभ को बहुत आश्चर्य हुआ। ऐसा लग रहा था जैसे बंजर पहाड़ के सीने को चीर जल-धारा बाहर फूट पड़ी हो। वास्तव में डाकू भी इंसान होते हैं। समय के थपेड़े उन्हें क्रूर बना देते हैं लेकिन चारों दोस्त मिल कर समय की धारा को मोड़ने में सफल हो गए थे। जिन डाकुओं की गरज से आस-पास का इलाका धरता था, उनके इस्पाती दिलों को पिघला कर उन्होंने मोम जैसा मुलायम बना दिया था।

मैकू और कल्लू काफी देर से चुपचाप सारा वार्तालाप सुन रहे थे। डाकुओं को देख कर वे काफी घबरा गए थे लेकिन अब धीरे-धीरे उनका भय काफी हद तक समाप्त हो चुका था। थोड़ी देर बाद मैकू ने दददा के करीब आ हाथ जोड़ते हुए कहा, “सरकार, अगर इजाजत हो तो मैं भी कुछ कहूँ?”

“कहो।” दददा ने इजाजत दी।

“यह दिवाकर सिंह बहुत मोटी खाल वाला भेड़िया है। जिस खजाने की तलाश में वह इतने सालों से भटक रहा है उसके नक्शे को वह कभी नहीं देगा।” मैकू ने कहा।

“उसकी खाल चाहे कितनी ही मोटी क्यों न हो, अगर हमारा कहना नहीं मानेगा तो हम उसकी खाल में भूसा भरवा देंगे।” लखना एक बार फिर भड़क उठा। उसकी आंखें लाल अंगारा हो उठीं।

“छोटे, तू चुप रह। हम लोग अब शराफत की जिंदगी शुरू करने जा रहे हैं इसलिए बात-बात में हाथ-पैर चलाने की अपनी आदत छोड़ दे।” दददा ने लखना को डपटा तो वह मुंह लटका कर बैठ गया।

दददा ने मैकू की ओर देखते हुए पूछा, “तुम्हारे पास दिवाकर सिंह से शांति से निबटने का



कोई उपाय है?”

“वह अपने बेटे सुधाकर सिंह से बहुत प्यार करता है। अगर किसी तरह वह आपके कब्जे में आ जाए तो दिवाकर सिंह आपकी सभी बातों को मान लेगा।” मैकू ने समझाया।

“अच्छा सुझाव है!” ददूदा हल्का सा बुदबुदाया फिर बोला, “लेकिन ये सुधाकर सिंह रहता कहां है?”

“किले के उसी हिस्से के किसी गुप्त स्थान पर। हम लोगों ने कई बार उसे ढूंढने की कोशिश की लेकिन ढूंढ नहीं पाए।” मैकू के बजाय कल्लू ने बताया।

“तुम इसकी चिंता मत करो। अगर वह किले के भीतर है तो मेरे आदमी उसे अवश्य ढूंढ लाएंगे। उन्हें इस किले के रास्तों की काफी अच्छी जानकारी है।” ददूदा ने कहा।

ददूदा के आदेश पर लखना और गंगा के साथ आठ डाकू सुधाकर सिंह को खोजने चल पड़े। कल्लू और मैकू सबसे आगे-आगे चल रहे थे।

उधर दो घंटे लगातार दौड़ने के बाद शेरा जिस समय दिवाकर सिंह के घर पहुंचा उस समय वहां पर कई आदमी बैठे हुए थे। सभी बच्चों के अपहरण के लिए कानून और व्यवस्था को कोस रहे थे। पुलिस की सबसे ज्यादा आलोचना दिवाकर सिंह ही कर रहे थे।

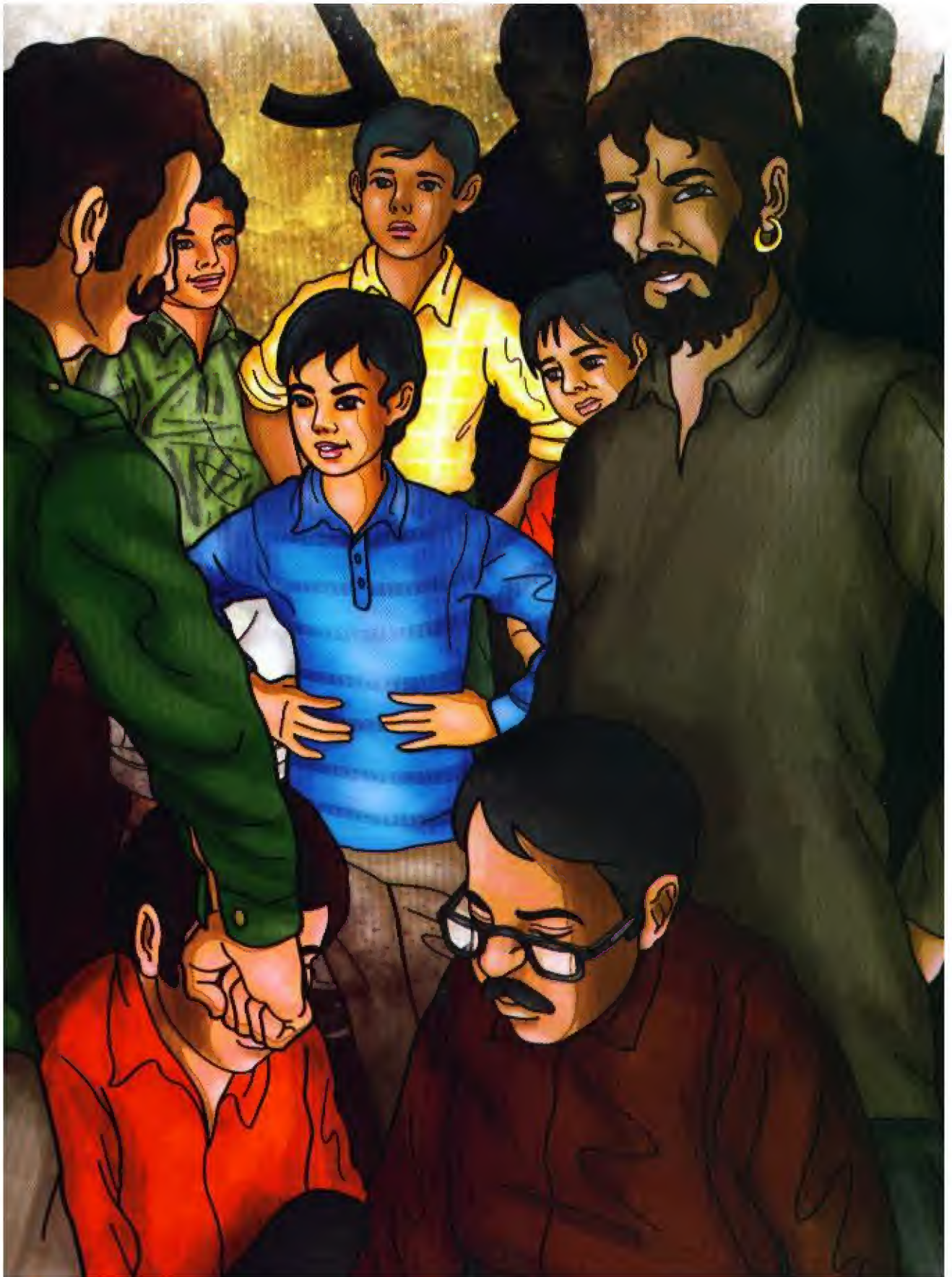
शेरा को देख वह चौंक पड़े। उन्हें लगा कि इतने लोगों के बीच अगर वह करीब आ गया तो मुश्किल हो जाएगी। शेरा ने भी उनके असमंजस को भांप लिया था। अतः थोड़ी दूरी पर आवारा कुत्ते की भांति बैठ गया। दिवाकर सिंह ने मन ही मन उसकी समझदारी की दाद दी और फिर जल्दी ही एक-एक करके सब को विदा कर दिया। एकांत होते ही शेरा उनके करीब आकर दुम हिलाने लगा। दिवाकर सिंह ने उसके सिर पर हाथ फिराया फिर उसे अंदर चलने का इशारा किया।

अंदर पहुंचते ही शेरा ने अपने मुंह से पॉलिथीन की थैली निकाल दी। दिवाकर सिंह ने उसके भीतर रखी चिट्ठी निकाल कर पढ़ी तो उनके चेहरे पर उलझन के चिह्न उभर आए। चंद क्षणों तक कुछ सोचने के बाद उन्होंने शेरा की पीठ थपथपाते हुए कहा, “तू थोड़ा सा आराम कर ले। मैं थोड़ा अंधेरा होने पर ही तेरे साथ चल पाऊंगा।”

शेरा उनकी बात समझ गया था। अतः वहीं पर आराम से लेट गया। दिवाकर सिंह ने उसके खाने का प्रबंध कर दिया था।

लखना और गंगा अपने साथ बड़ी-बड़ी टार्च भी ले गए थे। अपने साथियों के साथ उन्होंने अंधेरे किले के उस हिस्से का चप्पा-चप्पा छान मारा लेकिन सुधाकर सिंह का कोई अंता-पता नहीं







मिला। निराश हो कर वे सब लौटने की सोच ही रहे थे कि दूर से रोशनी की हल्की सी किरण आती दिखाई पड़ी। थोड़ी देर जलने के बाद रोशनी बुझ जाती थी, फिर जल जाती थी। ऐसा लग रहा था कि कोई पेंसिल टार्च की रोशनी में आगे बढ़ रहा है।

लखना के आदेश पर सारे डाकू अंधेरे में इधर-उधर छुप गए। लखना ने मैकू को अपने साथ ही रखा था। थोड़ी ही देर में वह व्यक्ति काफी करीब आ गया। इस बार जब उसने टार्च जलाई तो मैकू ने फुसफुसाते हुए कहा, “यही है सुधाकर सिंह।”

अगले ही पल लखना ने जोर से सीटी बजाई जिसे सुन सुधाकर सिंह ठिठक कर रुक गया। लेकिन इससे पहले कि वह कोई निर्णय ले पाता एक साथ कई डाकूओं ने उसे दबोच लिया। लखना ने उससे नक्शे के बारे में काफी पूछताछ की लेकिन उसने अपना मुंह नहीं खोला। लखना को बहुत तेज गुस्सा आ रहा था। वह उसके हाथ-पैर तोड़ देना चाहता था लेकिन गंगा ने उसे समझाया कि दद्दा की अनुमति के बिना अब किसी को मारना-पीटना ठीक नहीं होगा। बात लखना की समझ में आ गई। वह सुधाकर सिंह को लेकर अड्डे की तरफ लौट पड़ा।

उधर शेर के साथ दिवाकर सिंह पहले ही अड्डे पर पहुंच चुका था और इस समय दद्दा के साथ बैठा बातें कर रहा था। दद्दा ने जानबूझ कर बच्चों को दूसरे कक्ष में भेज दिया था।

लखना के साथ अपने बेटे को आता देख दिवाकर सिंह बुरी तरह चौंक पड़ा और चीखते हुए बोला, “दद्दा, मेरे बेटे को किसलिए पकड़ा गया है?”

“ताकि तुम हमारे साथ और ज्यादा धोखा न कर सको!” दद्दा का स्वर गंभीर हो उठा।

“हमने आपके साथ कौन सा धोखा किया है?” दिवाकर सिंह ने पूछा।

“तुमने हमसे अपनी असलियत क्यों छुपाई? बताया क्यों नहीं कि तुम यहां सूरजगढ़ के छुपे हुए खजाने को ढूंढ़ रहे हो?” दद्दा का स्वर तेज हो गया।

“कैसी असलियत और कैसा खजाना? मैं कुछ समझा नहीं?” दिवाकर सिंह हड़बड़ा उठा।

“दिवाकर अंकल, अब इतना अनजान बनने की आवश्यकता नहीं है। हम सब लोग यह जान चुके हैं कि आप आठ साल पहले बंबई से अपना डेरा उठा कर यहां क्यों आए थे। अब शराफत इसी में है कि जो कुछ पूछा जा रहा है उसे चुपचाप बता दें वरना अंजाम अच्छा नहीं होगा।” तभी संकल्प ने सामने आते हुए कहा।

संकल्प को देख दिवाकर सिंह का चेहरा सफेद हो गया। वह समझ गया कि उसकी पोल खुल चुकी है लेकिन वह यह नहीं समझ पा रहा था कि दद्दा और संकल्प एक ही भाषा क्यों बोल रहे हैं।





तभी दददा ने टोका, “जल्दी बताओ किले का नक्शा कहाँ है?”

दिवाकर सिंह समझ गया कि अब असलियत छुपाने से कोई फायदा नहीं है। अतः सांस भरते हुए बोला, “यह सत्य है कि मैं सूरजगढ़ राजघराने का वंशज हूँ और खजाने को हासिल करने ही आठ साल पहले यहाँ आया था लेकिन हमारे पास कोई नक्शा नहीं है।”

“तड़ाक।” एक झन्नाटेदार तमाचा दिवाकर सिंह के गाल पर पड़ा। दददा की पांचों उंगलियों के निशान उसके गाल पर उभर आए थे। उसने दिवाकर सिंह का गिरेबान पकड़ झिंझोड़ते हुए कहा, “हम लोगों ने इन बच्चों के कहने पर आत्मसमर्पण करने का निर्णय ले लिया है, इसीलिए तुम अभी तक जिंदा हो वरना इंकार करने के जुर्म में मैंने अब तक तुम्हारा सिर कलम करवा दिया होता। मैं तुमसे आखिरी बार पूछ रहा हूँ कि बता दो वह नक्शा कहाँ है?”

“आप मेरा विश्वास करें, मेरे पास कोई नक्शा नहीं है। अगर होता तो इतने वर्षों में मैंने खजाना निकाल न लिया होता?” दिवाकर सिंह ने हाथ जोड़ते हुए कहा।

“दददा, कहावत है कि लातों के भूत बातों से नहीं मानते। हम लोगों ने आत्मसमर्पण करने का निर्णय लिया है लेकिन अभी तक किया नहीं है। इसलिए अभी तक हम सब डाकू के डाकू ही हैं। आप इजाजत दीजिए तो मैं इसके बेटे को ऊपर से छह इंच छोटा कर देता हूँ।” लखना ने करीब आते हुए कहा। उसके चेहरे पर इस समय अजीब सी हैवानियत छाई हुई थी।

दददा ने आंख बंद करके कुछ सोचा फिर संकल्प से बोला, “बेटा, तुम जरा अंदर जाओ। तुम यह सब नहीं देख पाओगे।”

इससे पहले कि संकल्प कुछ बोल पाता लखना बगल में खड़े डाकू के हाथ से तलवार छीन कर सुधाकर सिंह की ओर लपका। उसने अपना हाथ ऊपर उठाया ही था कि दिवाकर सिंह चीख पड़ा, “रुक जाओ। मैं तुम्हें नक्शा देने के लिए तैयार हूँ।”

मुस्कुराता हुआ लखना पीछे पलटा तो दिवाकर सिंह हारे हुए जुआरी की भाँति हाँफ रहा था। उसने बताया कि नक्शा किले के उसी हिस्से में एक गुप्त स्थान पर छुपा कर रखा गया है।



## जन-नायक

लखना के इशारे पर दिवाकर सिंह और सुधाकर सिंह के हाथों को एक मोटे रस्से से बांध दिया गया और एक बार फिर सभी लोग किले की उस हिस्से के ओर चल दिए जिधर दिवाकर सिंह पिछले दो महीने से सफाई करवा रहा था।

एक बड़े से कमरे के भीतर एक गुप्त अलमारी थी। उसी के भीतर नक्शा छुपा कर रखा गया था। दिवाकर सिंह ने उसे निकाल कर दद्दा को सौंप दिया। दद्दा टार्च की रोशनी में काफी देर तक नक्शे को देखता रहा लेकिन कुछ समझ नहीं पाया। एक-एक करके लखना और गंगा ने भी अपना दिमाग दौड़ाया लेकिन वे भी किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सके।

“लाइए हम लोग भी देखें इसे।” अंकित ने हाथ आगे बढ़ाते हुए नक्शा मांगा।

गंगा ने नक्शा उसकी ओर बढ़ा दिया। उसे एक बड़े से पत्थर पर रख कर चारों दोस्त टार्च की रोशनी में उसे देखने लगे। नक्शे को देख कर लग रहा था कि अपने जमाने में यह किला बहुत ही विशाल और भव्य रहा होगा। उसके निर्माण में किले के निवासियों की सुख-सुविधाओं के साथ-साथ सुरक्षा व्यवस्था पर भी भरपूर ध्यान दिया गया था।

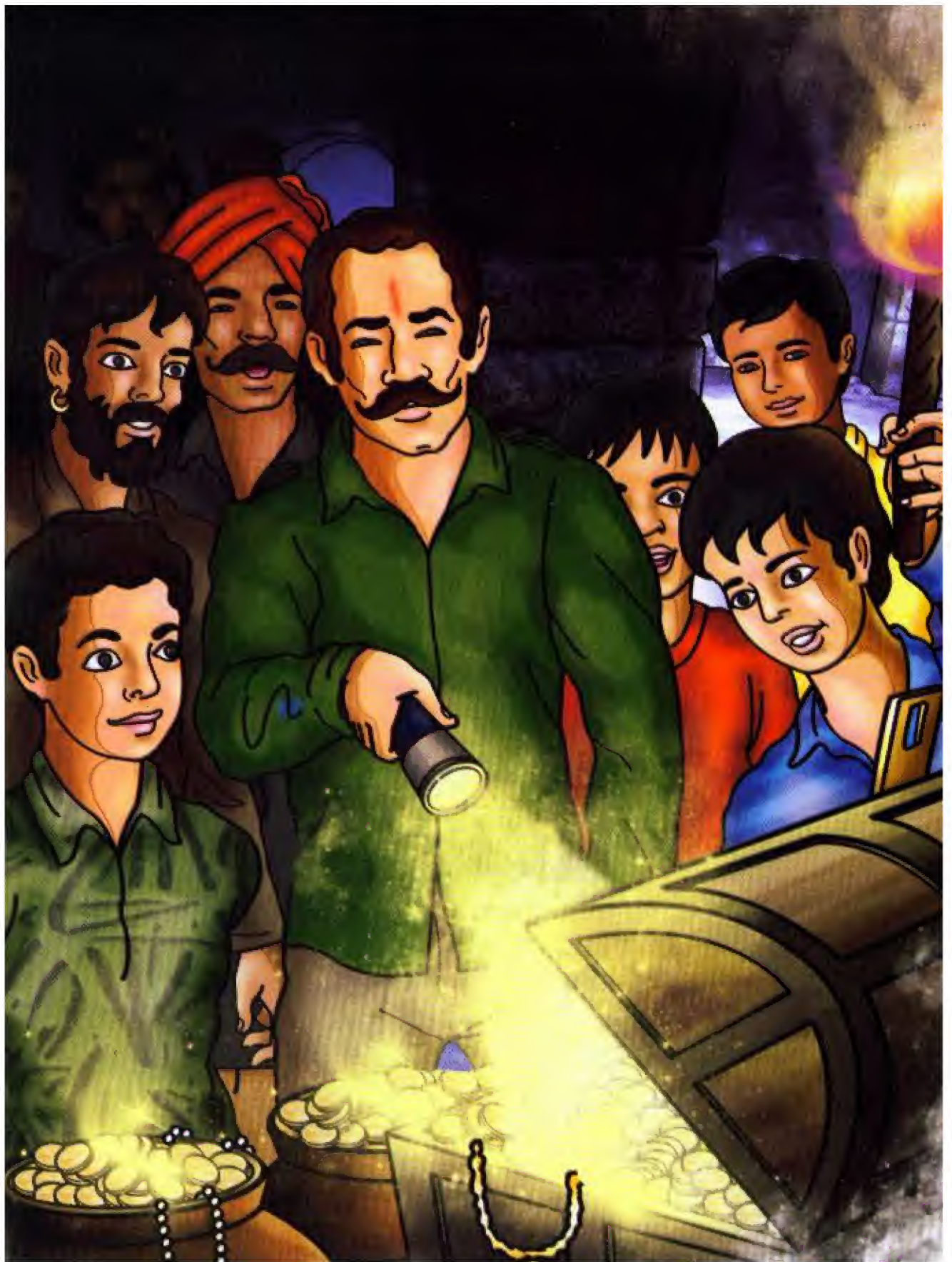
नक्शे को देखते हुए विपुल की दृष्टि अचानक एक स्थान पर बने सांप के चिह्न पर टिक गई। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि रेखाचित्रों के मध्य सांप को क्यों बनाया गया है। उसने अपने मन की बात अपने दोस्तों को बताई तो वे भी सोच में पड़ गए।

सांप के चिह्न से थोड़ा आगे एक मीनार का रेखाचित्र बना हुआ था। अचानक अंकित के दिमाग में घंटी सी बज उठी और वह चिल्लाते हुए बोला, “विपुल, यही है वह मीनार जिससे होकर हम दोनों किले के भीतर गिरे थे।”

“हां, यहीं पर हमें सोने की अशर्फियों से भरी हुई गगरियां मिली थीं। इसका मतलब खजाना इसी मीनार के आस-पास होना चाहिए।” विपुल ने सहमति जताई।

“खजाना मीनार के आस-पास नहीं, बल्कि इस सांप के नीचे गड़ा हुआ है। मान्यता है कि सांप खजाने की रक्षा करते हैं, इसलिए जिस जगह खजाना गाड़ा गया होगा प्रतीक के रूप में सांप







का चिह्न बना दिया गया है।” अंकित ने रहस्य पर से पर्दा उठाया।

सभी लोग अंकित के निष्कर्ष से सहमत थे। कल्लू और मैकू ने सभी को उस मीनार के पास पहुंचा दिया। टार्च की रोशनी में थोड़ी ही देर में एक पत्थर पर बने सांप के चिह्न को ढूंढ़ निकाला गया। दददा का आदेश मिलते ही खुदाई शुरू हो गई। उस पत्थर के हटते ही नीचे जाने के लिए सीढ़ियां दिखाई पड़ने लगीं। सीढ़ियों के नीचे एक तहखाना था जिसके भीतर अकूत खजाना भरा हुआ था। उसे देख सभी की आंखें चौंधियां गईं। लखना, गंगा और उसने कई साथी तो बावले हुए जा रहे थे। वे अशर्फियों को अपने ऊपर डाल-डाल कर नाचने लगे।

“अब यह नाचना-गाना बंद करो।” दददा ने मुस्कराते हुए अपने साथियों को डांटा फिर गंगा से बोला, “कल सुबह-सुबह तुम कौस्तुभ के साथ धौरहरा चले जाओ और संकल्प के घर वालों से मिल कर हमारे आत्मसमर्पण की बातें तय कर आओ।”

दिवाकर सिंह काफी देर से अपना मुंह बंद किए हुए सब देख रहा था। आत्मसमर्पण की बात सुन उससे रहा नहीं गया और उसने पूछा, “दददा, अगर आप लोग आत्मसमर्पण कर देंगे तो इस खजाने का क्या होगा जो हम सबने मिल कर ढूंढ़ा है?”

“हम इसे सरकार को दे देंगे। वह हमें इसका दस प्रतिशत इनाम में दे देगी।” दददा ने बताया।

“अगर यह खजाना तुम हमें सौंप दो तो मैं तुम्हें इसका पचास प्रतिशत इनाम में दे दूंगा।” दिवाकर सिंह ने कहा।

“अबे चोप्प, हमारी ही कैद में है और हमें ही इनाम देने चला है?” लखना, दिवाकर सिंह का गिरेबान पकड़ बुरी तरह दहाड़ उठा।

लखना का गुस्सा देख दिवाकर सिंह क्षण भर के लिए ठिठका फिर बोला, “देखो यह हमारा खानदानी खजाना है। इस पर हमारा हक बनता है। चूंकि इसे तुम लोगों ने ढूंढ़ा है इसलिए तीन चौथाई तुम लोग ले लो और एक चौथाई मुझे दे दो। सभी की जिंदगी सुधर जाएगी। इसे सरकार को सौंपने से कोई फायदा नहीं होने वाला है।”

यह सुन विपुल दांत भींचते हुए बोला, “अपने दिमाग से इस बात का फितूर निकाल दो कि यह खजाना तुम्हारा या तुम्हारे पूर्वजों का है। यह खजाना सूरजगढ़ की जनता का था। आजादी के बाद सभी राज्यों का भारतीय गणराज्य में विलय हो जाने के बाद अब यह खजाना इस देश की जनता की अमानत है। इसलिए इसे सरकार के पास पहुंचाना जरूरी है।”

दिवाकर सिंह ने फिर कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि गंगा दांत किटकिटाते हुए



बोला, “रजवाड़ों का राज्य भले ही खत्म हो गया हो लेकिन आज की तारीख में इस किले के भीतर दद्दा का राज्य चलता है। वह इस खजाने को सरकार को सौंपने का निर्णय ले चुके हैं। अब अगर किसी ने हमारे सरदार के निर्णय के खिलाफ मुंह खोलने की कोशिश की तो उसका सिर कलम कर दिया जाएगा।”

गंगा का रौद्र रूप देख कर दिवाकर सिंह सितपिटा कर चुप हो गया।

दद्दा सभी को ले कर वापस अपने अड्डे पर लौट आया। दिवाकर सिंह और उसके बेटे के हाथ-पैर बांध कर एक कमरे में बंद कर दिया गया। उसके दरवाजे और पिछली खिड़की के पास दो-दो बंदूकधारी पहरे पर बैठा दिए गए।

किसी की आंखों में नींद नहीं थी। पूरी रात सपने बुनते कटी। अगली सुबह दद्दा ने कौस्तुभ को गंगा के साथ धौरहरा भेज दिया।

अपने बच्चों के गायब होने की खबर मिलते ही अंकित, विपुल और कौस्तुभ के पापा लखनऊ से धौरहरा आ गए थे। उनके साथ पुलिस के बड़े अधिकारी भी थे। बच्चों की तलाश में पुलिस के जवान बीहड़ों का चप्पा-चप्पा छाने डाल रहे थे लेकिन अभी तक सफलता नहीं मिली थी। सबसे आश्चर्य की बात तो यह थी कि पहले दिन संकल्प के पापा को सात-आठ साल का एक बच्चा चिट्ठी दे गया था जिसमें संकल्प के छुड़ाने के बदले 30 लाख रुपये तैयार रखने की बात लिखी थी। उसके बाद से डाकुओं की तरफ से कोई संदेश नहीं आया था। वह चिट्ठी कोई अजनबी उस बच्चे को दे गया था।

कौस्तुभ को एक अनजान आदमी के साथ आते देख सभी ने उसे घेर लिया। उसके पापा के तो आंखों से खुशी के आंसू गिरने लगे। थोड़ी देर बाद जब उन्होंने उसके साथ आए आदमी के बारे में पूछा तो कौस्तुभ ने कहा, “मैं सभी के सामने इसका परिचय नहीं दे सकता। आप पुलिस अधिकारियों के साथ घर के भीतर चलिए तो सारी बातें विस्तार से बताता हूं।”

उसके पापा पुलिस अधिकारियों के साथ घर के भीतर आ गए तो कौस्तुभ ने पूरा किस्सा विस्तार से बताने के बाद गंगा का परिचय करवाया। पुलिस ने गंगा को गिरफ्तार कर लिया लेकिन कौस्तुभ ने जितना बताया था वह उससे एक भी शब्द ज्यादा बताने के लिए तैयार नहीं था।

कौस्तुभ से भी कई बार पूछताछ की गई लेकिन वह भी सरकार की तरफ से आम माफी का लिखित आश्वासन मिले बिना डाकुओं के अड्डे का पता बताने के लिए तैयार नहीं था। उसके पिता एक बड़े अधिकारी थे जिसके कारण पुलिस उससे जोर जबरदस्ती नहीं कर पा रही थी। वैसे





भी बल प्रयोग करने से अन्य बच्चों की जान का खतरा था।

जिलाधिकारी के माध्यम से लखनऊ के आला-अफसरों को पूरे घटनाक्रम की जानकारी भेज दी गई। ऐतिहासिक महत्त्व के डूबे हुए किले को दुनिया के सामने लाने और बेशकीमती खजाने को सरकार के सुपुर्द करने के बदले में प्रदेश-सरकार सभी डाकुओं को आम माफी और खजाने का दस प्रतिशत ईनाम देने के लिए राजी हो गई। सरकार का लिखित आश्वासन लेकर गंगा और कौस्तुभ जब अड्डे पर वापस पहुंचे तो सभी डाकू खुशी से पागल हो उठे।

एक-एक करके जब वे किले से बाहर निकले तो अंकित, विपुल, कौस्तुभ और संकल्प को अपने कंधों पर उठाए हुए थे। शारदा नदी के किनारे जिले के बड़े अधिकारियों के साथ हजारों का जन-समूह उनके स्वागत के लिए तैयार खड़ा था। सूरजगढ़ के किले और उसके खजाने के मिलने की खबर पूरे इलाके में फैल चुकी थी। कल के खूंखार डाकू आज के जन-नायक बन गए थे। इस सबका श्रेय जाता था संकल्प और उसके दोस्तों को जिन्होंने एक भी गोली चलाए बिना डाकूओं के इतने बड़े दल का आत्मसमर्पण करवा दिया था।





रु. 70.00

ISBN: 978-81-237-5945-6

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

